वर्ष : 02
अंक : 304
पृष्ठ : 08
मूल्य : तीन रुपये

वाराणसी, मंगलवार, 20 फरवरी, 2024

RNI No. : UPHIN/2023/84879

परिवर्तन दूत

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक समाचार पत्र

4 राजनीतिक लक्ष्य हासिल करने के लिए...

Email : pdnewsvns@gmail.com e-paper:www.parivartandoot.com

इंग्लैंड की हार बिफरे पूर्व इंग्लिस खिलाड़ी 7

केंद्र का किसानों को 4 फसलों पर एमएसपी का प्रस्ताव

पांच साल मक्का, कपास, अरहर-उड़द खरीदने का ऑफर, किसानों ने मांगा दो दिन का समय

अंबाला। पंजाब-हरियाणा के शंभू बॉर्डर पर पिछले सात दिन से आंदोलन कर रहे किसान नेताओं और केंद्र सरकार के बीच रविवार (18 जनवरी) को चौथे दौर की बैठक हुई। मीटिंग में सरकार ने 4 फसलों पर एमएसपी देने का प्रस्ताव दिया। किसान संगठनों ने इस पर दो दिन विचार करके 20 फरवरी की शाम को अपना फैसला सुनाने की बात कही है। पहले दिन आंदोलन की अगुआई कर रहे नेताओं ने खनौरी बॉर्डर पर जाकर किसानों से बात की। कल शंभू बॉर्डर पर इस बारे में चर्चा होगी। कल यानी 20 फरवरी की शाम को अपना फैसला सुनाएंगे कि आंदोलन खत्म करना है या दिल्ली कूच करेंगे।

सरकार की तरफ से किसानों से बात करने पहुंचे केंद्रीय मंत्री पीयूष गोयल ने कहा कि सरकार मक्का, कपास, अरहर और उड़द पर एमएसपी देने को तैयार है। अगले 5 साल तक चारों फसलों की खरीद सहकारी सभाओं के जरिए होगी। नैफेड और एनसीसीएफ से 5 साल के लिए कॉन्ट्रैक्ट होगा। किसान सभी फसलों को एमएसपी पर खरीद के लिए कानून की मांग कर रहे हैं। उनकी मांग है कि फसलों की कीमतें स्वामीनाथन आयोग की रिपोर्ट के आधार पर तय की जाएं। इसके अलावा किसानों ने मिर्च, हल्दी और दूसरे मसालों के लिए राष्ट्रीय आयोग के गठन की मांग भी की है। नेता सरवन सिंह पंधेर ने कहा कि सभी जत्थेबंदियों से 19 और 20 फरवरी को विचार-विमर्श करेंगे। इसके बाद 20 की शाम को अपना फैसला बता देंगे। 21 की सुबह 11 बजे तक दिल्ली कूच को स्टैंडबाय पर रखा है। संयुक्त किसान मोर्चा ने फसलों पर केंद्र सरकार का प्रपोजल ठुकरा दिया है। केंद्र की ओर से 5 साल के लिए फसलों के विविधीकरण और खरीद का प्रस्ताव रखा गया था। इसे लेकर एसकेएम के नेशनल कोर्डिनेशन कमेटी के सदस्य डॉ. दर्शन पाल ने कहा कि वे बातचीत का हिस्सा नहीं थे। कोई भी प्रस्ताव सभी किसानों पर लागू होना चाहिए। सरकार ने एमएसपी पर पांच फसलें मक्का, कपास, तूर मसूर और उड़द खरीदने का प्रस्ताव दिया है। यह प्रस्ताव पंजाब आधारित लगता है। इस हिसाब से बाकी किसान क्या करेंगे?

कोर्ट के आदेश पर फिर से होगी चंडीगढ़ मेयर बैलट पेपर की गिनती

चंडीगढ़। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को चंडीगढ़ मेयर चुनाव दोबारा कराए जाने की जगह नई व्यवस्था दी। कोर्ट ने कहा कि मौजूदा बैलट पेपर्स की गिनती कर चंडीगढ़ मेयर का चुनाव किया जाए। बैलट पेपर्स पर अगर पूर्व रिटर्निंग ऑफिसर अनिल मसीह ने कोई मार्क लगाए हैं तो उन्हें नजरअंदाज करके काउंटिंग की जाए। सुप्रीम कोर्ट ने बैलट पेपर्स कोर्ट में पेश करने के भी निर्देश दिए हैं। कोर्ट ने हाईकोर्ट रजिस्ट्रार जनरल से कहा कि मंगलवार को कोर्ट में बैलट पेपर्स और वीडियो लाने के लिए एक ज्यूडिशियल अफसर की नियुक्ति कीजिए। सुप्रीम कोर्ट ने प्रशासन को निर्देश दिए कि ज्यूडिशियल अफसर और रिकॉर्ड्स की सुरक्षा के लिए व्यवस्था कीजिए। अदालत मंगलवार को 2 बजे चुनाव का पूरा वीडियो और बैलट पेपर्स की जांच करेगी। अदालत ने रिटर्निंग अफसर अनिल मसीह से पूछा- आपने बैलट पेपर्स पर का निशान क्यों लगाया। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि अनिल मसीह पर अलग केस चलना चाहिए।

भारत जोड़ों न्याय यात्रा

राहुल के अमेठी पहुंचने पर लगे जय श्रीराम के नारे

प्रतापगढ़/अमेठी। राहुल गांधी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा का सोमवार को 37वां दिन है। यूपी में यात्रा का चौथा दिन है। राहुल ने प्रतापगढ़ से यात्रा शुरू की। इसके बाद अपने पुराने संसदीय क्षेत्र अमेठी पहुंचे। अमेठी और गौरीगंज में पदयात्रा की। इसके बाद उन्होंने बाबूगंज में जनसभा को संबोधित किया। इस दौरान कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे भी उनके साथ रहे। इससे पूर्व कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी ने प्रतापगढ़ की जनसभा में कहा कि राम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा समारोह में दलितों, पिछड़ों, आदिवासियों यहां तक कि देश की राष्ट्रपति तक को नहीं बुलाया जाना, इन सब का अपमान है।

बाबूगंज की जनसभा में राहुल ने कहा, अगर आप लोग जागोगे नहीं, तो भूखे मर जाओगे। इन्होंने पहले एयरपोर्ट छीन लिया और अब स्कूल-कॉलेज भी ले गए। उन्होंने कहा कि राम मंदिर में राष्ट्रपति का

चेहरा तक नहीं देखा। ऐसा भला कहां होता है। राहुल गांधी ने कहा, आज मणिपुर में हिंदुस्तान की सरकार का कंट्रोल नहीं है। वहां आग लगी हुई है। आज तक प्रधानमंत्री मणिपुर नहीं जा सके। इसलिए हमने अपनी यात्रा मणिपुर से शुरूआत की। परसों हमने वाराणसी में यूपी की सच्ची हालत देखी। सड़क पर हजारों युवा शराब पीकर लेटे हुए थे। सुबह वहां हमारे पास युवा आते हैं और कहते कि मेरी जिंदगी बर्बाद हो गई। पेपर लीक हो गया। एग्जाम के पहले ही कुछ लोगों के मोबाइल पर पेपर मिल गया था।

हिंदुस्तान में 73% पिछड़े, दलित और आदिवासी हैं। हिंदुस्तान की बड़ी 200 कंपनियों में कितने मालिक हैं कोई भी नहीं है। मीडिया, अस्पतालों में, हाईकोर्ट में कितने जज हैं? बड़े अस्पतालों में देखो डॉक्टर कितने हैं? 90 आईएएस ऑफिसर दिल्ली की सरकार चलाते हैं, उसमें दलित पिछड़े कितने हैं? उन्होंने जवाब दिया कि जीरो। राहुल गांधी अमेठी के गौरीगंज में पैदल यात्रा कर रहे हैं। दूसरी तरफ यहां पर दर्जनों युवक जय श्री राम, जय श्री राम के नारे लगाते हुए राहुल गांधी वापस जाओ के भी नारे लगा रहे हैं।

संक्षिप्त

कर्नाटक सीएम सिद्धारमैया के खिलाफ कार्यवाही पर रोक

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को विरोध प्रदर्शन मामले में कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया के खिलाफ कार्यवाही पर रोक लगा दी। सुप्रीम कोर्ट ने हाईकोर्ट के उस फैसले पर भी रोक लगा दी, जिसमें सिद्धारमैया, कांग्रेस महासचिव रणदीप सुरजेवाला और अन्य नेताओं को 10 हजार रुपए जुमार्ना भरने और 26 फरवरी को कोर्ट में पेश होने के आदेश दिया था। हालांकि, सुप्रीम कोर्ट ने सिद्धारमैया से यह सवाल किया कि एक राजनेता प्रोटेस्ट करे तो उसे इजाजत दी जानी चाहिए और आम आदमी विरोध करे तो उसे ऐसा ना करने दिया जाए?

पेपर लीक के दावों की जांच के लिए गठित कमेटी

लखनऊ। उप्र पुलिस भर्ती एवं प्रोन्नति बोर्ड ने सिपाही के 60,244 पदों पर सीधी भर्ती के लिए शनिवार व रविवार को हुई लिखित परीक्षा का प्रश्न पत्र लीक होने के दावों समेत विभिन्न पहलुओं की जांच के लिए आंतरिक जांच समिति गठित की। इसका गठन एडीजी/सदस्य सचिव के नेतृत्व में किया गया है। बोर्ड की अध्यक्ष डीजी रेणुका मिश्रा ने स्पष्ट किया कि आगामी परीक्षाओं में सुधार के उद्देश्य से इस समिति का गठन किया गया है। उन्होंने बताया कि प्रश्न पत्र लीक होने की सूचनाएं परीक्षा के बाद सोशल मीडिया पर वायरल की गई हैं। परीक्षा शुरू होने से पहले प्रश्न पत्र लीक होने का कोई भी मामला सामने नहीं आया है।

ईडी ने महुआ मोइत्रा को नया समन जारी किया

कोलकाता। प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने तृणमूल कांग्रेस नेता और निष्कासित लोकसभा सांसद महुआ मोइत्रा को नया समन जारी किया है। उन्हें फेमा उल्लंघन मामले में पूछताछ के लिए सोमवार को बुलाया गया था। हालांकि, जब वे ईडी के सामने पेश नहीं हुईं तो जांच एजेंसी ने उन्हें नया समन जारी किया। 49 वर्षीय नेता को पेश होने के लिए एक सप्ताह का समय दिया गया है। महुआ मोइत्रा पर पैसे लेकर संसद में सवाल पूछने के आरोप लगे हैं। इन्हीं की जांच कर रही संसद की आचार समिति ने लोकसभा में महुआ की सांसदी खत्म करने की सिफारिश की थी। बाद में रिपोर्ट के आधार पर लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने महुआ को निष्कासित कर दिया।

देश में मंदिर और मेडिकल कॉलेज दोनों बन रहे हैं- मोदी

संभल में श्री कल्कि धाम मंदिर का प्रधानमंत्री ने रखी आधारशिला

संभल। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोमवार को कहा कि समय का चक्र बदल गया है और देश न केवल अपनी प्राचीन मूर्तियों को विदेशों से वापस ला रहा है बल्कि रिकॉर्ड विदेशी निवेश भी प्राप्त कर रहा है। उत्तर प्रदेश के संभल में श्री कल्कि धाम मंदिर की आधारशिला रखने के बाद एक सभा को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने कहा कि एक तरफ तीर्थ स्थलों का विकास किया जा रहा है तो दूसरी तरफ शहरों में अत्याधुनिक अवसरंचनाएं तैयार हो रही हैं। मोदी ने कहा, आज एक ओर हमारे तीर्थों का विकास हो रहा हैं, तो दूसरी ओर शहरों में हाईटेक इन्फ्रास्ट्रक्चर भी तैयार हो रहा है। आज अगर मंदिर बन रहे हैं तो देश भर में नये मेडिकल कॉलेज भी बन रहे हैं। आज विदेशों से हमारी प्राचीन मूर्तियां भी वापस लायी जा रही हैं और रिकॉर्ड संख्या में विदेशी निवेश भी आ रहा हैं। यह परिवर्तन इस बात का प्रमाण है कि समय का चक्र घूम चुका हैं। एक नया

दौर आज हमारे दरवाजे पर दस्तक दे रहा है। यह समय है कि हम उस आगमन का दिल खोलकर स्वागत करें। प्रधानमंत्री ने कहा कि अमृत काल में राष्ट्र निर्माण के लिए पूरी सहजता, शताब्दी का यह संकल्प केवल एक अभिलाषा भर नहीं है। उन्होंने कहा कि यह एक ऐसा संकल्प है जिसे हमारी संस्कृति ने हर कालखंड में जी कर दिखाया है।

प्रधानमंत्री मोदी ने विपक्ष पर इशारों ही इशारों में हमला बोला। उन्होंने चुटकी लेते हुए कहा, अच्छा हुआ कुछ दिया नहीं, वरना जमाना ऐसा बदल गया है कि आज के युग में अगर सुदामा श्रीकृष्ण को पोटली में चावल देते तो वीडियो निकालकर उच्चतम न्यायालय में जनहित याचिका दायर कर दी जाती और जजमेंट आता कि भगवान कृष्ण को भ्रष्टाचार में कुछ दिया गया और भगवान कृष्ण भ्रष्टाचार कर रहे थे। अच्छा है प्रमोद जी आपने भावना प्रकट की कुछ दिया नहीं।उन्होंने कहा, पिछले माह ही देश ने अयोध्या में 500 साल के इंतजार को पूरा होते देखा है। रामलला के विराजमान होने का वो अलौकिक अनुभव, वो दिव्य अनुभूति अब भी हमें भावुक कर जाती है। इसी बीच हम देश से सैकड़ों किमी दूर अरब की धरती पर, अबू धाबी में पहले विराट मंदिर के लोकार्पण के साक्षी भी बने हैं।

प्रधानमंत्री ने कहा, इसी कालखंड में हमने विश्वनाथ धाम के वैभव को निखरते देखा है। इसी कालखंड में हम काशी का कायाकल्प होते देख रहे हैं। इसी दौर में महाकाल के महालोक की महिमा हमने देखी हैं। हमने सोमनाथ का विकास देखा है, केदार घाटी का पुनर्निर्माण देखा है। हम विकास भी, विरासत भी के मंत्र को आत्मसात करते हुए चल रहे हैं।

माया‌वती ने लोकसभा चुनाव अकेले लड़ने की बात दोहराई

लखनऊ। बहुजन समाज पार्टी की प्रमुख मायावती ने सोमवार को एक बार फिर दोहराया कि उनकी पार्टी आगामी लोकसभा चुनाव अकेले लड़ेगी। उन्होंने पार्टी कार्यकर्ताओं से अफवाहों से सावधान रहने को कहा।

मायावती ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, आगामी लोकसभा चुनाव के लिए बसपा किसी भी पार्टी के साथ गठबंधन नहीं कर रही है। बार-बार घोषणा के बावजूद आये दिन गठबंधन को लेकर अफवाह फैलाना यह साबित करता है कि बसपा के बिना कुछ पार्टियों की यहां सही से दाल नहीं गलने वाली, जबकि बसपा के लिए अपने लोगों का हित सर्वोपरि है।

सीट बंटवारा होने तक राहुल की न्याय यात्रा में हिस्सा नहीं लेगी सपा- अखिलेश

लखनऊ। समाजवादी पार्टी (सपा) के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने सोमवार को कहा कि कांग्रेस के साथ सीट बंटवारे को अंतिम रूप दिए जाने तक उनकी पार्टी राहुल गांधी की न्याय यात्रा में हिस्सा नहीं लेगी। गांधी की अगुवाई में यह यात्रा सोमवार को अमेठी से गुजरेगी जिसके बाद वह रायबरेली में प्रवेश करेगी। समाजवादी पार्टी के प्रमुख ने पूर्व में कहा था कि वह रायबरेली में भारत जोड़ो न्याय यात्रा में शामिल होंगे। सपा ने कांग्रेस को उत्तर प्रदेश में 11 सीट की पेशकश की है, जबकि कांग्रेस और अधिक सीट मांग रही है। कांग्रेस की उत्तर प्रदेश इकाई के अध्यक्ष अजय राय ने पूर्व में कहा था कि उनकी पार्टी को करीब दो दर्जन सीट दी जानी चाहिए

जहां से वर्ष 2009 के लोकसभा चुनावों में उसने जीत हासिल की थी। सपा और कांग्रेस विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' में साझीदार हैं। कांग्रेस ने कल रात अमेठी में एक बयान जारी कर कहा था कि पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे अमेठी में इस यात्रा में उपस्थित रहेंगे। सपा सूत्रों ने कहा कि उनकी पार्टी ने कांग्रेस को अब 11 से बढ़ाकर 15 लोकसभा सीट की पेशकश कर दी है।

कश्मीर के ऊंचाई वाले इलाकों में बर्फबारी

राम बन में भुस्खलन

श्रीनगर। कश्मीर में सोमवार को गुलमर्ग स्कीइंग रिसॉर्ट सहित ऊंचाई वाले इलाकों में बर्फबारी हुई और मैदानी इलाकों में बारिश हुई। अगले 48 घंटे में घाटी में बारिश जारी रहने की संभावना है। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि बारामूला जिले में गुलमर्ग स्कीइंग रिसॉर्ट में पिछले 24 घंटों में लगभग 1.5 फुट बर्फबारी हुई है। गुलमर्ग बुधवार से चौथे 'खेलो इंडिया शीतकालीन खेलोंइ की मेजबानी करने वाला है। घाटी के कुपवाड़ा, हंदवाड़ा और सोनमर्ग इलाकों में भी बर्फबारी हुई। श्रीनगर सहित घाटी के बाकी हिस्सों में रविवार से मध्यम से भारी बारिश हो रही है। पिछले 24 घंटों में श्रीनगर में 12.4 मिमी बारिश

हुई है जबकि काजीगुंड में 12.8 मिमी बारिश हुई है। इसी अवधि में पहलगाम में 18.6 मिमी, कुपवाड़ा में 42.7 मिमी और कोकेरनाग में 8.0 मिमी बारिश हुई। जम्मू क्षेत्र में भी बारिश हुई है, जिसके बाद रामबन जिले में दो स्थानों पर भूस्खलन के कारण श्रीनगर-जम्मू राष्ट्रीय राजमार्ग को बंद करना पड़ा है।

उधर रामबन जिले में भारी बारिश से हुए भूस्खलन के कारण श्रीनगर-जम्मू राष्ट्रीय राजमार्ग सोमवार को यातायात के लिए बंद कर दिया गया। लोगों को मौसम में सुधार होने तक राजमार्ग पर यात्रा करने से बचने के लिए कहा गया है। यातायात विभाग के एक अधिकारी ने बताया रामबन के मेहद-कैफेटेरिया और बनिहाल इलाके के तबेला चामलवास में भूस्खलन के कारण श्रीनगर-जम्मू राजमार्ग पर यातायात बंद कर दिया गया है।

एल्विश ने सर्पविष मामले में प्राथमिकी दर्ज कराने वालों पर लगाया आरोप

नोएडा। नोएडा की एक रेव पार्टी में सर्पविष की आपूर्ति के मामले में फंसे यूट्यूबर एल्विश यादव ने सोशल मीडिया मंचों पर एक वीडियो साझा कर एक संस्था पर झूठे मामले में फंसाने का आरोप लगाया। वहीं पुलिस ने मामले में साक्ष्य जुटाकर कानूनी कार्रवाई करने का आश्वासन दिया है। रेव पार्टी में सर्पविष की आपूर्ति के मामले में फोरेंसिक रिपोर्ट आने के बाद एल्विश ने 13 मिनट 34 सेकंड का एक वीडियो साझा कर कहा कि नोएडा में हुई रेव पार्टी के समय वह मुंबई में थे और उसका इस केस से कोई लेना-देना नहीं है।

ममता सरकार को उखाड़ फेंकना चाहिए- भाजपा

नयी दिल्ली। भाजपा ने संदेशखालि में कुछ शिकायतकर्ता महिलाओं के बयान पर सवाल उठाने के लिए सोमवार को पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की आलोचना करते हुए कहा कि उन्होंने (ममता) 'बेहद घटिया' टिप्पणी की है और अब उन्हें सत्ता से बाहर करने का समय आ गया है। भाजपा सांसद लॉकेट चटर्जी ने कहा कि संदेशखालि में महिलाएं स्वयं ही विरोध कर रही हैं और इसमें कोई राजनीति नहीं थी क्योंकि उनकी पार्टी ने केवल पीड़ित महिलाओं की रक्षा करने और उनकी आवाज उठाने की कोशिश की है। उन्होंने यह भी दावा किया कि संदेशखालि में महिलाओं के साथ जो हुआ वह इराक और पाकिस्तान जैसे देशों में महिलाओं के खिलाफ होने वाले अत्याचार को दर्शाता है। चटर्जी ने आरोप लगाया कि तृणमूल कांग्रेस के स्थानीय नेता शाहजहां शेख को मुख्यमंत्री बनर्जी द्वारा बचाया जा रहा है। उन्होंने कहा, यही कारण है कि पुलिस उसे गिरफ्तार नहीं कर पाई है जबकि शेख के कुछ सहयोगियों को पकड़ लिया गया है। शेख महिलाओं के यौन उत्पीड़न और भूमि हड़पने की शिकायतों में मुख्य आरोपी है। ाजपा सांसद ने कहा, उसे फांसी दी जानी चाहिए। वह मौत की सजा से कम का हकदार नहीं है। उन्होंने आरोप लगाया कि इलाके में हिंदू महिलाओं को निशाना बनाया गया। मुस्लिम मतदाताओं के स्पष्ट संदर्भ में चटर्जी ने कहा कि आरोपियों को प्रशासन ने पनाह दी।

ईडी के छठे समन पर भी नहीं पेश हुए केजरीवाल

नयी दिल्ली। 'आप' ने कहा कि दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल आबकारी नीति से जुड़े धन शोधन मामले में पूछताछ के लिए सोमवार को प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) के सामने पेश नहीं होंगे। पार्टी ने अपने राष्ट्रीय संयोजक को एजेंसी द्वारा जारी छठे समन को 'अवैध' करार दिया और कहा कि केजरीवाल को बार-बार समन भेजने के बजाय ईडी को अदालत के फैसले का इंतजार करना चाहिए। कई बार समन जारी करने के बाद भी केजरीवाल के पूछताछ में शामिल नहीं होने पर ईडी ने अदालत में शिकायत दर्ज कराई है। अदालत ने दायर शिकायत के संबंध में केजरीवाल को शनिवार कोव्यक्तिगत तौर पर पेश होने से राहत दे दी थी।

शिवाजी की प्रतिमा के अनावरण के बाद पथराव में मंत्री घायल

पणजी। सोमवार को दक्षिण गोवा के एक गांव में छत्रपति शिवाजी महाराज की प्रतिमा के अनावरण के बाद पथराव में गोवा के मंत्री सुभाष फल देसाई घायल हो गए। कुछ लोगों द्वारा मराठा सम्राट की मूर्ति स्थापित करने के बाद रविवार को मडगांव शहर के पास साओ जोस डी एरियाल गांव में भारी पुलिस बल तैनात किया गया था। मूर्ति स्थापित करने पर एक अन्य समूह ने आपत्ति जताई थी। आज मराठा सम्राट की 394वीं जयंती है और इसे मनाने के लिए राज्य भर में कई जगह कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं। पथराव दोपहर में तब हुआ जब मंत्री प्रतिमा का अनावरण करने के बाद अपनी कार में बैठ रहे थे। राज्य के समाज कल्याण मंत्री ने कहा, गांव में मेरी उनके साथ एक संक्षिप्त चर्चा के बाद मूर्ति की स्थापना का विरोध करने वाली भीड़ ने पथराव किया। उन्होंने बताया कि उन्हें कुछ पत्थर लगे और उनको हल्की चोट आई है।

स्वामी प्रसाद मौर्य ने नई पार्टी का किया ऐलान

आरएसएसपी का झंडा लांच

लखनऊ। पूर्व मंत्री स्वामी प्रसाद मौर्य ने नई पार्टी का ऐलान किया है। उनकी पार्टी का नाम राष्ट्रीय शोषित समाज पार्टी है। सोमवार को मौर्य ने पार्टी का झंडा लांच किया। नीला, लाल और हरे रंग की पट्टी वाले इस झंडे में बीच में फरसा लिखा हुआ है। स्वामी प्रसाद ने 13 फरवरी को सपा के महासचिव पद से इस्तीफा दिया था। 7 दिन बाद ही उन्होंने पार्टी का ऐलान कर दिया। राष्ट्रीय शोषित समाज पार्टी (आरएसएसपी) साहेब सिंह धनगर की है। मौर्य ने इसे री-लॉन्च किया है। स्वामी प्रसाद मौर्य ने 2022 विधानसभा चुनाव से ठीक पहले जनवरी में भाजपा छोड़कर सपा जॉइन की थी। वह पहली योगी सरकार में मंत्री थे। मौर्य मंत्री पद से इस्तीफा देकर सपा में आए थे। मौर्य इससे पहले बसपा भी अहम पदों पर रह चुके हैं। राजनीति के शुरूआती दिनों में लोकदल और जनता दल में

भी स्वामी प्रसाद मौर्य रहे हैं।

इधर, मौर्य ने लखनऊ में मीडिया से बातचीत में अखिलेश पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि मैंने सपा को वोट बैंक बढ़ाने का काम किया। जो कभी सपा से नहीं जुड़े थे उनको जोड़ने का काम किया। लेकिन, सपा ने मेरे अभियान का मजाक उड़ाया। कई छुटभैया नेता मेरे खिलाफ बोलने लगे। अखिलेश यादव को मैंने इसकी जानकारी दी थी। लेकिन इसके बाद भी कोई कार्रवाई नहीं हुई। उनकी शह पर छुटभैया नेता मेरे खिलाफ बोलते थे।

मौर्य ने आगे कहा कि अखिलेश यादव ने जो कुछ भी हमे दिया है। कुछ वापस कर दिया है। कुछ जल्द हो जाएगा।

दिल्ली के निलंबित विधायकों ने किया दिल्ली हाईकोर्ट का रुख

नयी दिल्ली। दिल्ली विधानसभा के बजट सत्र की शेष अवधि के लिए सदन से निलंबित किए गए भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के सात विधायकों ने दिल्ली उच्च न्यायालय का रुख किया है। इन विधायकों को बजट सत्र की शुरूआत में उप राज्यपाल के अभिभाषण के दौरान बार बार बाधा डालने के आरोप में निलंबित किया गया है। दिल्ली उच्च न्यायालय के कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश मनमोहन और न्यायमूर्ति मनमीत पीएस अरोड़ा की पीठ के समक्ष याचिका को तत्काल सूचीबद्ध करने के लिए अनुरोध किया गया था। पीठ ने मामले की दिन में सुनवाई के लिए अनुमति दी। 15 फरवरी को जब उपराज्यपाल अपने अभिभाषण के दौरान आम आदमी पार्टी (आप) सरकार की उपलब्धियों पर प्रकाश डाल रहे थे तो भाजपा विधायकों ने उनके अभिभाषण में कथित तौर पर कई बार बाधा डाली थी।

छिंदवाड़ा में कांग्रेस से चुनाव लड़ेंगे नकुलनाथ-सज्जन वर्मा

भाजपा में नहीं जा रहा हूं- कमलनाथ

भोपाल/दिल्ली। एमपी के पूर्व मुख्यमंत्री कमलनाथ और उनके बेटे सांसद नकुलनाथ के भाजपा में शामिल होने की अटकलों पर सोमवार दोपहर में ब्रेक लग गया। सोमवार को कमलनाथ के साथ बैठक के बाद पूर्व मंत्री सज्जन वर्मा ने कहा- कमलनाथ जी कह रहे हैं कि कोई कहीं नहीं जाने वाला। जिन लोगों ने कांग्रेस को वट वृक्ष बनाया है, वो कैसे छोड़ सकते हैं।

कमलनाथ के करीबियों ने बताया कि उन्होंने मीडिया से बात करने के लिए पूर्व मंत्री सज्जन सिंह वर्मा को अधिकृत किया है। सज्जन वर्मा ने कहा कि कमलनाथ की राहुल गांधी और कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे से बात हुई है। छिंदवाड़ा से कांग्रेस के टिकट पर नकुलनाथ चुनाव लड़ेंगे।

इससे पहले उन्होंने अपने बंगले पर बैठक की, जिसमें मध्य

प्रदेश के विधायक, पूर्व विधायक और वरिष्ठ नेता शामिल हुए। दिल्ली में कमलनाथ के बंगले पर कल से लगा हुआ जय श्री राम का झंडा आज सुबह हटा दिया गया था, लेकिन दोपहर में फिर लगा दिया गया। एमपी कांग्रेस में टूट की खबरों को लेकर एकजुटता की जिम्मेदारी प्रदेश प्रभारी भंवर जितेंद्र सिंह को दी गई है। जितेंद्र सिंह मंगलवार को भोपाल आएंगे। वे विधायकों से वन टु वन चर्चा करेंगे। बैठक सुबह 10:30 बजे शुरू होगी। बताया जा रहा है कि विधायकों को लोकसभा चुनाव और भारत जोड़ो न्याय यात्रा पर चर्चा के लिए बुलाया गया है।

प्रदेश कांग्रेस प्रभारी भंवर जितेंद्र सिंह ने कहा- कमलनाथ हमारे वरिष्ठ नेता हैं। उन्हें लेकर जो भी बातें चल रही हैं, ये भाजपा और मीडिया की बनाई हुई हैं। कमलनाथ से मेरी बात हुई है। भारत जोड़ो न्याय यात्रा को लेकर बात हुई है। मंगलवार को भोपाल में इसे लेकर बैठक होगी। इसमें कमलनाथ भी शामिल होंगे। कमलनाथ भी यात्रा में प्रमुख रूप से भाग लेंगे। कमलनाथ के भाजपा में शामिल होने की खबरों के बारे में पूछने पर कांग्रेस नेता उमंग सिंघार ने कहा, 'यह सब अफवाहें हैं, कमलनाथ ने कभी ऐसा कुछ नहीं कहा है। वह पार्टी की संपत्ति हैं।

कांग्रेसियों का विरोध प्रदर्शन

इलेक्टोरल बांड घोटाले में फंसी भाजपा सरकार कांग्रेस की लोकप्रियता से भयभीत-जिलाध्यक्ष

आयकर कार्यालय पर की नारेबाजी

हरदोई। जिले में कांग्रेस नेताओं ने सोमवार को आयकर कार्यालय के बाहर विरोध प्रदर्शन किया। जिलाध्यक्ष आशीष कुमार सिंह ने कहा कि इलेक्टोरल बांड घोटाले में फंसी भाजपा सरकार कांग्रेस की लोकप्रियता से भयभीत है। अन्याय के विरुद्ध देश जोड़ने की राहुल गांधी की अपील से प्रभावित जनता ने कांग्रेस को जो चंदा दिया। उससे घबराकर भाजपा सरकार ने खाते फ्रिज किए।

राहुल गांधी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा को देश भर में मिल रहे अपार जन-समर्थन और यात्रा के यूपी में प्रवेश होने पर बीजेपी पूरी तरह से घबरा गई है।

उन्होंने कहा कि यही वजह है कि उनके इशारे पर आयकर विभाग द्वारा कांग्रेस पार्टी के मुख्य खाते के अलावा क्राउड फंडिंग अभियान से जुड़े खाते और युवा कांग्रेस के खाते को फ्रीज करने की कार्रवाई की है। जो बीजेपी में पनपते भय को दशार्ती है।

जिला उपाध्यक्ष साधू सिंह सोमवंशी ने कहा कि सुप्रीम कोर्ट

द्वारा इलेक्टोरल बॉन्ड पर रोक लगाने और सभी राजनीतिक दलों के चंदे का ब्यौरा देने के फैसले से भाजपा बौखला गई है। इसी कारण कांग्रेस के कामकाज में रोक लगाने की बदनीयत से भाजपा ने हमारी पार्टी के बैंक खातों को फ्रीज कर दिया। जिला उपाध्यक्ष नेतम भारतीय ने कहा कि इलेक्टोरल बॉन्ड से गलत तरीके से भाजपा ने बीते 7-8 वर्षों से पूंजीपतियों से हजारों करोड़ का चंदा लेकर चुनिंदा मित्रों को लाभ पहुंचाने का काम किया।

प्रदर्शन में युवा कांग्रेस प्रदेश महासचिव निर्भान सिंह यादव, वरिष्ठ कांग्रसी पूरन लाल रावत, शहर महासचिव अनिल वर्मा, अहिरोरी ब्लॉक अध्यक्ष शैलेन्द्र वर्मा, ब्लॉक उपाध्यक्ष सालिकराम पाल, हरिय ब्लॉक उपाध्यक्ष मोरध्वज गौतम, शहर कोषाध्यक्ष महताब अहमद, बृजेश वर्मा, अजयपाल, अलखराम, विष्णु, जिला सचिव मदनपाल वर्मा, जाकिर आदि साथी मौजूद रहे।

महर्षि कश्यप-निषाद राज जयंती पर सार्वजनिक अवकाश की मांग

सुलतानपुर। 5 अप्रैल को महर्षि कश्यप एवं महाराजा निषाद राज जयंती पर सार्वजनिक अवकाश घोषित करने की मांग सुलतानपुर में मछुआ कल्याण संस्थान ने की है। सोमवार को

मुख्यमंत्री को संबोधित एक ज्ञापन डीएम के प्रतिनिधि उपजिलाधिकारी को सौंपा गया है।प्रधान योगेश निषाद ने कहा कि महर्षि कश्यप एवं महाराजा निषाद राज मछुआ समुदाय के पूर्वज एवं सांस्कृतिक विरासत हैं। पूर्व की अन्य सरकार द्वारा इनकी जयंती पर सार्वजनिक अवकाश घोषित की किया गया था, लेकिन वर्तमान में सार्वजनिक अवकाश के बजाय निर्बन्धित अवकाश कर दिया गया है। जिससे मछुवा समुदाय में काफी रोष व्याप्त है। अध्यक्ष योगेश कुमार निषाद ने संस्था के कार्यकताओं एवं मछुवा समुदाय के समाज सेवियों के साथ मुख्यमंत्री को संम्बोधित ज्ञापन सौंपा। इस दौरान अनिल निषाद कोषाध्यक्ष मछुआ कल्याण संस्थान, सनोज निषाद संरक्षक, नरेंद्र निषाद एडवोकेट, रामू निषाद मीडिया प्रभारी ओबीसी मोर्चा भाजपा, दिलीप निषाद चुनहा सदस्य, सत्यम निषाद बहाउद्दीनपुर सदस्य, रवि निषाद बीडीसी, रोहित निषाद जिला कैप्टन मोस्ट कंल्याण संस्थान, हरीलाल निषाद सदस्य, सुनील निषाद सेक्टर संयोजक भाजपा बलुआ, राकेश निषाद जिला संयोजक मोस्ट कंल्याण संस्थान, धर्मेंद्र निषाद मोस्ट कंल्याण संस्थान मीडिया प्रभारी, कपिल निषाद कुड़िया वजूपुर और प्रमोद निषाद एडवोकेट आदि मौजूद रहे।

ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि पर जानलेवा हमला

रायबरेली। छतोह ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि की गाड़ी पर जानलेवा हमला हुआ है। बताया जा रहा है हमले में ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि का ड्राइवर गंभीर रूप से जख्मी हो गया। फायरिंग के दौरान गोली लगने से ड्राइवर गंभीर रूप से घायल हुआ है। घायल ड्राइवर को लेकर ब्लॉक प्रमुख के प्रतिनिधि नजदीकी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र डीह पहुंचे। पुलिस पूरे मामले की जांच पड़ताल कर रही है। वहीं ब्लॉक प्रमुख के प्रतिनिधि और ड्राइवर समेत आसपास के लोगों से पूछताछ की जा रही है। पूरा मामला डीह थाना क्षेत्र के अंतर्गत गोपालीपुर नहर के पास का है। जहां पर ब्लॉक प्रमुख के प्रतिनिधि ब्लॉक से निकलकर घर जा रहे थे। देर रात होने की वजह से पहले से घात लगाकर बैठे आधा दर्जन दबंगों ने ब्लॉक प्रमुख के प्रतिनिधि पर जानलेवा हमला बोल दिया। ब्लॉक प्रमुख की गाड़ी टूटी और ड्राइवर गंभीर रूप से जख्मी हो गया। सुखबीर सिंह जान से मारने की नीयत से अपनी पूरी टीम के साथ पहुंचकर मुझ पर हमला किया।

हंगामें के बीच मीनी सदन में डेढ़ घंटे चली कार्यवाही

जाजमऊ में बनेगा 1253 एकड़ में सोलर पार्क

कंबल लेकर पहुंची कांग्रेस पार्षद शालू कनौजिया

कानपुर। हंगामे के बीच सोमवार को कानपुर नगर निगम सदन की कार्यवाही पूरी हुई। सदन करीब डेढ़ घंटे चला। सबसे पहले अधिकारियों ने पिछले किए गए कामों का रिपोर्ट कार्ड प्रस्तुत किया। इसके बाद विकास कामों के प्रस्ताव सदन में रखे गए। वार्ड 14 की कांग्रेस पार्षद शालू कनौजिया सदन में कंबल लेकर पहुंचीं। कहा- जब तक क्षेत्र की समस्या का समाधान नहीं होता, वह यहीं बैठी रहेंगी। अधिकारी बोले कि सदन में कंबल लाने की अनुमति नहीं है। इस पर शालू ने कहा कि मुझे भी बाहर निकाल दीजिए।

भाजपा पार्षद हरी स्वरूप तिवारी ने बोलने को लेकर महापौर का विरोध किया। महापौर प्रमिला पांडेय ने नाराजगी जताते हुए कहा कि जिसको जाना है वो चला जाए। पार्षद जाने लगे तो नेता सदन नवीन पंडित ने पार्षद को पकड़कर बैठाया।

सबसे पहला प्रस्ताव सदन में सोलर पार्क का रखा गया। जाजमऊ स्थित 1253 एकड़ में सोलर पार्क नगर निगम स्थापित करेगा। सीवेज फार्म की जगह पर बनेगा। 36 एमएलडी सीईटीपी चलाने के लिए बिजली की जरूरत पड़ती थी। इससे बिजली खर्च बचाया जाएगा।

वरिष्ठ पार्षद हाजी सुहैल ने पार्षदों की शिकायत पर कोई ध्यान न देने की बात कही। इस पर नगर आयुक्त शिवशरण अप्पा ने अधिकारियों ने नाराजगी जताते हुए कहा की कुछ अधिकारी सीयूजी नंबर भी बंद रखते हैं। नगर आयुक्त ने अपर नगर आयुक्त को पार्षदों की शिकायत सुनने के लिए नोडल अधिकारी नियुक्त किया। नगर निगम ने 26 अगस्त को कार्यकाल का पहला सदन बुलाया था। इस बार कुल 22 अरब से ज्यादा के बजट को हरी झंडी दी गई। हालांकि, इस दौरान सदन का स्थगित किया गया और 9 अक्टूबर को स्थगित सदन को फिर से बुलाया गया, इस दौरान पार्षदों के मुद्दों पर चर्चा हुई। पहले यह सदन 28 दिसंबर फिर 6 जनवरी को बुलाने पर चर्चा हुई।

मिड डे मील के सेवन से 15 बच्चे बीमार

खाने में बनी थी सब्जी पूड़ी, 4 बच्चों की हालत गंभीर, ग्रामीणों की मदद से बच्चे पहुंचे स्वास्थ्य केंद्र

कानपुर। कानपुर के सरसौल क्षेत्र में स्थित शंकरानंद जूनियर हाई स्कूल में सोमवार को मिड डे मील का खाना खाने के बाद 15 बच्चों की हालत खराब हो गई। खाना खाने के 15 से 20 मिनट बाद बच्चों ने स्कूल में ही उल्टी करनी शुरू कर दी। एक के बाद एक जब कई बच्चों को एक साथ उल्टियां हुई तो शिक्षकों के हाथ पांव फूल गए। आनन-फानन में शिक्षकों ने ग्रामीणों की मदद लेकर एक-एक कर बच्चों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भिजवाने का काम शुरू कर दिया। इनमें से चार बच्चों की हाल गंभीर बताई जा रही है। उन्हें रामादेवी स्थित कांशीराम ट्रामा सेंटर में भर्ती कराया गया है।

स्कूल के प्रिंसिपल ओपी वर्मा

ने बताया कि आज सुबह स्कूल में पूड़ी और सब्जी बनी थी। उसको खाने के बाद कुछ बच्चे तो ठीक रहे लेकिन 15 से 16 बच्चे की तबीयत बिगड़ गई। यह भी बताया जा रहा है की इन बच्चों ने विद्यालय परिसर में लगे बेर के पेड़ से फल भी खाए थे, जितने बच्चों को उल्टी हो रही है उन सभी ने बेर खाए थे।

वहीं, स्कूल के शिक्षकों की माने तो उनका कहना है कि स्कूल में दोपहर के खाने में दाल, चावल, रोटी और सब्जी बनी थी। स्कूल प्रशासन ही सही जानकारी उपलब्ध नहीं कर पा रहा है।

बेसिक शिक्षा अधिकारी सुजीत कुमार सिंह ने कहा कि इस पूरे मामले की जांच की जाएगी. क्योंकि यह एक गंभीर प्रकरण है। अगर खाना खाने से बच्चों की हालत बिगड़ी है तो खाना किसने बनाया और इसमें किसकी लापरवाही रही। उस पर कार्रवाई की जाएगी। फिलहाल अभी तक यह जानने का प्रयास किया जा रहा है कि आखिरकार तबीयत खाना खाने से बिगड़ी है या फिर किसी और चीज से।

रहमद के पुत्र अजफाल (11), शब्बीर के पुत्र सलमान (8), ख्वाजिया की पुत्री फरजाना (10), शमी मोहम्मद के पुत्र अफजल (10) की हालत गंभीर बताई जा रही है।

विवाहिता की मौत पर मायके वालों ने लगाया दहेज हत्या का आरोप

लालगंज। जिले में एक विवाहिता की रविवार रात मौत हो गई। जिसके बाद

ससुरालियों ने मायके के लोगों को घटना की सूचना दी। मौके पर पहुंचे मायके के लोगों ने पुलिस को सूचना दी। मायके के लोगों ने ससुरालियों पर दहेज की मांग को लेकर बेटी को जान से मारने का आरोप लगाया। जिसके बाद उदयपुर पुलिस ने ससुरालीजनों के खिलाफ दहेज हत्या का मुकदमा दर्ज किया है। थाना क्षेत्र के भैसना गांव निवासिनी काजल की ससुराल में रविवार की रात मौत को लेकर पिता दिनेश सिंह निवासी सिसनी भुवालपुर नसीराबाद रायबरेली की तहरीर पर पुलिस ने केस दर्ज जांच शुरू की है।

हरदोई से सपा प्रत्याशी होंगी उषा

हरदोई। सोमवार को समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव ने 31 लोकसभा हरदोई सुरक्षित और 32 लोकसभा मिश्रिख सुरक्षित से अपने अपने प्रत्याशियों का ऐलान किया है। हरदोई से उषा वर्मा तो मिश्रिख से रामपाल राजवंशी को सपा ने अपना उम्मीदवार बनाया है। ऊषा वर्मा तीन मर्तबा 1998, 2004 और 2009 में समाजवादी पार्टी सिंबल से सांसद रह चुकी है, इसके बाद 2014 में उन्हें बीजेपी के अंशुल वर्मा ने हराया था। 2019 में हुए लोकसभा चुनाव में भाजपा के जय प्रकाश को जीत हासिल हुई थी और उषा को करारी हार का सामना करना पड़ा था। उषा वर्मा 2003 में सपा सरकार में मंत्री भी रही है। 2002

में उन्होंने विधानसभा में जीत दर्ज कराई थी। गुजरे बरस से ऊषा वर्मा के बीजेपी में शामिल होने की चर्चा चल रही थी। समाजवादी पार्टी में एक कद्दावर नेता रहे, जो अब बीजेपी में है उनके संपर्क उषा थी। लेकिन टिकट की गारंटी न मिलने की वजह से उन्होंने बीजेपी का दामन नहीं थमा। ऊषा वर्मा का राजनीतिक शुरूआत और उनके ससुर परमाई लाल की वजह से वजूद में आया जो पासी समाज के बड़े नेता थे और वर्ष1962 में सांसद चुने गए थे। वहीं 32 मिश्रिख लोकसभा से समाजवादी पार्टी ने रामपाल राजवंशी को अपना उम्मीदवार बनाया है, जो सपा सरकार में कारागार मंत्री रह चुके है।

जमीन के विवाद में दो पक्षों में चले लाठी-डंडे, दस घायल

हरदोई। मल्लावां थाना क्षेत्र में जमीनी विवाद को लेकर दो भाइयों में जमकर मारपीट हुई है। जिसमें लाठी डंडे व ईंट पत्थर चलने से 10 लोग घायल हुए हैं। जिनको इलाज के लिए सीएचसी में भर्ती कराया गया है। पूरे मामले में किसी ने वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया,जोकि वायरल हो रहा है। पुलिस दोनों पक्षों की तहरीर पर मामला दर्ज कर जांच में जुटी है। मल्लावां कोतवाली क्षेत्र के ग्राम शाहपुर गंगा निवासी मायाराम और उसके भाई दयाराम के बीच जमीनी विवाद चला आ रहा है। जिसके चलते सुबह दोनों पक्षों में कहासुनी के बाद मारपीट हो गई। शाम को दयाराम के रिश्तेदार सुरेंद्र उसकी पत्नी कुसुम लता पुत्र मंजेश निवासी ग्राम तरौली थाना कासिमपुर शाम को उसके घर आए और और पुनः दोनों पक्षों में विवाद हो गया।

संक्षिप्त खबरें...

सुल्तानपुर की एमपी-एमएलए कोर्ट में पेश होंगे राहुल गांधी

सुलतानपुर। कांग्रेस सांसद राहुल गांधी 'भारत जोड़ों न्याय यात्रा' लेकर अमेठी पहुंचे हैं। वह इस यात्रा को मंगलवार को रोकेंगे और सुल्तानपुर की एमपी-एमएलए कोर्ट में पेश होंगे। उनके अधिवक्ता काशी प्रसाद शुक्ला ने इसकी संभावना बताई है। केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह के विरुद्ध अभद्र टिप्पणी के मामले में

राहुल के विरुद्ध 2018 में यहां एक मानहानि परिवाद दायर हुआ था। कोर्ट ने 16 दिसंबर 2023 को इस मामले में राहुल को वारंट जारी किया था। राहुल गांधी के विरुद्ध दायर मानहानि परिवाद में पिछली पेशी 18 जनवरी को हुई थी। जिसमें पहली बार राहुल गांधी की ओर से उनके अधिवक्ता काशी प्रसाद शुक्ला कोर्ट में अपियर हुए थे। उन्होंने कोर्ट से यह भी कहा था कि हमको परिवाद की कोई नकल नहीं दी गई है नकल दिलाई जाए ताकि हम आपत्ति दाखिल कर सके। तब कोर्ट ने मुकदमें में ने 20 फरवरी की तारीख नीयत की थी। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश एक्स पर पोस्ट किया है। उन्होंने लिखा है, राहुल गांधी को कल, 20 फरवरी सुबह सुल्तानपुर में उत्तर प्रदेश जिला न्यायालय में उपस्थित होने के लिए समन जारी किया गया है।

बोर्ड पर अंकित गलत नम्बर से भटकते है फरियादी

बाराबंकी। बाराबंकी में विकास भवन के मुख्य द्वार पर लगे बोर्ड को देखकर अधिकारियों के कक्ष तक पहुंचाना चाहते हैं तो यह आपके लिए मुमकिन नहीं होगा। बोर्ड पर लिखे नंबर अधिकारियों के कक्ष पर अंकित नंबर से मेल नहीं खाते। यहां तक कि मुख्य विकास अधिकारी की कक्ष भी गलत दर्शाया गया है। विकास भवन आने वाले जरूरतमंद लोग किसी भूल भुलैया में उलझ कर रह जाते हैं। मुख्य विकास अधिकारी की कक्ष संख्या बोर्ड पर 111 अंकित है। जबकि जहां वे बैठते हैं वह कक्ष संख्या 113 है। जिला युवा कल्याण अधिकारी के कक्ष पर भी संख्या 113 अंकित है। यही हालत अन्य कई कार्यालयों की भी है। जिससे लोग भटक कर कभी ऊपर तो कभी नीचे चक्कर काटते रहते हैं। यह स्थिति काफी समय से बनी हुई है। कई अधिकारी आए और गए लेकिन उन्हें खुद नहीं पता कि वे किस नंबर के कमरे में बैठते हैं। मुख्य विकास अधिकारी को भी अपना कमरा नंबर 113 पता है। बोर्ड बता रहा है कि उनका कमरा नंबर 111 है।

किन्नरों ने डीएम-एसपी से की शिकायत

सुलतानपुर। डीएम-एसपी की चौखट पर अब दोस्तपुर कस्बे में क्षेत्र बंटवारे को लेकर चल रहे विवाद का मामला पहुंच गया है। किन्नरों के एक पक्ष ने अधिकारियों से मिलकर पुलिस पर कार्रवाई नहीं करने का आरोप लगाया। जिस पर अधिकारियों ने जांच कराकर कार्रवाई का आश्वासन दिया है। दोस्तपुर थाना क्षेत्र के कस्बे में रविवार दोपहर बधाई नेग लेने के दौरान किन्नरों के दो पक्षों में जमकर मारपीट हुई थी। जिसमें अंबेडकरनगर के बेवाना की किन्नर बबिता किन्नर पक्ष से तीन लोग घायल हुए थे। इसमें किरन किन्नर को गंभीर चोट आई और उसे राजकीय मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया गया। आरोप है कि पुलिस ने थाने पर केस दर्ज नहीं किया तो सोमवार को बबिता किन्नर और उसके साथ दर्जनों किन्नर डीएम-एसपी के जनता दरबार में पहुंचे थे। अधिकारियों ने उनकी फरियाद सुनकर जांच कराकर कार्रवाई का आश्वासन दिया है।

तेज रफ्तार वाहन ने दो को रौंदा, वृद्धि की मौत

महिला गंभीर रूप से घायल, चालक गाड़ी समेत फरार

रायबरेली। तेज रफ्ता वाहन ने बुजुर्ग और एक महिला को पीछे से जोरदार टक्कर मार दी। सूचना पर पहुंची पुलिस दोनों को लेकर नजदीकी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंची। जहां पर डॉक्टरों ने बुजुर्ग को मृत घोषित कर दिया। महिला की हालत गंभीर होने पर उसे जिला अस्पताल के लिए रेफर कर दिया है। पूरा हादसा ऊंचाहार कोतवाली क्षेत्र के बंधवा मुजरे अरखा गांव का है। बंधवा अरखा के रहने वाले रामसेवक व फूल कली (60) को पीछे से वाहन ने टक्कर मार दी थी। दोनों की हालत गंभीर होने पर ग्रामीण और पुलिस से लेकर

नजदीकी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुंचे थे। जहां पर डॉक्टरों ने बुजुर्ग रामसेवक को मृत घोषित कर दिया था। घायल महिला की हालत गंभीर देखते हुए उसे जिला अस्पताल के लिए रेफर कर दिया गया। बताया जा रहा है की टक्कर मारने के बाद गाड़ी चालक अपनी गाड़ी लेकर मौके से भागने में कामयाब रहा सूचना पर पहुंचे पुलिस ने मृतक बुजुर्ग के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। वहीं आसपास लगे सीसीटीवी कैमरा की मदद से वहां की तलाश की जा रही है। ऊंचाहार कोतवाली प्रभारी ने बताया कि सूचना मिलते की तत्काल प्रभाव से मौके पर पहुंच गए थे। जांच पड़ताल की जा रही है। जो तथ्य निकलकर सामने आएंगे उसके आधार पर अग्रिम कार्यवाही की जाएगी। मृतक के शव को कब्जे में ले लिया गया है। वही जिस वाहन ने टक्कर मारी उसकी तलाश के लिए टीमें गठित कर दी गई है। सीसीटीवी कैमरा की मदद ली जा रही है।

नहर पुलिया के किनारे मिला शव

सीतापुर। सीतापुर में नहर पुलिया के नीचे एक युवक का संदिग्ध परिस्थितियों में शव मिलने से हड़कंप मच गया। स्थानीय लोगों की सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। पुलिस सड़क हादसे की ओर इशारा कर रही है। पुलिस का कहना है कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी। मामला सिधौली कोतवाली इलाके का है। यहां मिश्रिख मार्ग पर ग्राम बाड़ी के कटरा पुलिया के नीचे एक युवक का शव मिलने से हड़कंप मच गया। ग्रामीणों की सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव की शिनाख्त रामपाल यादव पुत्र रंजित यादव उम्र लगभग 55 वर्ष निवासी ग्राम गैलनपुरवा (दतवल) थाना संदना के रूप में की है।

2121 कुंडीय महायज्ञ का समापन

अयोध्या। 10 फरवरी से भगवान श्री राम की जन्मस्थली अयोध्या के बड़ी छावनी की बगिया में चल रहा 2121 कुंडीय रामनाम महायज्ञ का सनातन धर्म के विकास के संकल्प के साथ समापन हुआ। राम के मंदिर में एक करोड़ 11 लाख रुपया दान करने वाले स्वामी कनक बिहारी दास रघुवंशी के साकेत वास के बाद उनके शिष्यों की ओर से इस कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के बाद 2121 कुंडीय महायज्ञ को अयोध्या में करने के उनके संकल्प को रघुवंशी समाज एवं उनके उत्तराधिकारी और कार्यक्रम के संयोजक महंत श्याम दास महाराज और संकट मोचन हनुमान किला के महंत परशुराम दास द्वारा पूरा किया

गया। यज्ञ के समापन पर अयोध्या हनुमानगढ़ी के महंत धर्मसम्राट महंत ज्ञान दास महाराज सहित अयोध्या के तीन हजार संतों का सम्मान किया गया।कार्यक्रम में राम मंदिर ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय भी पहुंचे और उन्होंने कार्यक्रम की सराहना की। इस अवसर पर संकट मोचन सेवा के राष्ट्रीय अध्यक्ष महंत संजय दास ने बताया कि प्राण प्रतिष्ठा के बाद अयोध्या में प्रभु श्री राम लला के लिए समस्त रघुवंशी समाज द्वारा भव्य आयोजन किया गया।

गैस गीजर से बेहोश युवती की इलाज के दौरान मौत

दरवाजा तोड़कर निकाला; 3 महीने पहले मिली थी नौकरी

कानपुर। जिले में गैस गीजर से एक महिला टीचर की मौत हो गई। तीन महीने पहले ही उसका चयन बिहार शिक्षक भर्ती में हुआ था। चचेरी बहन की शादी में शामिल होने के

लिए छुट्टी पर आई थी। शादी समारोह के बाद घर लौटी और बाथरूम में नहाने के दौरान गैस गीजर लीकेज होने से बेहोश हो गई। परिवार के लोगों ने इलाज के लिए हॉस्पिटल में एडमिट कराया। दो दिन बाद महिला टीचर ने दम तोड़ दिया। रावतपुर क्षेत्र के केशवपुरम आवास विकास में रहने वाले संतोष यादव का ट्रक बॉडी का कारखाना है। संतोष ने बताया कि उनकी बेटी अमिता यादव (26) का तीन महीने पहले बिहार की शिक्षक भर्ती में चयन हुआ था। उन्नाव रघुवीर खेड़ा में रहने वाली चचेरी बहन की शादी में शामिल होने के लिए 10 दिन की छुट्टी लेकर घर आई थी। उन्नाव से शादी से घर लौटने के बाद 16 फरवरी की शाम नहाने के लिए बाथरूम में गई, लेकिन बाहर नहीं निकली। काफी देर तक बाथरूम से कोई आवाज नहीं आने पर मां ललिता ने आवाज दी, लेकिन कोई हरकत नहीं हुई। उन्होंने अमिता के पिता संतोष और भाई अमन को जानकारी दी। परिवार के लोग घबरा गए और तरवाजा तोड़ा तो बाथरूम में अचेत हालत में पड़ी हुई थी। परिवार के लोगों ने एक निजी अस्पताल में एडमिट कराया। डॉक्टरों ने बताया कि हालत बेहद नाजुक है। दो दिन तक कोई सुधार नहीं होने पर परिवार के लोगों ने अमिता को हैलट में एडमिट कराया। रविवार रात को शिक्षिका अमिता की हार्टबीट भी थम गई।

बाइक सवार की हादसे में मौत

हरदोई। कटरा बिल्हौर राजमार्ग पर देर रात पिकअप की टक्कर से बाइक सवार शराब सेल्समैन की दर्दनाक मौत हो गई। मौत की खबर मिलते ही परिजनों में कोहराम मच गया। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और आगे की कार्रवाई में जुटी हुई है। कटरा बिल्हौर राजमार्ग पर मल्लावां कस्बे के मोहल्ला गोवर्धनपुर के रहने वाले आदेश गुप्ता पर पुत्र प्रकाश चंद्र गुप्ता बिलग्राम कस्बे के देशी शराब ठेका पर सेल्समैन के पद पर काम करते थे। वह देर रात ठेका बंद कर बाइक से अपने घर जा रहा था। तभी कस्बे के आरके पैलेस के निकट सामने से जा रहे पिकअप डाला ने उसे जोरदार टक्कर मार दी। जिसमें वह गंभीर रूप से घायल हो गया। जिसके बाद घायल को आनन फानन में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया। यहां पर उसकी हालत नाजुक देखते हुए चिकित्सकों ने गंभीर हालत में उसे हरदोई के मेडिकल कालेज रेफर कर दिया। जहां पर उसकी मौत हो गई।

रामलला को लगाया गया 7000 किलो हलवा का भोग

1.5 लाख भक्तों में किया गया वितरित

अयोध्या। रामलला को सोमवार को 7 हजार किलो हलवा का भोग लगाया गया। उसके बाद भक्तों में वितरित किया गया। इसे श्री राम हलवा नाम दिया गया है। इसे बनाने में करीब 4 घंटे लगे। इसके लिए खास तरह की कड़ाही का इंतजाम किया गया था। यह करीब 1400डॅ की थी। इस हलवे को बनाने के लिए नागपुर के मशहूर सेफ विष्णु मनोहर अयोध्या आए हैं। अयोध्या में राममंदिर बनने के बाद हर दिन 2 लाख भक्त पहुंच रहे हैं। इसे देखते हुए श्री हनुमत संस्कृत स्नातकोत्तर महाविद्यालय के परिसर में यह हलवा तैयार किया गया है। संस्था का दावा है कि एक साथ 7 हजार किलो हलवा कभी नहीं बना है, इसलिए यह विश्व रिकॉर्ड हैं।

विष्णु मनोहर ने बताया कि इस कड़ाही का वजन 1400 किग्रा है। ये स्टील और तांबा से तैयार हुई है।

'कारसेवा से पाकसेवा' कार्यक्रम के तहत श्री राम हलवा बनाया गया है। जिस कड़ाही में यह हलवा तैयार हो रहा है। वह भी खास है। इसका व्यास 10 फीट है। करछी 24 किलो की है। विष्णु मनोहर के नेतृत्व में 35 लोगों ने हलवा को तैयार किया। इनकी टीम में नागपुर के साथ अमेरिका से आए लोग भी शामिल थे। हलवा बनने के बाद महंत प्रेमदास महाराज, अयोध्या नरेश विमलेंद्र मोहन प्रताप मिश्र, सांसद लल्लू सिंह, विधायक वेद प्रकाश गुप्ता की मौजूदगी में वैदिक मंत्रोच्चार के बीच प्रभु राम का भोग लगाया गया। रेनू अग्रवाल ने बताया शेफ विष्णु मनोहर नागपुर के रहने वाले हैं। वे लाइव कुकिंग शो और इनोवेटिव व्यंजनों के लिए मशहूर हैं। इनके नाम अभी तक 12 विश्व रिकॉर्ड हैं। इसके नाम केवल 285 मिनट में चावल की 75 विभिन्न किस्मों से 75 व्यंजन बनाने का रिकॉर्ड हैं। इससे पहले नागपुर में 6000 किलो का हलवा बनाया था। 2019 में 3000 किलो की खिचड़ी का वर्ल्ड रिकॉर्ड भी इन्हीं के नाम है।

पीएम का आगमन : एसपीजी ने परखी सुरक्षा व्यवस्था

वाराणसी (परिवर्तन दूत)। प्रधानमंत्री के आगमन की तैयारी को लेकर एसपीजी ने स्थानीय प्रशासनिक अधिकारियों रविदास मंदिर ट्रस्ट के लोगों के साथ बैठक कर-के संत रविदास जयंती की तैयारी और सुरक्षा व्यवस्था के बारे में गहन चर्चा विमर्श किया। पुलिस आयुक्त अशोक मुथा जैन व जिलाधिकारी एस० राजलिंगम ने सोमवार को एसपीजी टीम के साथ अन्य विभाग के अधिकारियों के साथ निरीक्षण करने के बाद लंगर हाल में बैठकर वार्ता किया है। इस बैठक में कार्यक्रम की रूप रेखा और प्रधानमंत्री के स्वागत तथा उनसे मिलने वालों लोगों पर भी चर्चा हुई है। संत रविदास जयंती पर दस हजार भाजपा कार्यकर्ता और सेवा बस्ती के लोक कार्यक्रम में शामिल होंगे। प्रधानमंत्री की सुरक्षा को लेकर रविदास कॉरिडोर पार्क के भी भीतर डी घेरा गहरा के बाद ट्रस्ट के लोग और भाजपा पदाधिकारी और कार्यकर्ता रहेंगे। उसके बाद देश-विदेश से आने वाले रविदास भक्त बैठेंगे। सुरक्षा को लेकर आसपास के मकान पर पुलिस के जवान तैनात रहेंगे। पूरे मेला क्षेत्र के निगरानी के लिए सीसीटीवी कंट्रोल तीन जगह पर बनाई गई है। प्रधानमंत्री सबसे पहले मंदिर में मत्था टेकने के बाद संत रविदास प्रतिमा का लोकार्पण करने के बाद मंच से सभा को संबोधित करेंगे। मंच मंदिर प्रबंधन की तरफ से बनवाया जा रहा है। संत निरंजन दास प्रधानमंत्री का स्वागत करेंगे।

संत रविदास जयंती समारोह में शामिल हो सकते है पीएम मोदी

परिवर्तन दूत

वाराणसी (प.सं.)। संत रविदास जयंती में भक्तों के जुटान होने से सीर गोवर्धनपुर की फिजा ही बदल गई है। जयंती समारोह में प्रधानमंत्री के शामिल होने को लेकर चल रही तैयारी भी लगभग पूरी हो चुकी है। बताया जा रहा है कि प्रधानमंत्री के आने के पहले एक बार मुख्यमंत्री आकर तैयारी का पुनः निरीक्षण कर सकते हैं। वहीं इसे लेकर अधिकारी लगातार सीर गोवर्धनपुर में चल रही तैयारी का निरीक्षण करने के लिए पहुंच रहे हैं। भगवानपुर से गोवर्धनपुर जाने वाले मार्ग को लोक निर्माण विभाग द्वारा दुरुस्त कर लिया गया है। सड़क के दोनों तरफ बल्लियों का बैरिकेडिंग किया जा रहा है। जयंती समारोह में लाखों से की संख्या में देश-विदेश से मिलकर अनुयाई

मिनी बेगमपुरा में तब्दील हुआ सीर

अमृतवाणी की पाठ से पूरा इलाका गूंज रहा

पहुंचेंगे। मंदिर में चल रहे लगातार अमृतवाणी की पाठ से पूरा इलाका गूंज रहा है। सेवादारों और संगत के पंजाब हरियाणा सहित अन्य जगहों से आने का क्रम लगातार बना हुआ है।

रविदास प्रतिमा के चारों तरफ 15 फीट के दायरे में ईंट लगाकर ढलाई किया जाएगा। प्रतिमा को उत्तर में स्थापित करने को लेकर लोगों का मानना है कि रविदास जी उत्तर में बैठकर ही अपना मूल काम जूता बनाने का करते थे। इसलिए इस प्रतिमा को भी उत्तर की तरफ ही स्थापित किया जा रहा है। प्रधानमंत्री जयंती समारोह में पहुंचने के बाद सीधे रविदास जी का दर्शन पूजन करेंगे।इसके बाद वहां से निकलकर संत निरंजन दास से मिलने सत्संग पंडाल पर पहुंचेंगे। वहां से वापस लौटते समय लंगर चखने के बाद वापस लौट जाएंगे। सत्संग पंडाल का निर्माण कार्य तेजी से चल रहा है। जमीन से 10 फीट ऊपर मंच पंडाल के भीतर बनेगा।

बनाया जाएगा आपातकालीन दरवाजा - प्रधानमंत्री के मूवमेंट को देखते हुए कॉरिडोर के बने दीवार में पूर्व तरफ दो जगह तोड़कर आपातकालीन दरवाजा बनाया जाएगा। लंगर से होकर वापस लौटने वाले संगत के लोग सत्संग में गेट से चेकिंग के बाद प्रवेश मिलेगा। पूर्व तरफ से दीवार के किनारे से एक तरफ से रास्ता सत्संग पंडाल में जाने के लिए बनेगा। पुलिस कमिश्नर, जिलाधिकारी व एडीसीपी यातायात के साथ वाहन पार्किंग की जगह का निरीक्षण करने के लिए पहुंचे थे। पुलिस आयुक्त जिलाधिकारी चल रहे कामों का निरीक्षण करने के बाद अंदर वाहन पार्किंग और सुरक्षा व्यवस्था का निरीक्षण किया। सीर गोवर्धनपुर इलाके में 10 जगह पर वाहन पार्किंग जिला प्रशासन की तरफ से बनाया गया है। फायर ब्रिगेड की 8 गाड़ियों के साथ मेला क्षेत्र में जवान तैनात रहेंगे।

स्पेशल ट्रेन से 21 को आएंगे संत निरंजन दास-संत निरंजन दास 21 तारीख को स्पेशल ट्रेन से 2000 संगत के साथ चलकर 22 तारीख को कैंट स्टेशन पर पहुंचेंगे। 23 तारीख की सुबह पंडाल क्षेत्र का निरंजन दास घूम कर भ्रमण करेंगे और यहां आए भक्तों को दर्शन देंगे। 23 की शाम को ही नगवां पार्क में दीप उत्सव किया जाएगा।

बीएचयू बवाल मामला

आरोपी छात्रों के कमरे सील

परिसर में घुसी फोर्स, पीएसी तैनात

परिवर्तन दूत

वाराणसी (प.सं.)। ब्रोचा छात्रावास के पास शनिवार की रात स्कॉर्पियो की टक्कर से साइकिल सवार की मौत के बाद बीएचयू में बवाल करने वाले 12 नामजद 200 अज्ञात के खिलाफ पुलिस ने मुकदमा दर्ज किया था। वहीं तीन हास्टल के पांच कमरों को पुलिस ने सील कर दिया। सुरक्षा की दृष्टि से पुलिस व पीएसी को तैनात किया गया है। विश्वविद्यालय के सह सुरक्षा अधिकारी राकेश कुमार गुप्ता की शिकायत पर पुलिस ने शुभम शुक्ला, संजय गांधी, अनुज राय, अंकित पाल, सूरज कुमार उमराव, दुर्गेश यादव अमिया, संकेत कुमार, संभव, कौशिक, अभिषेक कुमार, सुरेश कुमार पासवान, प्रत्युष कुमार, यशवर्धन राज, सहित 200 अज्ञात के खिलाफ आईपीसी 147 148149 332 353 427 323 504 506452283 505 संपत्ति को नुकसान अधिनियम 3,4,7 के तहत मुकदमा दर्ज किया गया। पुलिस इस मामले में सात आरोपी छात्रों को हिरासत में लेकर जेल भेज चुकी है। इसी क्रम में आज सोमवार को डीपी काशी जॉन के नेतृत्व में एसीपी भेलूपुर सहित भारी पुलिस फोर्स और पीएससी को लेकर कैंपस में पहुंचे। इसके बाद तीन हॉस्टल के पांच कमरों को सील कर दिया गया है। वहीं हॉस्टलों के बाहर पुलिस ने तीन छात्रों को वांछित करार देते हुए उनके नाम भी चस्पा किया है। नोटिस पर शुभम शुक्ला पुत्र अज्ञात हाल पता शोध छात्र बीएचयू, बिट्टू बाबू पुत्र शैलेन्द्र कुमार निवासी ग्राम बारत पोस्ट वैजनाथपुर जिला नेवादा बिहार और संजय गांधी पुत्र मनोज चतुर्वेदी निवासी साहुवां के नाम अंकित है। पुलिस का कहना है कि आरोपी छात्रों ने दुर्घटना के बाद यह अफवाह फैला दिया की दुर्घटना में मृतक विश्वविद्यालय का छात्र है। इसके बाद सभी ने सुरक्षा कार्यालय पहुंचकर खड़ी गाड़ियों में तोड़फोड़ करते हुए सुरक्षा कर्मियों से मारपीट गाली-गलौज करने लगे। सिंह द्वारा को बंद करने के साथ ही डॉक्टर गेट को भी जाम कर दिया था।

नगर आयुक्त ने वर्कशाप का किया निरीक्षण

वाराणसी। नगर आयुक्त अक्षत वर्मा ने सोमवार को परिवहन वर्कशाप का निरीक्षण किया। इस दौरान अनुपयोगी वाहनों व सामान के बारे में जानकारी ली। साथ ही जरूरी निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि परिवहन वर्कशाप में वाहनों से निकले अनुपयोगी सामग्रियों जैसे बैट्री, टायर, ट्यूब, लोहे के स्क्रैप एवं अनुपयोगी डस्टबिन इत्यादि की नीलामी यथाषीघ्र कराना सुनिश्चित करें। वाहन मरम्मत हेतु आवश्यक स्पेयर पार्ट्स/जॉब वर्क की आपूर्ति अथराइज्ड डीलर अथवा सर्विस सेंटर से कोटेशन प्राप्त कर करें। कहा कि परिवहन कार्यशाला परिसर अन्तर्गत लिपिक कक्ष, स्टोर, टीन शेड, टॉयलेट मरम्मत का कार्य के साथ-साथ पेयजल की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए।

छात्रों ने मांगे बीएचयू उपद्रव के वीडियो फुटेज

एनएसयूआई का आरोप- दिव्यांगों पर हुआ लाठीचार्ज

बोले- हर छात्र उपद्रवी नहीं थे

परिवर्तन दूत

वाराणसी (प.सं.)। काशी हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) में 2 दिन पहले हुए मजदूर के एक्सीडेंट बाद से छात्रों का गुस्सा अभी शांत नहीं हुआ है। ठरवकइलव ने आज आरोप लगाते हुए कहा, वाराणसी पुलिस ने दिव्यांग छात्रों और ग्राउंड पर खेल रहे निर्दोष छात्रों पर लाठियां बरसाई है। साथ ही विश्वविद्यालय प्रशासन ने कई छात्रों पर नामजद केस कराया है। अब हमारी मांग है कि सबकी हिंसात्मक वीडियो फुटेज जारी करे। इससे उन छात्रों की पहचान हो जाएगी, जो उपद्रव कर रहे थे। निर्दोष तो नहीं फंसेगा।

इस मामले को लेकर छात्रों ने इलव के चीफ प्रॉक्टर को एक लेटर भी दिया। कहा कि बिड़ला अ हॉस्टल में जिन छात्रों की पिटाई की गई, वे दिव्यांग थे। जबकि, एक्सीडेंट के दोषी वाहन चालक और उसमें बैठे लोग फरार हो गए थे। उन्हें अभी तक पकड़ा नहीं जा सका है। हम लोग किसी तरह के हिंसा के पक्षधर नहीं हैं, लेकिन ये भी तय होना चाहिए कि जो छात्र अरेस्ट किए गए हैं, उनमें से सारे उपद्रवी नहीं थे। किसी एक भी निर्दोष छात्र को फंसाकर उसके करियर को खत्म करने का हम लोग जोरदार विरोध करते हैं। इकाई अध्यक्ष राजीव नयन ने कहा 17 फरवरी की शाम में ब्रोचा हॉस्टल के पास एक तेज रफ्तार से चल रही स्कार्पियो ने मजदूर को कुचल दिया। उसकी मौत हो गई। कैंपस में इस तरह से लगातार बढ़ रही घटनाएं न सिर्फ यहां पढ़ रहे छात्रों के सुरक्षा पर सवाल पैदा कर रही बल्कि यह विश्वविद्यालय प्रशासन की नाकामी को बता रहा है।

पुलिस पर लगाया गाली देने का आरोप- इकाई सचिव धर्मेंद्र पाल ने कहा कई छात्र, जिनपर लाठीचार्ज हुआ हैं वो हॉस्टल के ग्राउंड में खेल रहे थे। पुलिस जब गाली गलौज करते हुए उनके साथ मारपीट करती हैं तो वो भागते हुए रूम में आते हैं। जहां से पुलिस उन्हें पकड़कर ले जाती है, बाद में ऐसे निर्दोष छात्रों पर भी केस लादा जाता है। छात्रों के प्रतिनिधिमंडल में शंभू कनोजिया, सत्यम, राहुल, अनुज, आशीष, आकाश, मनीष, राहुल, रितेश आदि ने चीफ प्रॉक्टर से अपनी 5 सूत्री मांगे भी रखी।

संक्षिप्त खबरें...

भाजपा जिलाध्यक्ष हंसराज विश्वकर्मा ने निशुल्क स्मार्टफोन वितरण किये

वाराणसी (परिवर्तन दूत)। विधान परिषद सदस्य एवं भाजपा जिलाध्यक्ष हंसराज विश्वकर्मा ने रोहनिया विधानसभा के सरदार वल्लभ भाई पटेल महाविद्यालय बच्छाव वाराणसी में निःशुक स्मार्टफोन विरतण के किये जिसमें उदय सिंह पटेल डॉ गौरी शंकर प्रसाद मंडल अध्यक्ष मिलन मौर्या राजू वर्मा अजय विश्वकर्मा आदि लोग मौजूद रहे।

स्ट्रीट लाइट से मोहनसराय हुआ जगमग

वाराणसी (परिवर्तन दूत)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी काशी दौरे के दौरान मोहनसराय से औरंगाबाद-बिहार जाने वाली सिक्स लेन हाईवे का उद्घाटन भी करेंगे। इसको देखते हुए मोहनसराय से औरंगाबाद बिहार जाने वाली हाईवे के बीच में खंभे पर स्ट्रीट लाइट लगाने का कार्य युद्धस्तर पर चल रहा है। सोमवार को मोहनसराय चौराहे पर हाइवे के कर्मचारियों के साथ बिजली कर्मियों ने जेनरेटर के जरिए बिजली वायरिंग को चेक किया। स्ट्रीट लाइट के खंभे पर कहीं-कहीं तिरंगे रंग का झालर तो कहीं सफेद कलर का झालर लगाया गया, जो आकर्षण का केंद्र रहा। जिसे देखकर हाईवे के किनारे रहने वाले लोगों, दुकानदारों एवं राहगीरों में काफी खुश नजर आयी।

बिना नक्शा पास कराए बनवाया गोदाम, वीडीए ने किया सील

वाराणसी (परिवर्तन दूत)। शहर में अवैध रूप से कराए जा रहे निर्माण कार्यों पर वीडीए की कार्रवाई लगातार जारी है। विकास प्राधिकरण की टीम ने नगवां वार्ड में बिना नक्शा पास कराए बनवाए गए गोदाम को सील कर दिया। प्राधिकरण की ओर से नोटिस भेजे जाने के बाद निर्माणकर्ता की ओर से चोरी-छिपे व अवकाश के दिन काम कराया जा रहा था। इस पर प्रवर्तन दल ने कार्रवाई की। नगवा वार्ड में लल्ली सिंह, उदयभान सिंह, पिंटू सिंह धर्मपाल सिंह, बब्लू सिंह, अशोक सिंह, प्रतिभा देवी, विवेक सिंह आदि मौजा-खुशीपुर भदौर, रिंग रोड़ के समीप वार्ड-नगवॉ में बिना मानचित्र स्वीकृत कराए लगभग 120७120 के क्षेत्रफल में गोदाम का निर्माण पूर्ण कर लिया था। इसकी जानकारी होने पर प्राधिकरण की ओर से नोटिस भेजी गई। इसके बाद निर्माणकर्ता की ओ₹ से चोरी-छिपे फिनिशिंग का कार्य कराया जाने लगा। चोरी-छिपे निर्माण की जानकारी होने पर वीडीए प्रवर्तन दल सोमवार को मौके पर पहुंचा। वहीं अवैध रूप से कराए जा रहे निर्माण को सील कर दिया। भवन को पुलिस अभिरक्षा में सतत निगरानी के लिए सौंप दिया गया।

निरहुआ ने अखिलेश को दी चुनौती!

भाजपा सांसद ने कहा- सपा प्रमुख आजमगढ़ से चुनाव लड़कर दिखाएं

परिवर्तन दूत

वाराणसी (प.सं.)। यूपी में लोकसभा चुनाव को लेकर सरगर्मी बढ़ गई है। चुनाव को लेकर सभी राजनीतिक पार्टियों की निगाहें पीएम मोदी के संसदीय क्षेत्र वाराणसी पर टिकी हुई हैं। इसी बीच वाराणसी पहुंचे आजमगढ़ सांसद दिनेश लाल यादव ह्यनिरहुआह्न ने अखिलेश यादव पर बयान देकर सबको चौंका दिया है। निरहुआ ने अखिलेश यादव को खुली चुनौती दिया है। उन्होंने अखिलेश यादव पर यादवों का हक छिनने का आरोप लगाते हुए आजमगढ़ से लोकसभा चुनाव लड़ने की चुनौती दिया। वही दिनेश लाल ने तीसरी बार नरेंद्र मोदी को प्रधानमंत्री बनाने का दावा करते हुए कांग्रेस को समाप्त हुई पार्टी करार दिया है। दिनेश लाल यादव ने अखिलेश यादव के खुद को यादवों का नेता बताए जाने पर कहा कि यदि वह यादवों के नेता हैं, तो उन्हें यादवों के हित में सोचना चाहिए।

राहुल गांधी को समय पर बात समझ आ गई

निरहुआ ने राहुल गांधी पर भी निशाना साधा। राहुल गांधी के भारत जोड़ो न्याय यात्रा पर तंज करते हुए सांसद दिनेश लाल यादव ने कहा कि पहले राहुल गांधी से पूछा जाए कि भारत टूटा ही कब है। कांग्रेस पार्टी कांग्रेस पार्टी उत्तर प्रदेश में पूरी तरह से समाप्त हो चुकी है। राहुल गांधी के काशी विश्वनाथ मंदिर में दर्शन पर कटाक्ष करते हुए कहा कि प्रभु श्री राम ने राहुल गांधी को सद्बुद्धि दिया है और समय पर उनको बात समझ में आ गई है, पूरा विश्व प्रभु श्री राम के इर्द गिर्द है। प्रभु श्री राम के बहार इस दुनिया में कुछ भी नहीं है।

सीवर के पानी में बैठ सपा कार्यकर्ता ने जताया विरोध

वाराणसी (परिवर्तन दूत)। नगर निगम के सीरगोवर्धनपुर वार्ड नंबर 23 के गली की स्थिति इस समय बद से बदतर है। गली में सीवर का गंदा पानी बह रहा है और इसी रास्ते से लोग आने-जाने को विवश है। समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ता अमन यादव ने सीवर के गंदे पानी में बैठ कर सोमवार को विरोध जताया। आंदोलन के दौरान उन्होंने कहा कि इस मार्ग पर पिछले कई माह से सीवर का गंदा पानी बह रहा है। सीवर का पानी गली में बराबर बहता रहता है। इसी गंदे पानी से महिलाएं, बच्चे तथा अन्य लोग आने-जाने को मजबूर है। सीरगोवर्धनपुर में हर वर्ष तमाम वीवीआईपी दर्शन-पूजन करने को पहुंचते हैं। बावजूद इसके इस तरफ नगर निगम प्रशासन का ध्यान नहीं पहुंच रहा है।

रूंगटा केस में अगली सुनवाई 26 को

व्यापारी परिवार को बम से उड़ाने की धमकी का मामला

परिवर्तन दूत

वाराणसी (प.सं.)। कारोबारी महावीर प्रसाद रूंगटा और उनके परिवार को बम से उड़ाने की धमकी मामले में मुख्तार अंसारी की सजा पर प्रभारी जिला जज अनुतोष कुमार शर्मा की कोर्ट ने रोक लगा रखी है। सजा के खिलाफ दाखिल अपील पर कोर्ट ने सुनवाई के अगली तारीख 26 फरवरी तय कर दी है। जज ने निचली अदालत से रिकॉर्ड साक्ष्य समेत पूरी पत्रावली भी तलब की है। मुख्तार के अधिवक्ता श्रीनाथ त्रिपाठी की ओर से सजा के खिलाफ दाखिल अपील पर मुख्तार का पक्ष सुना जाएगा। विचारण न्यायालय ने मुख्तार अंसारी को साढ़े पांच साल कारावास की सजा सुनाई थी, मुख्तार को अब तक कुल 7 केस में सजा सुनाई जा चुकी है। भेलूपुर थाना क्षेत्र निवासी कोयला व्यवसायी नंद किशोर रूंगटा के भाई महावीर प्रसाद रूंगटा को धमकी देने के मामले में दो महीने पहले कोर्ट ने मुख्तार अंसारी को दोषी करार दिया था। कोर्ट के पीठासीन अधिकारी उज्जवल उपाध्याय ने मुख्तार अंसारी को साढ़े पांच साल की सजा सुनाई। साथ ही 10 हजार का जुर्माना भी लगाया था। मुख्तार अंसारी बांदा जेल में उम्रकैद की सजा काट रहा है। लेकिन रूंगटा केस में उसकी सजा पर प्रभारी जिला जज पुनर्विचार याचिका पर सोमवार को सुनवाई होनी थी लेकिन अब इसमें अगली डेट 26 दी गई है।

मुख्तार के वकील श्रीनाथ त्रिपाठी ने रखा तर्क- प्रभारी जिला जज अनुतोष कुमार शर्मा की कोर्ट में सजा के खिलाफ अपील करते हुए अधिवक्ता श्रीनाथ त्रिपाठी ने कहा था कि लोअर कोर्ट ने निर्णय सरसरी तौर पर दिया। महावीर प्रसाद के भाई नंद किशोर रूंगटा अपहरण कांड से सबंधित एक ही संव्यवहार में दो एफआईआर कहीं से उचित नहीं।

सैकड़ों लोगों ने व्यास तहखाने का किया दर्शन

वाराणसी (परिवर्तनत दूत)। श्री आदिविश्वेश्वर महादेव काशी धर्मालय मुक्ति न्यास की तरफ से सैकड़ों लोगों ने व्यास तहखाने के विग्रहों का दर्शन पूजन किया। इस मौके पर हर-हर महादेव के उद्घोष से व्यास तहखाना गुंजायमान रहा। ज्ञानवापी स्थिति व्यास तहखाना खुलने के बाद से दर्शन के लिए भक्तों का तांता लगा हुआ है। लाखों भक्त अब तक तहखाने में विराजी मूर्तियों के झांकी का दर्शन कर निकलते हैं। आज वादी समेत वकील जनों के साथ सैकड़ों लोग, जिसमें महिलाएं भी काफी बड़ी संख्या में शामिल रही, सभी ने दर्शन-पूजन किया।

श्री आदिविश्वेश्वर महादेव काशी धर्मालय मुक्ति न्यास की तरफ से मैदागिन पर काफी संख्या में लोग एकत्र हुए जिसका नेतृत्व कर रहे न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष संजीव चंद त्रिपाठी के के साथ सैकड़ों लोग मैदागिन से महादेव और श्रीराम के उद्घोष के साथ गेट नंबर चार पहुंचे, वहां पर सभी ने कतारबद्ध होकर झांकी दर्शन कर बाबा समेत नंदी का भी दर्शन किया। बाहर आने के बाद न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष ने बताया की यात्रा में लखनऊ एवं कानपुर से आदिविश्वेश्वर ज्ञानवापी काशी, श्रीकृष्ण जन्मभूमि मथुरा एवं मध्य प्रदेश स्थित धार जिले के भोजशाला मंदिर मुक्ति आंदोलन के केस से जुड़े मुख्य वादी एवं हाईकोर्ट की वरिष्ठ अधिवक्ता रंजना अग्निहोत्री, जन उद्घोष सेवा संस्थान के अध्यक्ष कुलदीप तिवारी के साथ अन्य आम जन काफी संख्या में शामिल हुए इस यात्रा में महिलाएं भी बड़ी संख्या में उपस्थित रही।

फूलों की सुगंध से महक उठे गांव

किसान कर रहे फूलों की खेती की तरफ रुख, हो रही अच्छी आमदनी

परिवर्तन दूत

वाराणसी (प.सं.)। फूलों की खेती करने वाले किसान इस समय गेंदा के तरह-तरह के फूल खेतों में लगाए हुए हैं। गेंदा के फूल इस समय खिल उठे हैं। बसंत में फूलों की क्यारियों से एक तरफ जहां गांव फूलों की खुशबू से भर उठे हैं, वहीं किसानों का मन भी फूलों की खेती की आमदनी से चहक उठा है। कई गांव में किसान गेहूं धान की पारंपरिक खेती की जगह तरह-तरह की खेती करने की ओर चल पड़े हैं। अब किस फूलों की खेती करके अपनी आमदनी बढ़ाने में लगा हुआ है।

वाराणसी के भदरासी, मातलदेई, मिल्कीचक, बैरवन, भीषमपुर आदि गांव में फूलों की खेती बहुतायत मात्रा में होती है। जहां से किसान फूल उत्पादित कर शहर की मंडियों में ले जाते हैं। बैरवनन में भी फूलों की खेती अधिकांश किसान करते हैं। फूलों की खेती करने वाले किसान हेमराज पटेल बताते हैं कि फूलों की खेती में रोग और व्याधि लगने की संभावना न के बराबर होती है। कम समय में फूल के पौधे तैयार हो जाते हैं। तीन से 4 महीने तक पौधे से फूल उत्पादित होते रहते हैं।

मंदिरों का शहर होने के कारण वाराणसी में फूलों की खपत भी हमेशा रहती है। किसान शिव शंकर बताते हैं कि वह कई वर्षों से गेंदे के फूल की खेती करते हैं। गेंदे की पीली और लाल प्रजाति लगाने से हमेशा फूल तैयार होते रहते हैं। जिसे बेचकर वे अपनी आय बढ़ाने में लगे हुए हैं।

परिवर्तन दूत

संपादकीय

चुनाव से पहले चंदे पर संकट

लोक सभा चुनाव से ठीक पहले सर्वोच्च अदालत ने 2018 की चुनावी बॉन्ड की योजना पर प्रतिबंध लगाकर ऐतिहासिक फैसला दिया है। शीर्ष अदालत का विश्वास है कि इस योजना से मतदाताओं के अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के सांविधानिक अधिकार के साथ सूचना के अधिकार का उल्लंघन हो रहा था। मुख्य न्यायाधीश जस्टिस डी.वाई. चंद्रचूड़घ् के नेतृत्व में पांच सदस्यीय संविधान पीठ का मानना था कि कोई भी मतदाता किसी भी राजनीतिक दल की विचारधारा और उसके प्रत्याशी की योग्यता के आधार पर वोट देने का निर्णय करता है। इस निर्णय तक पहुंचने के लिए उसे पता होना चाहिए कि किस राजनीतिक दल को कौन चंदा दे रहा हैं जिसके आधार पर वह तय कर सके कि इस चंदा देने के पीछे लाभ के बदले लाभ प्राप्त करने की नीयत तो नहीं है। कहीं ऐसा तो नहीं कि चंदा देने वाला व्यक्तिॉ व्यक्तियों का समूह या कार्पोरेट घराना सरकार की नीतियों को अपने पक्ष में करने के लिए प्रयासरत हो। इस संबंध में स्पष्ट राय बनाने के लिए मतदाता को किसी भी राजनीतिक दल को मिलने वाले चुनावी चंदे के स्रोत की जानकारी होना आवश्यक है। संविधान पीठ ने भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) को 12 अप्रैल 2019 से अब तक चुनावी बॉन्ड योजना के अंतर्गत खरीदे गए बॉन्ड्ॉ खरीदारों के नामॉ खरीद की तारीखॉ मूल्य वर्ग और उन्हें भुनाने वाले राजनीतिक दलों का विवरण 6 मार्च तक चुनाव आयोग को बताने का आदेश दिया है। अदालत ने आयोग को यह भी निर्देश दिया है कि एसबीआई से प्राप्त सभी जानकारी 13 मार्च तक अपनी वेबसाइट पर अपलोड़ करे। विपक्षी राजनीतिक दलों समेत कुछ पूर्व निर्वाचन अधिकारियों ने इस फैसले का स्वागत किया है। हालाकि चुनावी बॉन्ड की व्यवस्था को असंवैधानिक बताकर सुप्रीम कोर्ट ने भले ही पूरी चुनावी पारदर्शिता पर सवाल खड़े किए हैं, लेकिन चुनावी चंदे की यह व्यवस्था पहले भी कभी पारदर्शी नहीं रही थी। इसे लेकर सदैव सवाल उठते ही रहे हैं। इससे निपटने के लिए चुनाव आयोग ने चंदे से जुड़ी व्यवस्था में कई बार बड़े बदलाव भी किए लेकिन राजनीतिक दलों की स्थिति तू डाल-डाल और मैं पात-पात की तरह ही रही। सुप्रीम कोर्ट की पॉच सदस्यीय पीठ के इस फैसले से फिलहाल अब कोई भी पार्टी चुनावी बॉन्ड के जरिए चंदा नहीं ले पाएगी। कोई भी व्यक्ति, कंपनी या संस्था चुनावी बॉन्ड के जरिए राजनीतिक पार्टियों को चंदा नहीं दे पाएगी। इसके अलावा जिन राजनीतिक पार्टियों ने चुनावी बॉन्ड को कैश नहीं कराया है। उन्हें इन्हें बैंक में लौटाना पड़ेगा। यानि लोकसभ चुनाव से ठीक चंद दिन पहले इस तरह के फैसले से सबसे ज्यादा दिक्कत केन्द्र की सत्तासीन भाजपा को होना तय हे। ऐसा नही है कि अन्य राजनैतिक दलों को चंदा नही मिलता, लेकिन उनकों उनकी हैसियत के आधार पर चंदा मिलता है। क्षेत्रीय दलों तक को बहुत बड़ी राशि चंदे में मिलती है। हालांकि इस फैसले के बाद अब यह अनुमान लगाया जा रहा है कि चुनावी चंदे की पुरानी व्यवस्था फिर से लागू होगी। चुनावी चंदे की पुरानी व्यवस्था के तहत राजनीतिक दलों को पहले 20 हजार से ज्यादा मिलने वाले प्रत्येक चंदे का ब्यौरा चुनाव आयोग को अपने सालाना रिटर्न दाखिल करने के दौरान देना होता था। जिसे आयोग सार्वजनिक भी करता था। हालांकि इनमें राजनीतिक दल मिलने वाले चंदे का 80 फीसदी से ज्यादा राशि को 20 हजार से कम का होना बताते हुए उसका ब्यौरा नहीं देते थे। इसके बाद तो आयोग ने इस पूरी व्यवस्था को पारदर्शी बनाने के चलते ब्यौरा न देने वाली चंदे राशि की लिमिट को 20 हजार से घटाकर दो हजार कर दिया था। लेकिन राजनीतिक दल कहां चूकने वाले थे, उन्होंने फिर वहीं खेल किया और चुनाव आयोग को जो जानकारी दी, उनमें तहत उन्हें मिली कुल चंदे राशि का 80 फीसद से ज्यादा हिस्सा दो हजार से कम का बताया।देश के पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त ओ पी रावत के अनुसार चुनावी चंदे की पारदर्शिता को लेकर आयोग लगातार सक्रिय रहा है। इस दौरान आयोग ने कई बार राजनीतिक दलों से सवाल-जवाब भी किए है, लेकिन नियमों के चलते राजनीतिक दल इसे तय लिमिट से कम राशि का बताते हुए बच जाते थे। वहीं इससे ज्यादा राशि से जो चंदे मिलते थे, उनके नाम राजनीतिक दलों को से मिले ब्यौरे के आधार पर सार्वजनिक किया जाता था। गौरतलब है कि 2018 में चुनावी ब्रांड की व्यवस्था लागू किए जाने से पहले राजनीतिक दल सालाना रिटर्न के जरिए तय लिमिट से अधिक राशि के मिले सभी चंदे का ब्यौरा देते थे। बीते पांच-छह साल में इलेक्टोरल बॉन्ड के कारण कुछ पार्टियों को नुकसान हुआ तो कुछ को काफी फायदा हुआ। वो सत्ताधारी दल, जिनके पास कुछ देने की ताकत होती है, उन्हें इसका फायदा ज्यादा हुआ। ऐसे में यह कहना कि केवल भाजपा को इससे चंदा मिला है, यह सही नहीं है। एक-एक राज्य की पार्टियों को भी काफी चंदा मिला है। हमारे देश में चुनाव का खर्च धीरे-धीरे बढ़ता गया है। चुनाव आयोग ने भी खर्च की सीमा बढ़ाते-बढ़ाते चालीस लाख कर दी है। वर्तमान समय में आम आदमी चुनाव नहीं लड़ सकता है। इसमें सौ फीसदी सच्चाई है कि जो कॉर्पोरेट हैं, जो कंपनियां हैं, वो नहीं चाहती हैं कि उनका नाम प्रकट हो। उन्हें लगता है कि अगर यह सामने आ गया है कि हमने कांग्रेस को ज्यादा चंदा दिया, भाजपा को कम और भाजपा सत्ता में आ गई तो मुझे इसका नुकसान होगा। लंबे समय से चुनावी चंदे पर चर्चा होती है। यह एक व्यावहारिक समस्या है। संवैधानिक तरीका चंदे का क्या होगा, यह बताना भी आवश्यक हो जाता है। आगे चुनाव लड़ने के लिए पार्टियां किस तरह चंदा लेंगी यह बड़ा प्रश्न खड़ा हुआ है।इस बॉत से इनकार नही किया जा सकता कि हम एक बदलते-विकसित होते समाज में हैं।

राजनीतिक लक्ष्य हासिल करने के लिए किसानों की भावनाएं भड़काई गयी हैं

उमेश चतुर्वेदी

खेती-किसानी की संस्कृति वाले अपने देश की विडंबना कहेंगे या फिर कुछ और...गुलाम भारत में बदहाल रही खेती-किसानी को लेकर आजाद भारत में भी क्रांतिकारी बदलाव नहीं आ पाया। राजनीति का खेल कहें या शासन व्यवस्था की नाकामी, आजाद भारत के सारे चुनावों में किसानों की स्थिति मुद्दा रही। वामपंथी धारा की राजनीति हो या राष्ट्रवादी धारा की, समाजवादी हों या मध्यमार्गी, हर राजनीतिक दल, सभी चुनावों में किसान, मजदूर और गरीब को ही मुद्दा बनाता रहा। लेकिन आजादी के पचहत्तर साल बाद भी संपूर्ण भारत भूमि को वैसी चमक हासिल नहीं हो पाई, जैसी औद्योगिक क्रांति के बाद के महज डेढ़ सौ सालों में ही यूरोप ने हासिल कर लिया। बेशक भारत आज दुनिया की पांचवीं बड़ी अर्थव्यवस्था बन चुका है। दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर वह तेजी से अग्रसर भी है। लेकिन इस आर्थिक विकास का आनुपातिक हिस्सा गरीबों, मजदूरों और किसानों को नहीं मिल पाया है। मौजूदा किसान आंदोलन को लेकर अगर देश के एक बड़े वर्ग में सहानुभूति है तो इसकी एक बड़ी वजह हमारी व्यवस्था की नाकामी से उपजा असंतुलन ही है। किसानों को लेकर बनी सोच का ही नतीजा है कि दो साल पहले हुए किसान आंदोलन की हिंसा और हठधर्मिता के बावजूद देश का एक बड़ा हिस्सा उनके प्रति हमदर्दी रखता रहा है।स्वाधीन भारत में कई किसान आंदोलन हुए। बेशक हमारा देश अब औद्योगिक और सेवा क्षेत्र का बड़ा हब बनता जा रहा है, लेकिन अब भी देश की बड़ी आबादी खेती-किसानी पर निर्भर है। एक आंकड़े के मुताबिक अब भी ग्रामीण आबादी का 54 फीसद हिस्सा सिर्फ खेती और किसानी पर ही निर्भर है। अपना देश विशाल है और स्थानीय स्तर पर लोगों की अपनी-अपनी समस्याएं भी रहती ही हैं। स्वाधीन भारत ने जिस ब्यूरोक्रेसी को अपनाया है, कई बार उसकी जड़ सोच की वजह से भी स्थानीय स्तर पर समस्याएं उपजती ही रहती हैं। उसकी वजह से स्थानीय स्तर पर हर समय देश के किसी ना किसी

हिस्से में किसान आंदोलन होते ही रहते हैं। लेकिन हाल के वर्षों में बड़े किसान आंदोलन अगर हुए हैं, उनमें प्रमुख रूप से तीन-चार के ही नाम गिनाए जा सकते हैं। पिछली सदी के अस्सी के दशक में भारतीय किसान यूनियन नेता महेंद्र सिंह टिकैत की अगुआई में हुआ आंदोलन इनमें सबसे ज्यादा उल्लेखनीय रहा है। शायद यह पहला मौका था, जब किसानों ने दिल्ली के वोट क्लब को घेर लिया था। जब नरसिंह राव ने उदारीकरण कीनीतियां स्वीकार कीं, भारत जब विश्व व्यापार संगठन का हिस्सा बना, तब शेतकारी संगठन जैसे किसान संगठनों की अगुआई में खेती में विदेशी हस्तक्षेप और भारतीयता की परंपरा को खत्म करने की आशंकाओं के खिलाफ पिछली सदी के आखिरी दशक में लंबा आंदोलन चला।हरियाणा में बिजली बिल माफ करने की मांग को लेकर हुए आंदोलन को भी इस सूची में जोड़ सकते हैं। लेकिन अतीत के ये आंदोलन कभी हिंसक नहीं रहे। अगर किंचित हिंसा हुई भी तो उसके निशाने पर सार्वजनिक स्थल आदि ही रहे। लेकिन पिछले दो साल से हो रहे किसान आंदोलन को लेकर ऐसा नहीं कहा जा सकता। दो साल पहले साल 2021 की 26 जनवरी के दिन दिल्ली में जिस तरह अराजकता फैलाई गई, उसके बाद से सामान्य सहानुभूति के पात्र रहे किसानों को लेकर लोक विश्वास में दरार पड़ी। दिल्ली में नांगलोई के पास किसानों ने तब जिस तरह सामान्य नागरिकों को निशाना बनाया था, उससे किसान संगठनों के आंदोलन को लेकर लोगों की सोच बदली। रही-सही कसर पूरी कर दी 26 जनवरी 2021 के दिन हुई अराजकता ने पूरी कर दी।लाल किले पर कब्जे को लेकर हुई किसान हिंसा के बाद तो किसान आंदोलन को विदेश प्रेरित भारत विरोधी आंदोलन मानने वालों की संख्या में बढ़ोत्तरी हुई। किसान संगठनों को यह मान लेना चाहिए कि भारतीय समाज के शहरी हिस्से के सरोकार खेती-किसानी से पहले वाली पीढ़ी की तरह रागात्मक नहीं रहे। शहरी समाज की अपनी चुनौतियां हैं और उनका जीवन संघर्ष भी अपनी तरह का है। दिल्ली जैसे शहर में नौकरी करने वाली बड़ी जनसंख्या दूर-दराज के इलाकों में रहती है। पिछले किसान आंदोलन के दौरान महीनों तक चली दिल्ली की घेरेबंदी के चलते उत्तर प्रदेश और हरियाणा की ओर से आने-जाने वाले लोगों को रोजाना जो दिक्कतें झेलनी पड़ीं, उसके बाद ही किसान आंदोलन को लेकर शहरी लोगों का नजरिया पूरी तरह बदल गया। शायद यही वजह है कि इस बार जारी आंदोलन को लेकर किसानों को लेकर पारंपरिक सहानुभूति नहीं दिख रही। इस आंदोलन को लेकर यह मानने वालों की भी कमी नहीं है कि इसके पीछे विदेशी ताकतें हैं और राजनीतिक स्तर पर इसे विपक्षी दलों की ओर हवा दी जा रही है। ऐन चुनावों से ठीक पहले आंदोलन का खड़ा होना, उसे कांग्रेस के वरिष्ठ नेता राहुल गांधी द्वारा बार-बार सहयोग देना, ममता बनर्जी और तेजस्वी यादव द्वारा इस आंदोलन के बहाने सीधे प्रधानमंत्री मोदी पर कटाक्ष करना लोगों की इस सोच को बढ़ावा ही दे रही है।किसान संगठनों के मौजूदा आंदोलन की प्रमुख मांग है, स्वामीनाथन समिति की सिफारिशों को लागू करना है। इसी सिफारिश के आधार पर सभी फसलों के लिए एमएसपी घोषित करने की मांग किसान संगठन कर रहे हैं। न्याय यात्रा पर निकले राहुल गांधी अपनी हर सभाओं में इसका समर्थन कर रहे हैं। लेकिन सवाल यह है कि स्वामीनाथन समिति ने अपनी रिपोर्ट साल 2006 में दी थी। उसके पूरे आठ साल बाद तक केंद्र में कांग्रेस की अगुआई वाली ही सरकार थी। राहुल गांधी तब भी संसद के सदस्य रहे। तब किसानों को यह सहूलियत देने की राहुल और उनकी कांग्रेस को क्यों नहीं सूझा? आज के आंकड़ों पर ही भरोसा करें तो अगर सभी फसलों पर एमएसपी घोषित कर दी जाए तो भारत सरकार पर करीब 71 लाख करोड़ का दबाव बढ़ेगा।जबकि भारत का कुल बजट ही 47 लाख करोड़ का ही है। सवाल यह है कि अगर एमएसपी की मांग मान भी ली गई तो भारत 24 लाख करोड़ रूपए कहां से लाएगा। साफ है कि स्वामीनाथन समिति की सिफारिश को पूरी तरह लागू कर पाना ना तो कांग्रेस की अगुआई वाली सरकार के वश की बात थी और ना ही मोदी सरकार के लिए संभव है। चूंकि आज की राजनीति का लक्ष्य सिर्फ और सिर्फ सत्ता प्राप्ति रह गया है। इसलिए हर राजनीतिक दल का सच अपना-अपना हो गया है। वह सार्वभौम या मूल सत्य पर नहीं टिका रहता। यही वजह है कि कांग्रेस किसानों को अपने दौर का सच नहीं बता रही है। उस सरकार में शामिल ममता और लालू यादव को भी यह सच पता है। लेकिन वे भी इसके मुताबिक अपनी राय ना रखते हुए सिर्फ और सिर्फ मौजूदा केंद्र सरकार को ही किसानों की बदहाली के लिए जिम्मेदार बता रहे हैं।अतीत का किसान आंदोलन सीएए के खिलाफ उभरे आंदोलन के ठीक बाद आया था। तब दोनों ही आंदोलनों का स्वरूप और उसमें सक्रिय लोग समान थे। बाद में इन आंदोलनों की फंडिंग पर भी सवाल उठे। लाल किला कांड के बाद हुई जांच और गिरफ्तारियों से भी पता चला कि विदेशी ताकतें भी इन आंदोलनों के बहाने देश को अस्थिर करने की कोशिश में लगी रहीं। इसी वजह से इस बार के किसान आंदोलन को लेकर देश में गहरी सहानुभूति नहीं दिख रही। देश का एक बड़ा तबका मानने लगा है कि इस आंदोलन का एक मात्र मकसद विपक्षी दलों के लिए आगामी चुनावों में सियासी पिच तैयार करना है। ताकि वे मोदी विरोध में सफल बल्लेबाजी कर सकें। लोग यह भी मानने लगे हैं कि इस आंदोलन का मकसद दिल्ली को बंधक बनाकर देश की छवि भी बिगाड़ना है। यह बात और है कि किसानों की भावना इस तरह से भड़काई गई है

प्रतिभावान लोगों को वरीयता दी जायेगी तभी भारत से ब्रेन ड्रेन को कम किया जा सकता है

प्रह्लाद सबनानी

अभी हाल ही में इजराइल ने हमास के साथ छिड़े युद्ध के बाद भारत से एक लाख कामगारों को इजराइल भेजने का आग्रह किया है क्योंकि लगभग इतनी ही संख्या में फिलिस्तीन के नागरिक इजराइल में विभिन्न क्षेत्रों में कार्य कर रहे थे। हालांकि, इजराइल द्वारा भारत से मांगे गए एक लाख कामगारों की संख्या में इंजीनियर भी शामिल हैं। इसी प्रकार ताईवान ने भी घोषणा की थी कि उसे लगभग एक लाख भारतीय इंजीनियरों की आवश्यकता है। इसके पूर्व जापान ने भी लगभग 2 वर्ष पूर्व घोषणा की थी कि वह 2 लाख भारतीय इंजीनियरों की भर्ती जापान में विभिन्न कम्पनियों में करेगा। एक अन्य समाचार के अनुसार, माक्रोसॉफ्ट के मुख्य कार्यपालन अधिकारी सत्या नंडेला एवं गूगल के मुख्य कार्यपालन अधिकार सुंदर पिचाई भी प्रयास कर रहे हैं कि इनकी कम्पनियों में आर्टिफिशियल इंटेलिजेन्स को बढ़ावा देने के उद्देश्य से किस प्रकार भारतीय इंजीनियरों की भर्ती बढ़ाई जाए। अमेरिका एवं कनाडा आदि देशों में पहिले से ही लगातार कुछ वर्षों से इन देशों की बहुराष्ट्रीय कम्पनियों में लाखों भारतीय इंजीनियरों की भर्ती जारी है। इस प्रकार, यह कहा जा सकता है कि भारत आज पूरे विश्व में इंजीनियरों की आपूर्ति का बहुत बड़ा केंद्र बन गया है अर्थात एक तरह से भारत पूरे विश्व के लिए इंजीनियर तैयार कर रहा है। दूसरे, हाल ही में एक रोचक जानकारी सामने आई है कि रूस जैसे कुछ देशों की महिलाएं पति के रूप में भारतीय पुरुषों के प्रति आकर्षित हो रही हैं। क्योंकि, भारतीय पुरुष तलाक जैसी कुरीतियों से मीलों दूर दिखाई देते हैं। भारतीय पुरुष एक बार शादी के बाद पूरे जीवन भर अपनी पत्नी को सुखी जीवन प्रदान करते हैं। यह भारतीय सनातन संस्कृति का प्रभाव है। परंतु, विश्व के कई विकसित देशों में सामाजिक तानाबाना छिन्न भिन्न हो चुका है। इन देशों में तलाक की दर 50 प्रतिशत से भी अधिक हो गई है एवं अमेरिका में तो लगभग 60 प्रतिशत बच्चों को अपने पिता के बारे में जानकारी ही नहीं रहती है। इन विपरीत परिस्थितियों के बीच कुल मिलाकर इन देशों में बच्चों का मानसिक विकास प्रभावित हो रहा है एवं इन देशों में बच्चे गणित एवं विज्ञान जैसे विषयों में गहरी रुचि नहीं ले पा रहे हैं। अतः इन देशों में महिलाएं बहुत अधिक परेशानी में दिखाई दे रही हैं एवं वे भारतीय पुरुषों को अपने पति के रूप में स्वीकार करने को लालायित दिखाई दे रही हैं। आज 1.40 करोड़ भारतीय मूल के नागरिक विभिन्न देशों में रह रहे हैं, जो इन देशों की नागरिकता प्राप्त करने का इंतजार कर रहे हैं एवं इसके अतिरिक्त 1.80 करोड़ भारतीय मूल के नागरिक इन देशों के स्थायी नागरिक बन चुके हैं। अतः कुल मिलाकर 3.20 करोड़ भारतीय मूल के नागरिक आज विश्व के अन्य देशों में निवास कर रहे हैं। भारतीय मूल के नागरिकों का यह वर्ग न केवल इन देशों में भारतीय सनातन संस्कृति को फैलाने में अपनी अहम भूमिका निभा रहा है बल्कि अपनी बचतों को भारत में भेजकर भारत में अपना पूंजी निवेश भी बढ़ा रहा हैं। पिछले वर्ष, भारतीय मूल के इन नागरिकों द्वारा 10,000 करोड़ अमेरिकी डॉलर से अधिक की राशि भारत में भेजी गई थी, जो पूरे विश्व में किसी भी देश में भेजी गई राशि में सबसे अधिक है। भारतीय मूल के नागरिक अपने संस्कारों के चलते इन देशों में शीघ्र ही अपना विशेष स्थान बना लेते हैं एवं अपनी मेहनत के बल पर सम्पन्नता भी प्राप्त कर लेते हैं। आज भारतीय मूल के नागरिक कई देशों में राजनैतिक क्षेत्र में भी बहुत आगे आ गए हैं। अमेरिका की उपराष्ट्रपति कमला हेरिस और ब्रिटेन के प्रधानमंत्री ऋषि सुनक सहित कई देशों के प्रमुख आज भारतीय मूल के नागरिक ही हैं। जब विशेष रूप से विकसित देशों में भारत से डॉक्टर, इंजीनियर एवं प्रबंधन के क्षेत्र में विशेषज्ञ भारत से बाहर जाते हैं तो इन विशिष्ट श्रेणी में विशेषज्ञों की भारत में कमी होना स्वाभाविक है। अब तो ऐसा आभास होने लगा है कि पूरे विश्व के लिए विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञ जैसे भारत तैयार कर रहा है। यह विशेषज्ञ विभिन्न देशों में जाकर इन देशों की कम्पनियों को मजबूती प्रदान करते हैं एवं यह कम्पनियां पूरे विश्व में अपने व्यापार को फैलाने में सफल हो रही हैं। अब समय आ गया है कि भारतीय कम्पनियां भी बहुराष्ट्रीय कम्पनियां बनें एवं पूरे विश्व में अपने व्यापार को फैलाएं। इस दृष्टि से भारत की इन कम्पनियों को विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों की आवश्यकता होगी। यदि भारतीय कम्पनियां विश्व के अन्य देशों में अपने पैर पसरना शुरू करें तो हो सकता है इन क्षेत्रों में पूर्व से ही कार्य कर रही विकसित देशों की बहुराष्ट्रीय कम्पनियों से भारतीय कम्पनियों को गला काट प्रतिस्पर्धा करनी पड़े। जबकि विकसित देशों की बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को वैश्विक स्तर पर आगे बढ़ाने में भारतीय विशेषज्ञों का ही अधिक योगदान रहा है। विदेश में रह रहे भारतीय विशेषज्ञों एवं भारत में रह रहे भारतीय विशेषज्ञों की आपस में प्रतिस्पर्धा होगी। इस प्रतिस्पर्धा में सम्भव है कि भारतीय कम्पनियां विदेशी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के आगे प्रतिस्पर्धा में टिक ही न सकें।दूसरे, बदले हुए आर्थिक परिदृश्य में आज भारत में आर्थिक विकास की रफ्तार बहुत तेज हो चुकी है, जबकि विश्व के अन्य देशों, विशेष रूप से विकसित देशों में, आर्थिक विकास की रफ्तार लगातार कम बनी हुई है। भारत आज विश्व की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है एवं अगले लगभग 5 वर्षों के दौरान भारत विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाएगा, ऐसी सम्भावना विश्व की वित्तीय एवं आर्थिक संस्थाएं व्यक्त कर रही हैं। अतः आगे आने वाले समय में भारत में भी विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों की अधिक आवश्यकता महसूस होने लगेगी। इस प्रकार, आज भारत में इस विषय पर गम्भीरता से विचार किए जाने की आवश्यकता है कि भारत से ब्रेन ड्रेन को कम करने के उद्देश्य से क्या उपाय किए जाने चाहिए। यदि भारत से ब्रेन ड्रेन पर अंकुश लगाने में सफलता मिलती है तो सम्भव है कि विदेशी बहुराष्ट्रीय कम्पनियां भारत में ही अपनी विनिर्माण इकाईयां स्थापित करें, क्योंकि इन बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को इनके अपने देशों में भारतीय विशेषज्ञ इंजीनियरों की कमी महसूस होने लगेगी। भारत में ही विनिर्माण इकाईयों के स्थापित होने से न केवल भारत में रोजगार के अधिक अवसर निर्मित होंगे बल्कि इन कम्पनियों का विदेशी व्यापार भी भारत के माध्यम से होने लगेगा और भारत के कर संग्रहण में भी अपार वृद्धि होगी। कुल मिलाकर, भारत में और अधिक खुशहाली फैलाने का रास्ता साफ होगा। भारत से ब्रेन ड्रेन को एकदम बंद तो नहीं किया जा सकता है परंतु कुछ क्षेत्रों जिनमें भारत को पूर्व में ही महारत हासिल हैं ,

तेजस्वी-राहुल की दोस्ती

भारत की राजनीति में बिहार का विशिष्ट स्थान रहा है। यह राज्य समूचे उत्तर भारत की राजनीति को इस प्रकार प्रभावित करता रहा है कि यहां से उठी विचारों की चिंगारी अन्य राज्यों में शोले का रूप लेकर भड़कती रही है। बिहार की यह भी सिफत रही है कि यहां से सत्ता विरोधी विचारों का प्रतिपादन हमेशा यथास्थिति को तोड़ने के लेकर होता रहा है परन्तु हम देख रहे हैं कि वर्तमान में विपक्षी इंडिया गठबन्धन की क्या हालत है और इसके घटक दलों में सीटों के बंटवारे को लेकर लगातार मनमुटाव बना हुआ है। इससे यही आभास हो रहा है कि बारी-बारी से घटक दल इसे छोड़ने की मुद्रा में हैं। ऐसे माहौल में यदि बिहार के प्रमुख विपक्षी नेता व पूर्व उप मुख्यमन्त्री श्री तेजस्वी यादव कांग्रेस नेता राहुल गांधी का हाथ थाम कर इंडिया गठबन्धन की एकता का परिचय देते हैं तो इसे निश्चित रूप से सिद्धान्तवादी राजनीति का परिचायक माना जायेगा। जब कांग्रेस से ही नेता दल बदल कर एक ओर भाजपा में जा रहे हैं तो श्री यादव का राहुल गांधी के साथ खड़ा होना बताता है कि राजनीति पूरी तरह से सिद्धान्तहीन व अवसरवादी नहीं हुई है। तेजस्वी लालू जी के पुत्र हैं और लालू जी ने जब से 80 के दशक से अपनी सत्ता की राजनीति शुरू की है तब से लेकर आज तक उन्होंने कभी भी कांग्रेस का साथ नहीं छोड़ा है और वह भाजपा के विरोध में खड़े रहे हैं। यही स्थिति तेजस्वी की भी फिलहाल लगती है। मगर इसके साथ ही बिहार में नीतीश बाबू जैसे नेता भी हैं जो रात को कांग्रेस का नाम लेकर सोते हैं और सवेरे भाजपा के पहलू में दिखाई पड़ते हैं। कल तक नीतीश बाबू इंडिया गठबन्धन का संयोजक होने का ख्वाब देख रहे थे मगर आज भाजपा के साथ मिलकर सरकार चला रहे हैं। ऐसा भी केवल बिहार में ही होता है कि नीतीश बाबू जैसा नेता 18 साल में नौ बार मुख्यमन्त्री पद की शपथ लेता है और वह भी ग3ठबन्धन अदल-बदल कर। इस प्रकार के करामाती नेता भी बिहार में ही हो सकते हैं। मगर असली सवाल यह है कि बिहार में राहुल गांधी के साथ उनकी भारत जोड़ो यात्रा में जिस प्रकार तेजस्वी यादव ने शिरकत की उससे कांग्रेस व तेजस्वी यादव की पार्टी राष्ट्रीय जनता दल के कार्यकर्ताओं में यह सन्देश चला गया कि ये दोनों पार्टियां मिलकर आगामी लोकसभा चुनावों में भाजपा व नीतीश बाबू की पार्टी का मुकाबला करेंगी। इससे एक मायने में इंडिया गठबन्धन को सीटों के बंटवारे को लेकर सुविधा ही होगी क्योंकि राज्य की 40 लोकसभा सीटों में से 17 भाजपा के पास हैं और 16 नीतीश बाबू की पार्टी जनता दल(यू) के पास। नीतीश बाबू यदि इंडिया गठबन्धन में रहते तो कम से कम 25 सीटें मांगते क्योंकि राज्य में लालू जी की पार्टी राजद का कोई भी सांसद पिछले चुनावों में नहीं चुना गया था। जबकि कांग्रेस का केवल एक ही सांसद चुना गया था। अब विपक्ष में कांग्रेस, राजद व वामपंथी दल रह गये हैं। नीतीश बाबू और भाजपा के एनडीए गठबन्धन में स्व. पासवान की पार्टी लोजपा भी शामिल है। पिछली बार इसके छह सांसद चुने गये थे। अब यह पार्टी चाचा पशुपति पारस व भतीजे चिराग पासवान में बंट चुकी है। इस वजह से सीटों के बंटवारे को लेकर एनडीए में ज्यादा सिरफुटव्वल हो सकता है। एनडीए से विपक्ष का सभी 40 सीटों पर सीधे आमने-सामने मुकाबला होगा। इस लिहाज से राहुल व तेजस्वी की दोस्ती बहुत मायने रखती है। क्योंकि पिछले 2020 के बिहार के विधानसभा चुनावों में विपक्ष ने तेजस्वी के नेतृत्व में ही चुनाव लड़ा था। इन चुनावों में नीतीश बाबू भाजपा के साथ गठबन्धन बनाकर चुनाव लड़े थे। तब हालांकि भाजपा गठबन्धन को मामूली बहुमत प्राप्त हो गया था परन्तु पूरे राज्य में एनडीए को तेजस्वी के गठबन्धन से मात्र 12 हजार वोट ही अधिक मिले थे। इसलिए लोकसभा चुनावों में नीतीश बाबू के भाजपा के खेमे में जाने के बावजूद बहुत कड़ा मुकाबला हो सकता है और ऊंट किसी भी करवट बैठ सकता है। तेजस्वी और राहुल दोनों ने जिस प्रकार नीतीश बाबू को आड़े हाथों लिया है उससे यही लगता है कि बिहार में वैचारिक स्तर पर लोकसभा में महासंग्राम होगा। मगर एक सवाल यह भी रह-रह कर उठ जाता है कि जिस प्रकार इंडिया गठबन्धन भरभरा सा दिखता है उसमें यह दोस्ती कितनी मजबूत रह सकेगी? राहुल गांधी की जीप को जिस तरह तेजस्वी ने बिहार के बक्सर में खुद चलाया उससे दोस्ती तो पक्की मालूम पड़ती है मगर यह दोस्ती वैचारिक स्तर पर ज्यादा है। डा. लोहिया की कर्मभूमि भी बिहार रहा है और वह कहा करते थे कि विचारों का रंग खून से गाढ़ा होता है। अब देखना होगा कि क्या तेजस्वी-राहुल की दोस्ती का रंग उत्तर प्रदेश में भी अखिलेश व राहुल गांधी पर चढेघा? राहुल जी अब उत्तर प्रदेश में प्रवेश कर चुके हैं।

आज का राशिफल

मेषः- किसी श्रेष्ठजन के प्यार से मन प्रसन्न होगा। किसी की कटु वाणी मन को दुखित कर सकती है। उच्च महत्वकांक्षाएं व्यावसायिक क्षेत्र में अधिक परिश्रम के लिए प्रेरित करेंगी। आलस्य कतई न करें।

बृषभ :- भौतिक महत्वकांक्षाएं अभाव का एहसास कराएंगी। परिजनों से कुछ भावनात्मक अपेक्षाएं कष्टकारी हो सकती हैं। अच्छी योजनाओ द्वारा महत्वपूर्ण कायरें को समयानुकूल पूर्ण करेंगे।

मिथुन :- भावनाओं पर नियंतग्ररख अपने दायित्वों के प्रति सजग होना प्रगति का सूचक है। बचकाना स्वभाव महत्वपूर्ण क्षेत्रों में एकाग्रता का अभाव पैदा करेगा। शिक्षा-प्रतियोगिता में परिश्रम का लाभ मिलेगा।

कर्क :- महत्वपूर्ण जिम्मेदारियां अपनी पूर्ति हेतु मन पर दबाव बनाएंगी। कुछ नयी आकांक्षाएं मन पर प्रभावी होंगी। भौतिक-सुख साधन में व्यय संभव। परिजनों से किसी प्रकार की शिकायत पर खुलकर बात करें।

सिंह :- भावना से उद्वेलित मन निकट संबंधों के सुख-दुख के प्रति चिंतित होगा। पूर्वाग्रहवश संबंधियों के प्रति नकारात्मकता को न पालें। भविष्य संबंधी कुछ चिंताएं मन में नकारात्नक विचार ला सकती हैं।

कन्याः- नये संबंधों में प्रगाढ़ता बढ़ेगी। पारिवारिक वातावरण सुखद व उत्साहपूर्ण होगा। जीविका क्षेत्र में मन आर्थिक सुदृढ़ता हेतु प्रयत्नशील होगा। रोजगार में व्यस्तता रहेगी किंतु जरूरी कार्य समय से पूर्ण करें।

तुलाः- कुछ नयी अभिलाषाएं आपको उत्साहित करेंगी। शासन-सत्ता की दिशा में केंद्रित लोगों को लाभ के अवसर प्राप्त होंगे। किसी महत्वपूर्ण दायित्व की पूर्ति हेतु समुचित व्यवस्था हेतु मन चिंतित होगा।

वृश्चिकः- किसी पुराने संबंध के प्रति विशेष निकटता की अनुभूति करेंगे। क्षमता से अधिक जिम्मेदारियां अर्थिक सुदृढ़ता हेतु प्रेरित करेंगी। भावनाप्रधान मन रिश्तों से सहज ही प्रभावित हो जाता है।

धनुः- रोजगार क्षेत्र में आपकी महत्वपूर्ण योजनाएं सार्थक होती हुई नजर आएंगी। श्रेष्ठजनों से नजदीकियां पैदा होंगी। व्यावसायिक यात्राएं करनी पड़ सकती हैं। कुछ प्रबल इच्छाएं आपको उद्वेलित करेंगी।

मकरः- सामाजिक गतिविधियों में आपकी क्रियाशीलता बढ़ेगी। अच्छी भावनात्मक अभिव्यक्ति से संबंधों में मधुरता बढ़ेगी। राजनीति से जुड़े लोगों के लिए समय अनुकूल रहेगा।

कुंभः- पुरानी समस्याओं को हल कर सुख की अनुभूति करेंगे। शासन-सत्ता से जुड़े लोगों को लाभ के अच्छे अवसर प्राप्त होंगे। पूजा-पाठ में पूरा दिन मन केंद्रित होगा। नये दायित्वों की पूर्ति होगी।

मीनः- पिता के सहयोग से मुश्किल दिनों में राहत मिलेगी। बालसुलभता व असंयमित शब्दों का प्रयोग संबंधों में कटुता लाएगा। आकस्मिक नई आशंकाओं से प्रभावित मन कोई गलत निर्णय ले सकता है।

मांगों को लेकर किसान यूनियन ने दिया पत्रक

खण्ड विकास अधिकारी ने कहा मौके का निरीक्षण कर उचित कार्रवाई की जायेगी

परिवर्तन दूत

चंदौली। जिले के सकलडीहा खंड विकास अधिकारी कार्यालय पर सोमवार को क्षेत्र के विभिन्न समस्याओं को लेकर भारतीय किसान मजदूर संघ यूनियन के पदाधिकारी द्वारा खंड विकास अधिकारी को पत्रक सौंपा गया। जहां इस पत्र में खंड विकास अधिकारी कि कुमार सिंह से अनुरोध किया गया कि क्षेत्र में डेढ़ावल मार्ग से काली मंदिर के सामने से बाबूराम के घर तक 180 मीटर इंटरलाकिंग, डेढ़गावा ओनावल खड़ंजा से रैपुरा मुडेहरा मार्ग तक 300 मीटर इंटरलाकिंग तथा ग्राम सभा पीथापुर में प्यारे राजभर के घर से जोखन राजभर के चक तक 350 मीटर

लंबी नाली निर्माण कार्य कराया जाना अति आवश्यक है। वही पत्र प्राप्त होने के पश्चात खंड विकास अधिकारी कृष्ण कुमार सिंह ने लोगों को अस्वस्थ किया कि शीघ्र मौके का निरीक्षण करते हुए उचित कार्यवाही की जाएगी। चर्चा के दौरान युवा मंडल अध्यक्ष मनमन सिंह ने बताया कि सकलडीहा ब्लॉक अंतर्गत ग्राम सभा डेढ़ावल मार्ग से काली मंदिर के सामने से बाबूराम के घर तक 180 मीटर इंटरलाकिंग, डेढ़गावा ओनावल खड़ंजा से रैपुरा मुडेहरा मार्ग तक 300 मीटर इंटरलाकिंग तथा ग्राम सभा पीथापुर में प्यारे राजभर के घर से जोखन राजभर के चक तक 350 मीटर लंबी नाली निर्माण कार्य कराने की मांग किया गया है।

जिसपर खंड विकास अधिकारी द्वारा जल्द ही जाँच का कराकर समस्या निवारण कराने का आश्वासन दिया है। पत्रक देने वालों मे मंडल अध्यक्ष मनमन सिंह, जिलाध्यक्ष चन्दौली शेषनाथ यादव, मण्डल सलाहकार वाराणसी पिन्टू पाल, सकलडीहा तहसील संगठन मंत्री कृष्ण कुमार यादव, संगठन मंत्री अखिलेश यादव उर्फ गोलू सहित अन्य सदस्य मौजूद रहे।

होम डिलीवरी के नाम पर ठगे जा रहे है उपभोक्ता

भदोही परिवर्तन दूत ब्यूरो। गोपीगंज नगर में इन दिनों निर्धारित मूल्य से ज्यादा पैसा गैस उपभोक्ताओं से वसूल किया जा रहा है' गैस एजेंसी संचालक वितरको के माध्यम से लगातार उपभोक्ताओं का शोषण कर जा रहे है। शासन प्रशासन की ओर से होम डिलीवरी के लिए 955 रुपया प्रति सिलेंडर रेट निर्धारित है' इसके बावजूद भी नगर में भ्रमण कर होम डिलीवरी करने वाले ठेला व आटो चालक सप्लाई देने के बाद निर्धारित मूल्य से 25 से 30 रूपया ज्यादा वसूल रहे हैं' दाम ज्यादा देने के बावजूद सिलिडर गैस भी कम मिल रहा है' उपभोक्ता डोर टू डोर होम डिलीवरी करने वालो से निर्धारित मूल्य पर गैस वितरण करने तथा गैस में घटतौली बंद कराए जाने की मांग की है'कुछ वर्ष पूर्व डिलीवरी मैन कांटा लेकर अपने साथ चलते थे और नापतोल कर डिलीवरी देते थे लेकिन इधर काफी दिनों से उनकी यह प्रक्रिया बंद हो गई है जिससे उपभोक्ता को मनमानी लूट रहे हैं।

सबको शिक्षा एक समान, गरीब हो या धनवान

सम्पूर्ण भागीदारी यात्रा में बोले बाबू सिंह कुशवाहा

परिवर्तन दूत

चंदौली। जन अधिकारी पार्टी के तत्वाधान में सम्पूर्ण भागीदारी यात्रा चन्दौली,सकलडीहा,धानापुर होते हुए "जिसकी जितनी संख्या भारी, उसकी उतनी हिस्सेदारी। सबको शिक्षा एक समान, गरीब हो या धनवान" का नारा लगाते हुए चहनियां चौराहे पर पहुँची। जहां सम्पूर्ण भागीदारी यात्रा में जन अधिकार पार्टी के पूर्व मंत्री व राष्ट्रीय अध्यक्ष बाबू सिंह कुशवाहा ने लोगो को सम्बोधित किया।

इस दौरान कहा कि आजादी के 76 वर्षों के उपरांत आज भी पिछड़ा,दलित व अल्पसंख्यक समाज अपने हक के हिस्से से वंचित है। यह समाज राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक व शैक्षणिक सभी क्षेत्रों में अत्यंत पिछड़ा हुआ है। भारत के आजादी के लगभग 45 वर्षों के उपरांत मण्डल कमीशन की रिपोर्ट लागू होने से पिछड़ों को 27 प्रतिशत आरक्षण मिला किन्तु अब तक की सत्तासीन सरकारों ने आरक्षण को येनकेन प्रकारेण से रोकने का काम किया है। आज देश में पिछड़ों, अनुसूचित जाति,अनु0 जनजाति एवं अल्पसंख्यक की आबादी लगभग अस्सी से नब्बे प्रतिशत है। किंतु देश के सभी क्षेत्रों में उनका प्रतिनिधित्व न के बराबर है। इसका मुख्य कारण राजनीतिक जागरूकता का अभाव है। कहा कि यह स्थिति अत्यंत भयावह दुखदाई और मन मस्तिष्क को झकझोर देने वाली है । यदि हम भी जागरूक हो जाये सब कुछ हासिल हो जजायेग। सभी को निशुल्क शिक्षा उपलब्ध कराई जाय। किसानों को खाद,बीज ,कीटनाशक दवाओं का उचित प्रबंध हो। इसके लिए हमलोगों को संगठित होने की जरूरत है। इस दौरान जिलाध्यक्ष संजय मौर्या, विधान सभा अध्यक्ष अजय मौर्य, मनोज कुशवाहा, शिवपूजन मौर्य, धनंजय कुमार, कमलाकर, रानी सिंह, विमलेश चौहान, अशोक निषाद,आजम खान, राकेश आदि उपस्थित थे।

संक्षिप्त खबरे...

आमजन को सुरक्षा व्यवस्था के प्रति कराया गया आश्वस्त

भदोही,परिवर्तन दूत ब्यूरो। जनपद में स्थित बैंकों, व्यवसायिक प्रतिष्ठानों बाजारों व भीड़भाड़ वाले स्थानों की चाक चौबंद सुरक्षा व्यवस्था के दृष्टिगत डॉ. मीनाक्षी कात्यायन,पुलिस अधीक्षक भदोही के निर्देशन में अपर पुलिस अधीक्षक, समस्त थाना एवं चौकी प्रभारियों द्वारा बैंकों व उसके आस-पास सघन चेकिंग हेतु विशेष अभियान चलाया गया।अभियान के क्रम में समस्त थाना व चौकी प्रभारियों सहित चेकिंग हेतु गठित पुलिस टीमों द्वारा थाना क्षेत्र अंतर्गत सभी बैंक,पोस्ट ऑफिस,ग्राहक सेवा केंद्र व व्यवसायिक प्रतिष्ठानों,सराफा बाजार व उसके आसपास संदिग्ध व्यक्ति,वस्तु व वाहनों की सघन चेकिंग की गई। चेकिंग के दौरान बैंकों में लगे अलार्म एवं सीसीटीवी कैमरों को चेक किया गया कि सुचारु रूप से कार्य कर रहे हैं या नही, शाखा प्रबंधक से इस सम्बन्ध में वार्ता की गयी।थाना क्षेत्र अंतर्गत प्रमुख प्वाइंटों पर संदिग्धों को चिन्हित करते हुए बैरियर लगाकर संदिग्ध बाइक सवारों व वाहनों को चेकिंग किया जा रहा है। दौरान चेकिंग वैध कागजात प्रस्तुत न करने पर सम्बन्धित के विरुद्ध चालान की कार्यवाही की गई। बिना नंबर व गलत नंबर प्लेट वाले वाहनों पर सतर्क दृष्टि रखी जा रही है बैंक डयूटी में लगे पुलिसकर्मियों को चेक कर सतर्कतापूर्वक डयूटी करने हेतु निर्देश दिये गये। बैंक परिसर में संदिग्ध व्यक्तियों से पूछताछ की गयी एवं अनावश्यक रूप से बैठे व्यक्तियों को बैंक परिसर से बाहर किया गया।

माँ शीतला का लक्ष्मी स्वरुप में किया गया शृंगार

भदोही परिवर्तन दूत ब्यूरो। विकास खंड औराई के डेरवा भवानीपुर गांव मे गंगा तट पर विराजमान मां शीतला का लक्ष्मी के स्वरुप मे दर्शन पूजन कर श्रद्धांलु निहाल हो गये' मंगला आरती के साथप्रातःकाल से ही शुरू हुआ दर्शन पूजन का क्रम देर शाम तक चलता रहा। साप्ताहिक मेला के अवसर पर मां शीतला का रंग बिरंगे सुगंधित पुष्पों से माता लक्ष्मी के रुप भव्य श्रृंगार किया गया' प्रातःकाल मंगला आरती के साथ दर्शन पूजन के लिए लगी कतार लम्बी होती चली गई, देर शाम तक चले दर्शन पूजन के लिए जुटे श्रद्धालुओ के जयकारे से परिसर गुंजायमान रहा' बताया जाता है कि गांव के लोग मां शीतला के दरबार मे शीश नवाने के उपरांत ही हर काम काज करते हैं लेकिन सोमवार को धाम मे श्रद्धालुओ की भीड़ बढ़ जाती है आस पास गांव के साथ दूर दराज के लोग भी दर्शन पूजन के लिए पहुचते है'मान्यता है कि सच्चे मन से की गई आराधना के दौरान मांगी गई हर मनोकामना पूर्ण होता है'इसी आस्था और विश्वास के साथ दर्शन पूजन का क्रम चलता रहा'दिन भर चले दर्शन पूजन के साथ ही पूरा गांव जयकारे से गूंजायमान रहा' मनौती पूरी होने पर दूर दराज से पहुचे लोगों कड़ाही चढ़ा कर प्रसाद बनाया और मां को भोग लगाने के बाद वितरित किया। इस मौके पर पुजारी प्रदोष पंडा,व्यस्थापक ओम सिंह बघेल,आशीष सिंह,ऋषि बघेल आदि रहे।

बोलेरो ने साइकिल को मारी टक्कर एक की मौत, दूसरा घायल

आजमगढ़। जिले के मुबारकपुर थाना क्षेत्र के मोलना मोड़ के पास बोलेरो की चपेट में आकर साइकिल सवार एक युवक की मौत हो गई। वहीं साथी गंभीर रूप से घायल हो गया। घटना के समय दोनों मुबारकपुर कस्बे से वापस घर लौट रहे थे। सूचना पर पहुंची पुलिस ने मृतक के शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। वहीं घायल को अस्पताल में भर्ती कराया गया है। बम्हौर गांव निवासी शिव प्रकाश (25) गांव के ही राम आधार (40) के साथ साइकिल से मुबारकपुर गया था। दोनों वापस गांव लौट रहे थे। अभी वे मोलना मोड़ पर ही पहुंचे थे कि आजमगढ़ की तरफ से आ रही बोलेरो ने उन्हें अपनी चपेट में ले लिया। हादसे में शिव प्रकाश की मौके पर ही मौत हो गई। वहीं राम आधार गंभीर रूप से घायल हो गया। सूचना पर मुबारकपुर थाना पुलिस मौके पर पहुंच गई। घायल राम आधार को तत्काल प्राइवेट अस्पताल में भर्ती कराया गया। वहीं मृतक के शव को पोस्टमार्टम के लिए भिजवा दिया गया।

श्रद्धालुओं से भरी बस पलटी, 14 घायल

जौनपुर। जलालपुर थाना क्षेत्र के त्रिलोचन भवनापुर पुलिया के पास वाराणसी से अयोध्या जा रही बस के पलटने से 14 यात्री घायल हो गए। हादसे में घायल यात्रियों को पुलिस व एंबुलेंस की मदद से जिला चिकित्सालय पहुंचाया गया, इसमें गंभीर रूप से पांच दर्शनार्थियों को बीएचयू रेफर कर दिया गया। सभी दर्शनार्थी मध्य प्रदेश के शिवपुरी जिले के रहने वाले हैं। सूचना पर पुलिस अधीक्षक डा. अजयपाल शर्मा ने जिला चिकित्सालय पहुंचकर तबीयत जानी। मध्य प्रदेश के शिवपुरी से दर्शनार्थियों से भरी टूरिस्ट बस वाराणसी से जौनपुर की तरफ जा रही थी। वाराणसी में दर्शन करने के बाद भवनाथपुर पुलिया के पास त्रिलोचन हाईवे पर अनियंत्रित होकर बस पलट गई। चीख-पुकार सुनकर आसपास के लोग इकट्ठा हो गए। यात्रियों का बिलखना सुनकर अफरा-तफरी मच गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ग्रामीणों की मदद से राहत व बचाव कार्य में जुट गई।

बिजली सेवा व जनसंपर्क अभियान आज से

बलिया। उत्तर प्रदेश पॉवर कॉरपोरेशन के प्रबंध निदेशक पंकज कुमार की ओर से 20 से 29 फरवरी तक बिजली सेवा व जनसंपर्क अभियान चलाने का निर्देश दिया गया है। इस अभियान में शासन ने कई बिंदुओं को शामिल किया है। इसमें बिलिंग समस्या का समाधान के साथ ही आगामी गर्मी के दिनों में निर्बाध आपूर्ति के लिए मार्च में अनुरक्षण से संबंधित सभी कार्य पूरा करने का भी निर्देश है। इसके अलावा जनप्रतिनिधियों व आमलोगों से सुझाव लिए जाएंगे। विभाग की ओर से लोगों को जागरूक करने के साथ ही बैठकें भी आयोजित होंगी। अधिशासी अभियंता विद्युत नरेंद्र प्रकाश ने बताया कि शासन के निदेर्शानुसार अभियान चलाया जाएगा।

महिला सुरक्षा सम्बन्धी विभिन्न हेल्पलाइन नम्बरों के बारे में किया गया जागरुक

भदोही,परिवर्तन दूत ब्यूरो। जनपद के समस्त थानों की एंटीरोमियो टीमों द्वारा शासन द्वारा नारी सुरक्षा,नारी सम्मान,नारी स्वावलंबन,महिला कल्याण के प्रति चलाए जा रहे अभियान मिशन शक्ति के तहत महिलाओं एवं बालिकाओं के मध्य सशक्तिकरण व विश्वास का वातावरण बनाने के उद्देश्य से जनपद में महिला सम्बन्धी अपराधों की रोकथाम हेतु महिलाओं, बालिकाओं, छात्राओं को नारी सुरक्षा, नारी स्वावलंबन एवं नारी सम्मान की दिशा में चलाये जा रहे पुलिस की महिला सुरक्षा सम्बंधी विभिन्न महिला हेल्प लाइन 1090, यूपी 112, हेल्पलाइन नम्बरों 1076 आदि के बारे में जागरूक किया तथा उपस्थित सभी महिलाओं, बालिकाओं, छात्राओं को किसी भी विषम परिस्थिति में तत्काल उक्त दिए गए हेल्पलाइन नम्बरों पर कॉल कर पुलिस को सूचित करने हेतु बताया गया। सभी को हेल्पलाइन नम्बर का निर्भीक होकर उपयोग करने हेतु तथा महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने व निर्भीक होकर अपने अपने क्षेत्र में कार्य करने के लिये प्रेरित किया गया।

प्रशिक्षण पर आरंभिक स्तर पर शब्द बनाना उन्हें पहचानना आदि की दी गयी जानकारी

परीवर्तन दूत

चंदौली। निपुण भारत अभियान के तहत सदर बीआरसी पर चल रहे प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों व शिक्षामित्रों के चार दिवसीय फाउंडेशनल लिटरेसी एण्ड न्यूमरेसी (एफएलएन) प्रशिक्षण में सोमवार को आरंभिक स्तर पर शब्द बनाना, उन्हें पहचानना आदि की जानकारी दी गई। वहीं सन्दर्भदाता एआरपी सुनील शर्मा ने नई शिक्षा नीति की जानकारी भी शिक्षकों को दी।

इस दौरान उन्होंने बताया कि तीन साल से पांच साल तक प्री नर्सरी, नर्सरी व बाल वाटिका के बच्चों को छठे वर्ष कक्षा एक तक आने के लिए आंगनबाड़ी व शिक्षक के बीच समन्वय स्थापित करते हुए नई शिक्षा नीति के अनुपालन के शिक्षकों व शिक्षामित्रों को प्रशिक्षण दिया जा रहा है। प्रशिक्षण के दौरान नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति बुनियादी भाषा एवं गणित की दक्षताएं, सीखने के सिद्धान्त, गणित किट के प्रयोग, डिकोडिंग, लेखन, पठन व आकलन आदि पर विस्तार पूर्वक चर्चा की। इस दौरान विभिन्न गतिविधियों व प्रोजेक्टर के माध्यम से प्रतिभागियों को बच्चों को नए-नए तरीकों से बुनियादी भाषा एवं गणित की दक्षताओं को विकसित करने के बारे में प्रशिक्षित किया गया। इसके साथ ही सीखने के आयामों के विभिन्न रूपों पर चर्चा की गई। सन्दर्भदाताओं ने प्रशिक्षणार्थियों से अलग-अलग वर्गों में बंटे शिक्षकों से जाकर उनके अनुभव व विषयों की जानकारी ली गयी। उन्होंने सभी शिक्षकों का आह्वान किया कि प्रशिक्षण में सीखी गई तकनीकों को अपने विद्यालयों में व्यवहार में लाएं। इस मौके पर सन्दर्भदाता एआरपी सत्येंद्र शर्मा, रिंकू यादव, संदीप, प्रद्युम्न कुमार, बाबूलाल, पूर्णिमा, उर्वशी सिसोदिया, गीता देवी आदि मौजूद रहे।

सुबह सुबह साइकिल चलाना शरीर के लिए बहुत लाभदायक है-डॉ पटेल

भदोही,परिवर्तन दूत ब्यूरो। भदोही साइकिलिंग क्लब के तत्वाधान में अताउल अंसारी की अध्यक्षता में लोगों को स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करने के लिए प्रत्येक सप्ताह की तरह इस रविवार भी सुबह भोर में गोपीगंज बड़ा चौराहा से निकाली गयी साइकिल यात्रा में शामिल सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र गोपीगंज के वरिष्ठ चिकित्सक डॉ एसएस यादव और बैंक ऑफ इंडिया गोपीगंज के शाखा प्रबंधक अनिरुद्ध साहू लोगों को जागरूक करते हुए गोपीगंज, ज्ञानपुर, हॉस्टल तिराहा, देवनाथपुर, नेशनल तिराहा होते हुए जीवनधारा अस्पताल पहुंचे । वहां पहुँचने पर मड़ियाहूँ के विधायक डॉ. आर.के.पटेल भारी संख्या में अपने समर्थकों के साथ वहां मौजूद रहे और सभी साइकिल चालकों को माला पहनाकर जोरदार स्वागत किया और कहा कि सुबह सुबह साइकिल चलाना शरीर के लिए बहुत लाभदायक है,सभी को रोजाना कम से कम 4-6 किलोमीटर साइकिल जरुर चलाना चाहिए और कहा कि ये अभियान बहुत बढ़िया है इसको और बड़े स्तर पर करने की जरुरत है जिससे पूरा जिला स्वस्थ हो सके।विधायक ने साइकिल यात्रा को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया और स्वयं साइकिल लेकर यात्रा में शामिल हुए। साइकिल यात्रा पुनः आरंभ होकर रामरायपुर, कंसरायपुर, मदारीपुर, राजापूरा चौराहा, गजिया ओवर ब्रिज, लिप्पन तिराहा, अज्मुल्ला चौराहा, मर्यादपट्टी का भ्रमण करते हुए हिंदुस्तान जिंदाबाद, स्वस्थ रहे मस्त रहे, करो योग रहो निरोग, हम सबने ये ठाना है पुरे भदोही को स्वस्थ्य बनाना है, सुबह की हवा सौ रोगों की दवा, भारत माता की जय, वन्दे मातरम का नारा लगाते हुए लोगों को सुबह उठने,योग, व्यायाम करने, साइकिल चलाने के फायदे के बारे में जागरूक करते हुए अज्मुल्ला चौराहा पे इसका समापन हुआ।

हर थाने में लगे दिव्यांग कानून का पोस्टर

नियमताबाद पोखरा पर दिव्यांगों ने की बैठक

परीवर्तन दूत

चंदौली। नियमताबाद अलीनगर थाना क्षेत्र नियमताबाद स्थित पोखरा के पास सोमवार की पांच सूत्री मांग को लेकर दिव्यांग जनों ने बैठक की, पूर्वांचल अध्यक्ष अजय बहादुर सिंह ने कहा कि अगर मांग पूरी नहीं होती है तो जल्द जिलाधिकारी कार्यालय का घेराव किया जाएगा।

इस दौरान दिव्यांग पूर्वांचल अध्यक्ष अजय बहादुर सिंह ने बताया कि पांच सूत्री मांगों को लेकर बैठक की गई है, कहा कि हर दिव्यांग जनों को पेंशन 1000 से बढ़कर रु. 3000 माह कर दिया जाए, दिव्यांग कानून 2016 के तहत जिले के हर थाने में एक पोस्टर लगा हो जिससे पढ़कर दिव्यांग जनों अपना कानून जान सके। हर दिव्यांग जनों को आवास सुविधा उपलब्ध हो, जिससे उनको समाधान दिवस पर भटकना न पड़े। दिव्यांगों को रोजगार व कोट की दुकान ग्रामीण क्षेत्रों में उपलब्ध हो, जिले में दिव्यांग के लिए मेडिकल पर दवा फ्री हो, उन्होंने कहा अगर इन पांच सूत्री मांग पूरी नहीं होती है तो जल्द जिला अधिकारी कार्यालय का घेराव किया जाएगा। दिव्यांग जिला उपाध्यक्ष राकेश कुमार ने कहा कि जल्द पांच सूत्री मांग को लेकर जिलाधिकारी को पत्रक दिया जाएगा, अगर सरकार उनकी मांगे नहीं मानती है तो आगामी दिनों में वह विरोध प्रदर्शनों को जिले में तेज करेंगे। इस मौके पर दिव्यांग श्यामलाल, पारस, रामलाल, राधेश्याम, अजय, राजाराम, श्यामलाल रामपुर, राकेश कुमार, ठाकुर प्रसाद चंद्रशेखर रामाशीष राजन इत्यादि लोग उपस्थित रहे।

सड़कों पर बिखरा रहता है कूड़ा

बलिया। जिले में कूड़ा निस्तारण एक बड़ी समस्या बन चुकी है। गांव से लेकर नगरीय क्षेत्रों में मनमानी तरीके से कूड़े का उठान किया जाता है। नगर का कूड़ा करीब सात किमी दूर ट्रकों से कूड़ा ले जाया जाता है जो हवा से पूरे शहर में बिखरता है। आते जाते लोगों के ऊपर भी गिरता है। लेकिन इस लापरवाही की ओर किसी का ध्यान नहीं जाता।

जटाधारी महाविद्यालय में स्मार्टफोन का हुआ वितरण

परीवर्तन दूत

चंदौली। जिले के चहनियां विकास खंड क्षेत्र के मारुफपुर स्थित जटाधारी महाविद्यालय में सोमवार को उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा प्राप्त नि शुल्क स्मार्टफोन का वितरण किया गया। सर्व प्रथम मुख्य अतिथि शायरा बानो जिला पंचायत सदस्य ने मां सरस्वती एवं संस्थापक स्वर्गीय जय प्रकाश सिंह की प्रतिमा पर माल्यार्पण व दीप जलाकर कार्यक्रम की शुरूआत की। महाविद्यालय के प्रबन्धक डॉ शिव प्रकाश सिंह ने मुख्य अतिथि को अंगवस्त्रम तथा स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया। सत्र 2023-24 हेतु स्वामी विवेकानंद युवा सशक्तिकरण योजना के तहत उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा प्राप्त 268 डिवाइस को बीए पंचम सेमेस्टर में अध्ययनरत छात्र छात्राओं में वितरित किया गया। इस दौरान मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश सरकार की योजनाओ को बताते हुए मोबाइल प्राप्त करने वाले छात्र छात्राओं को इस डिवाइस का उपयोग करके तकनीकी शिक्षा से जुड़ने के लिए प्रेरित किया। इस मौके पर नोडल अधिकारी डॉ. अनिल सिंह, राजेश शर्मा, फारुख अहमद फौजी, चन्द्रकला देवी,महेश, संतोष सिंह, नितेश,राम करन, रामदेव, सद्दाम, अरुण, धीरज आदि उपस्थित रहे। अध्यक्षता डॉ. सरिता मौर्य,संचालन सत्यनारायण यादव ने किया।

वाहनों की जांच में कई वाहन सीज किया चालान

अहरौरा, मिर्जापुर। क्षेत्र में हो रही आपराधिक वारदात के लिए बदमाश चोरी व लूटे हुए वाहनों का इस्तेमाल कर रहे हैं। इसके चलते अब पुलिस वाहनों की जांच को लेकर गंभीर हो गई है। सोमवार को पुलिस ने मेहंदीपुर चौराहा (हाईवे) पर वाहनों की जांच की। वैध कागज व संदिग्ध वाहन चालकों के खिलाफ पुलिस ने कार्रवाई की। वही पुलिस द्वारा चार पहिया वाहनों को रोककर उनकी तलाशी ली गई। डिग्गी आदि की जांच की गई। वैध कागज व लाइसेंस बिना चलने वालों के खिलाफ कार्रवाई करते हुए पुलिस ने उनके चालान काटे। वाहनों को सीज किया गया। थाना प्रभारी निरीक्षक अमित मिश्रा ने बताया कि वाहनों के चेकिंग अभियान में चार मोटरसाइकिल को सीज करते हुए 20 वाहनों का चालान किया गया। इस दौरान चेकिंग में एसआई राकेश सिंह, एजाज खान के साथ अन्य एसआई और पुलिस कर्मी मौजूद रहे।

एक लाख घूस लेते रंगे हाथ शिक्षा विभाग का लिपिक गिरफ्तार

आजमगढ़। जिले में सोमवार को एक और भ्रष्टाचारी एंटी करप्शन टीम के हत्थे चढ़ गया। इस बार एडी बेसिक कार्यालय का बाबू मान्यता दिलाने के नाम पर एक लाख रुपये की रकम लेते रंगे हाथ पकड़ा गया है। वहीं एंटी करप्शन टीम ने शहर कोतवाली में दर्ज कराए गए मुकदमें में पकड़े गए बाबू के साथ ही एडी बेसिक का नाम भी शामिल किया है। बलिया जिले के सिकंदरपुर थाना अंतर्गत महरो गांव निवासी राजीव कुमार सिंह विद्यालय संचालक है। कक्षा छह से आठ तक की मान्यता के लिए वे एडी बेसिक कार्यालय का चक्कर लगा रहे थे। इस दौरान आजमगढ़ जिला मुख्यालय पर स्थित एडी बेसिक कार्यालय का लिपिक मनोज कुमार श्रीवास्तव ने उससे मान्यता दिलाने के नाम पर एक लाख रुपये की डिमांड किया। जिस पर राजीव कुमार सिंह ने एंटी करप्शन टीम आजमगढ़ से संपर्क किया। टीम ने योजना बनाई और सोमवार को जिलाधिकारी से मिल कर दो गवाह साथ लेकर एडी बेसिक कार्यालय पहुंच गइ। जहां राजीव कुमार सिंह ने मान्यता के लिए हुए डिमांड

के तहत एक लाख रुपये लिपिक मनोज कुमार श्रीवास्तव को दिया और टीम ने मौके से ही रंगेहाथ लिपिक को पकड़ लिया। भ्रष्टाचार निवारण टीम उसे लेकर शहर कोतवाली पहुंची। जहां पूछताछ के साथ ही आगे की विधिक कार्रवाई शुरू की गई।

पूछताछ में पकड़ा गया लिपिक मनोज श्रीवास्तव ने बताया कि वह यह पैसा एडी बेसिक/डीआईओएस मनोज कुमार मिश्रा के कहने पर लिया था। भ्रष्टाचार निवारण टीम ने आरोपी के बयान के आधार पर शहर कोतवाली में उसके व विभागीय अधिकारी मनोज कुमार मिश्रा के खिलाफ भी मुकदमा पंजीकृत कराया है।

टीम में निरीक्षक हरविंश मिश्रा, श्याम बाबू, ब्रजेश द्विवेदी, कैलाश चंद्र, मुख्य आरक्षी कौशल कुमार राय, विकास कुमार, ओमकार सिंह यादव, आनंद कुमार, अमित सिंह, आरक्षी मुकेश कुमार, अखिलेश कुमार, पंकज कुमार, जितेंद्र कुमार व अरविंद यादव शामिल रहे।

शैलेंद्र कुमार सिंह, विवेचक एंटी करप्शन टीम, आजमगढ़ ने बताया कि बलिया निवासी व्यक्ति की शिकायत पर टीम ने कार्रवाई करते हुए एडी बेसिक कार्यालय के बाबू मनोज श्रीवास्तव को एक लाख रुपये घूस लेते पकड़ा है। पूछताछ में उसने बताया कि एडी बेसिक मनोज कुमार मिश्रा के कहने पर ही उसने पैसा लिया था। जिसके चलते शहर कोतवाली में लिपिक मनोज श्रीवास्तव व एडी बेसिक मनोज कुमार मिश्रा के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया गया है।

डीएम-एसपी को महिला ने दिया प्रार्थना पत्र

दबंगो से लगाई सुरक्षा की गुहार

भदोही परिवर्तन दूत ब्यूरो। गोपीगंज थाना क्षेत्र के कलनुआ गांव निवासी खिलोधर की पत्नी संगीता देवी ने जिलाधिकारी और पुलिस अधीक्षक को प्रार्थना पत्र देकर दबंगो पर जबरन जमीन कब्जा करने व मारपीट कर घायल कर देने का आरोप लगाते हुए सुरक्षा की गुहार लगाई है।

अवगत कराया कि उसके पति व जेठ रोजी रोटी के लिए मुम्बई रहते है' गांव में देवर देवरानी व बच्चों के साथ रहती ही' पट्टे मे उसके परिवार को मिली जमीन पर दबंग जबरन कब्जा करना चाहते है'14 फरवरी को सायंकाल जमीन से बेदखल करने की नियत से लाठी डंडा लेकर उसके घर पहुच कर देवर लल्ला देवरानी व उसे मारपीट कर घायल कर दिया' पिटाई से उसके देवर की हालत बिगड़ गई है जिसे जिला अस्पताल मे भर्ती कराया गया है।

इसकी सूचना थाने में दी गई लेकिन पुलिस दबंगो पर कार्रवाई करने के बजाय उसके घायल देवर का शांति भंग के आरोप मे चालान कर दिया था' गंभीर रुप से घायल देवर का जिला अस्पताल मे इलाज चल रहा है' उसका आज तक मेडिकल नही कराया गया' दबंग जमीन से बेदखल करने व पूरे परिवार को जान से मारने की धमकी दे रहे है'

परिवर्तन दूत

पीएम मोदी ने किया कल्कि धाम मंदिर का शिलान्यास

आज सुदामा कृष्ण को पोटली में कुछ देते तो उन पर भी भ्रष्टाचार का केस हो जाता

संभल,एजेंसी। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आज उत्तर प्रदेश के दौरे पर हैं, यहां वह कल्कि धाम मंदिर के शिलान्यास कार्यक्रम में शामिल होने के लिए सुबह संभल पहुंचे थे। यहां उनका स्वागत करने के लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ पहुंचे थे। वैदिक मंत्रोच्चार के बीच पीएम मोदी ने कल्कि धाम मंदिर का भूमि पूजन किया। पूजा के दौरान पीएम मोदी के एक ओर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और दूसरी ओर आचार्य प्रमोद कृष्णम बैठे। पीएम मोदी ने श्री कल्कि धाम मंदिर शिलान्यास कार्यक्रम के दौरान अपने संबोधन में कहा, श्आज यूपी की धरती से भक्ति, भाव और अध्यात्म की एक और धारा प्रवाहित होने को लालायित है। आज पूज्य संतों की साधना और जनमानस की भावना से एक और पवित्र धाम की नींव रखी जा रही है। मुझे विश्वास है कि कल्कि धाम भारतीय आस्था के एक और विराट केंद्र के रूप में उभरकर सामने आएगा। कई ऐसे अच्छे काम हैं, जो कुछ लोग मेरे लिए ही छोड़ कर चले गए हैं। आगे भी जितने अच्छे काम रह गए हैं, उनको भी संतों और जनता-जनार्दन के आशीर्वाद से हम पूरा करेंगे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि आज छत्रपति शिवाजी महाराज की जन्म-जयंती भी है। ये दिन इसलिए और भी पवित्र और प्रेरणादायक हो जाता है। आज हम देश में जो सांस्कृतिक पुनरोदय देख रहे हैं, अपनी पहचान पर गर्व कर रहे हैं, ये प्रेरणा हमें छत्रपति शिवाजी महाराज से ही मिलती है। मैं इस अवसर पर छत्रपति शिवाजी महाराज के चरणों में श्रद्धापूर्वक नमन करता हूं। भूमि पूजन के अनुष्ठान समाप्त होने के बाद पीएम मोदी मंच पर पहुंचे, तो श्री कल्कि धाम मंदिर निर्माण ट्रस्ट के अध्यक्ष आचार्य प्रमोद कृष्णम और स्वामी अवधेशानंद गिरि ने अंगवस्त्र ओढ़ाकर उनका स्वागत किया। आचार्य प्रमोद कृष्णम ने स्वागत भाषण में कहा- मैं श्री कल्कि धाम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का स्वागत करता हूं... 18 साल पहले देखे गए श्सनातन धर्मश् के सपने को पूरा करने के लिए देश के कोने-कोने से हजारों संत यहां एकत्र हुए हैं। हमारे धर्मग्रंथों में लिखा है, जब-जब अधर्म और पाप अपने चरम पर पहुंचा, तब-तब अधर्मियों का नाश करने और धर्म की पुर्नस्थापना करने के लिए भगवान ने अवतार लिया। उन्होंने बताया कि त्रेता युग में भगवान राम ने अयोध्या में, द्वापर में भगवान कृष्ण ने मथुरा में जन्म लिया। कलियुग में भगवान कल्कि संभल की धरती पर अवतरित होंगे। उन्होंने इस कार्यक्रम में आने और कल्कि धाम का शिलान्यास करने के लिए पीएम मोदी का आभार जताया। बता दें कि इस मंदिर को श्री कल्कि धाम निर्माण ट्रस्ट बनवा रहा है, जिसके अध्यक्ष आचार्य प्रमोद कृष्णम हैं. इस कार्यक्रम में शामिल होने देशभर से 11000 से अधिक साधु-संत संभल पहुंचे हैं। कई धार्मिक नेता और अन्य गणमान्य व्यक्ति भी मंदिर के शिलान्यास समारोह में उपस्थित हैं। श्री कल्कि धाम मंदिर परिसर 5 एकड़ में बनकर तैयार होगा। इसका निर्माण कार्य पूरा होने में 5 साल लगेंगे। इस मंदिर का निर्माण भी बंसी पहाड़पुर के गुलाबी पत्थरों से होगा। सोमनाथ मंदिर और अयोध्या का राम मंदिर भी बंसी पहाड़पुर के पत्थरों से ही बना है। मंदिर के शिखर की ऊंचाई 108 फीट होगी.

कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया को बड़ी राहत

सुप्रीन कोर्ट ने निचली अदालत में पेश होने पर लगाई रोक, जारी किया नोटिस

नई दिल्ली,एजेंसी। कर्नाटक के मुख्यमंत्री सिद्धारमैया को सुप्रीम कोर्ट से बड़ी राहत मिली है। सुप्रीम कोर्ट ने साल 2022 में प्रदर्शन के दौरान सड़क बाधित करने के लिए सिद्धारमैया के खिलाफ दर्ज एफआईआर रद्द करने की मांग पर शिकायतकर्ता को नोटिस जारी किया है। जज हृषिकेश रॉय और जज पीके मिश्रा की पीठ ने मामले में कर्नाटक सरकार और शिकायतकर्ता को नोटिस जारी किया है। साथ ही सुप्रीम कोर्ट ने आगे की कार्यवाही पर रोक लगा दी है और एण ने 26 फरवरी को निचली अदालत में पेश होने पर भी रोक लगा दी है। इस मामले में अगली सुनवाई 6 सप्ताह बाद होगी। सुप्रीम कोर्ट ने हाई कोर्ट के उस आदेश पर भी रोक लगा दी है, जिसमें सीएम सिद्धारमैया, कांग्रेस महासचिव और कर्नाटक प्रभारी रणदीप सिंह सुरजेवाला, राज्य के मंत्री एम बी पाटिल और रामलिंगा रेड्डी पर 10,000 रुपये का जुर्माना लगाया गया था। बता दें कि उन्हें 6 मार्च को विशेष अदालत में पेश होने का निर्देश दिया गया था। बता दें कि कांग्रेस नेताओं के खिलाफ ये मामला तब दर्ज किया गया था, जब उन्होंने बेंगलुरु में तत्कालीन मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई के आवास की घेराबंदी करने की कोशिश की थी। उन्होंने केएस ईश्वरप्पा के इस्तीफे की मांग को लेकर तत्कालीन मुख्यमंत्री के आवास का घेराव किया था। इस मामले में कांग्रेस नेताओं के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई थी।

चीन आगे बढ़ रहा है, अमेरिका को और दोस्तों की जरूरत

निक्की हेली ने भारत को लेकर दिया बड़ा बयान

नई दिल्ली,एजेंसी। भारतीय-अमेरिकी रिपब्लिकन राष्ट्रपति पद की उम्मीदवार निक्की हेली ने कहा है कि अगर नवंबर 2024 के चुनाव में सत्ता में आती हैं, तो उनका प्रशासन न केवल नाटो के साथ बल्कि भारत, ऑस्ट्रेलिया, जापान, दक्षिण कोरिया और फिलीपींस सहित कई अन्य देशों के साथ गठबंधन को मजबूत करेगा। .उन्होंने कहा कि यह अमेरिका के अधिक मित्र होने के कारण है, कम मित्र नहीं। संयुक्त राष्ट्र में 52 वर्षीय पूर्व अमेरिकी राजदूत हेली ने कहा कि अगर पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप दोबारा चुने जाते हैं तो नाटो गठबंधन के लिए खतरा उन चीजों में से एक है जिसके बारे में वह चिंतित हैं। अगर ट्रम्प दोबारा चुने जाते हैं तो मैं कई चीजों को लेकर चिंतित हूं। यह उनमें से एक है। उन्होंने कहा कि नाटो 75 साल की सफलता की कहानी है। हेली रिपब्लिकन पार्टी की 2024 राष्ट्रपति पद की नामांकन दौड़ में ट्रम्प के खिलाफ एकमात्र उम्मीदवार बची हैं। दक्षिण कैरोलिना के दो बार के पूर्व गवर्नर ने कहा कि रूस ने कभी भी नाटो देश पर आक्रमण नहीं किया है क्योंकि वह आमतौर पर इस गठबंधन से बहुत भयभीत रहा है। नाटो 31 सदस्य देशों का एक अंतर-सरकारी सैन्य गठबंधन है 29 यूरोपीय और दो उत्तरी अमेरिकी। इस गठबंधन से चीन भी डरा हुआ है. हेली ने कहा, इसलिए नाटो को मजबूत रखना महत्वपूर्ण है। हेली एक सप्ताह पहले दक्षिण कैरोलिना में ट्रम्प की उस टिप्पणी के बारे में एक सवाल का जवाब दे रही थीं जिसमें उन्होंने कहा था कि वह रूस को किसी भी नाटो सदस्य देश के साथ 'जो कुछ भी वे चाहते हैं' करने के लिए प्रोत्साहित करेंगे जो रक्षा पर खर्च दिशानिर्देशों को पूरा नहीं करता है। हेली ने कहा कि यह किसी ठग का पक्ष लेने और उन दोस्तों का पक्ष लेने का समय नहीं है, जो 11 सितंबर के हमलों के बाद अमेरिका के साथ खड़े थे।

लोकसभा चुनाव से पहले राजस्थान में कांग्रेस को झटका

4 बार के विधायक मरेंद्रजीत मालवीया बीजेपी में शामिल

जयपुर,एजेंसी। राजस्थान में कांग्रेस को सोमवार को उस समय झटका लगा जब चार बार के विधायक एवं पूर्व मंत्री महेंद्रजीत सिंह मालवीया भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) में शामिल हो गए। बांसवाड़ा जिले की बागीदौरा सीट से विधायक मालवीया ने इस अवसर पर कहा कि वह वागड़ क्षेत्र के विकास के लिए भाजपा में शामिल हो रहे हैं। दक्षिण राजस्थान के आदिवासी इलाके को वागड़ कहा जाता है जिसमें बांसवाड़ा और डूंगरपुर जिले शामिल हैं। पूर्व सांसद एवं बागीदौरा सीट से लगातार चार बार के विधायक मालवीया जयपुर में भाजपा के प्रदेश कार्यालय पहुंचे जहां पार्टी के राज्य प्रभारी अरुण सिंह, प्रदेश इकाई के अध्यक्ष सी.पी. जोशी और अन्य नेताओं ने उनका पार्टी में स्वागत किया। मालवीया ने कहा कि वह कल दिल्ली में भाजपा अध्यक्ष जे.पी. नड्डा और गृह मंत्री अमित शाह से मिले और पार्टी की राष्ट्रीय बैठक में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के संबोधन से प्रभावित हुए। कांग्रेस पर निशाना साधते हुए उन्होंने कहा कि जब कांग्रेस ने 22 जनवरी को अयोध्या में राम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा समारोह में शामिल होने से इनकार कर दिया तो बहुत ठेस लगी क्योंकि वे सनातन को मानने वाले व्यक्ति हैं। इस अवसर पर संवाददाता सम्मेलन में उन्होंने कहा, "पूरी निष्ठा के साथ मैं भाजपा पार्टी में शामिल हो रहा हूं।" मालवीया ने कहा कि भाजपा और प्रधानमंत्री मोदी के अलावा कोई और अंचल का विकास नहीं कर सकता। भाजपा की प्रदेश इकाई के अध्यक्ष जोशी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और भाजपा की नीति से प्रभावित होकर मालवीया भाजपा की सदस्यता ग्रहण कर रहे हैं। मालवीया दिसंबर 2008 से लेकर अब तक लगातार चैथी बार कांग्रेस के विधायक हैं। वह पूर्ववर्ती अशोक गहलोत सरकारों दो बार मंत्री में रहे। वह साल 1998 में बांसवाड़ा से कांग्रेस के टिकट पर सांसद में चुने गये। राज्य्य की विधानसभा की 200 सीट में से इस समय सत्तारूढ़ भाजपा के पास 115 और कांग्रेस के पास 70 सीट हैं।

सत्ता में आई तो भारत, ऑस्ट्रेलिया, जापान के साथ संबंध मजबूत करूंगी: निक्की हेली

अमेरिका, राष्ट्रपति पद के लिए रिपब्लिकन पार्टी की तरफ से उम्मीदवारी पाने का प्रयास कर रहीं भारतीय-अमेरिकी निक्की हेली ने कहा कि अगर वह सत्ता में आती हैं तो उनका प्रशासन न केवल उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) के साथ बल्कि भारत, ऑस्ट्रेलिया, जापान, दक्षिण कोरिया और फिलीपीन सहित कई अन्य देशों के साथ अपने संबंधों का मजबूत करेगा। हेली ने कहा कि अगर पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप दोबारा चुने जाते हैं तो नाटो के साथ संबंधों के लिए खतरा हो सकता है। उन्होंने 'एबीसी न्यूज' से बातचीत में कहा, " अगर ट्रंप दोबारा चुने जाते हैं तो मैं कई मुद्दों को लेकर चिंतित हूं। नाटो के साथ संबंधों के लिए खतरा उनमें से एक है। नाटो 75 साल की सफलता की कहानी है। "अमेरिका में 2024 में होने वाले राष्ट्रपति चुनाव के लिए नामांकन भरने की दौड़ में रिपब्लिकन पार्टी की तरफ से हेली ट्रंप के खिलाफ एकमात्र उम्मीदवार बची हैं। नाटो 31 सदस्य देशों का एक अंतरसरकारी सैन्य गठबंधन है, जिसमें यूरोप के 29 और उत्तरी अमेरिका के दो देश शामिल हैं। हेली ने कहा कि चीन हमेशा से इस गठबंधन का मुखर विरोधी रहा है। ऐसे में नाटो को मजबूत बनाना जरूरी है। करीब एक सप्ताह पहले कैरोलिना में ट्रंप ने टिप्पणी करते हुये कहा था कि वह रूस को किसी भी नाटो सदस्य देश के साथ "कुछ भी करने के लिए" प्रोत्साहित करेंगे। हेली इस संबंध में पूछे गये सवाल पर ही प्रतिक्रिया दे रही थीं। हेली ने कहा कि इस गठबंधन में और अधिक मित्र देशों को जोड़ना जरूरी है। यह गठबंधन के साथ खड़े होने का समय है। यह न तो किसी ठग का पक्ष लेने का समय है और न ही उन मित्र देशों का पक्ष लेने का समय है जो कि 11 सितंबर के हमले के बाद अमेरिका के साथ खड़े थे। एक सवाल के जवाब में हेली ने कहा," मैं वादा करती हूं कि अगर राष्ट्रपति के रूप में काम करने का मौका मिला तो हम न केवल नाटो को मजबूत करेंगे,

726वें दिन में रूस को मिली बड़ी सफलता

यूक्रेन के शहर अवदिक्का पर किया कब्जा

रूस,एजेंसी। रूस-यूक्रेन युद्ध का 726वें दिन व्लादिमीर पुतिन खुश तो जरूर होंगे। खुशी इसलिए क्योंकि उसके सैनिकों ने एक महत्वपूर्ण जीत हासिल की है। पूर्वी यूक्रेनी शहर अवदीवका पर कब्ज़ा। रविवार (18 फरवरी) को, रूसी सैनिकों ने पूर्वी शहर अवदीवका के कई हिस्सों में झंडा फहराया, जब यूक्रेनी सेना एक दशक से बचाव कर रहे शहर के खंडहरों से जल्दबाजी में पीछे हट गई। पिछले साल मई में बखमुत शहर पर कब्ज़ा करने के बाद मॉस्को में अवदीवका का पतन देश की सबसे बड़ी जीत है और राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन द्वारा यूक्रेन पर आक्रमण का आदेश देकर पूर्ण पैमाने पर युद्ध शुरू करने के लगभग दो साल बाद यह जीत हुई है। सोशल मीडिया पर प्रसारित वीडियो में सैनिक संयंत्र की एक इमारत पर रूसी झंडा फहराते हुए दिखाई दिये। यूक्रेन के सैन्य प्रमुख ने कहा था कि उन्होंने पूर्वी यूक्रेन में स्थित अवदिवका शहर से सैनिक वापस बुला लिये हैं, जहां बड़ी संख्या में सैनिकों ने पिछले चार महीनों में रूसी हमले का माकूल जवाब दिया। यूक्रेन के कमांडर कर्नल जनरल ओलेक्जेंडर सिरस्की ने फेसबुक पर एक संक्षिप्त बयान पोस्ट कर कहा कि उन्होंने यह फैसला घेरेबंदी से बचने और सैनिकों के जीवन की रक्षा को ध्यान में रखते हुए लिया है। कमांडर इन चीफ ने कहा कि सैनिकों को दूसरे माकूल स्थानों पर भेजा जा रहा है। उन्होंने कहा कि हमारे सैनिकों ने पूरी निष्ठा के साथ अपना सैन्य कर्तव्य निभाया और सर्वश्रेष्ठ रूसी सैन्य इकाइयों को नष्ट करने का हर संभव प्रयास किया। हमारी सेना ने संख्याबल और उपकरणों के मामले में भी दुश्मन को काफी नुकसान पहुंचाया है।

बयान के मुताबिक, हम हालात को स्थिर बनाने और अपनी जगहों पर बने रहने के लिए कदम उठा रहे हैं। रूस ने पश्चिमी देशों पर उन समझौतों को तोड़ने का आरोप लगाया जो यूक्रेन में युद्ध को रोक सकते थे जबकि अमेरिका और उसके सहयोगियों ने सीधे तौर पर मास्को पर दोष मढ़ते हुए कहा कि इसमें कोई संदेह नहीं है कि राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने अपने छोटे पड़ोसी देश पर आक्रमण का आदेश दिया था। यूक्रेन पर 24 फरवरी 2022 को किए आक्रमण की दूसरी वर्षगांठ से कुछ दिन पहले संयुक्त राष्ट्र में रूस के राजदूत वैसिली नेबेंजिया ने एक बार फिर युद्ध की वजह 2015 के मिन्स्क समझौते को लागू करने में विफलता बतायी, जिसके लिए उन्होंने पश्चिम देशों द्वारा समर्थित यूक्रेन की गतिविधियों को जिम्मेदार ठहराया।

संक्षिप्त खबरें...

जापान ने यूक्रेन पुनर्निर्माण सम्मेलन की मेजबानी कर समर्थन का वादा किया

जापान, जापान के प्रधानमंत्री फुमियो किशिदा ने यूक्रेन के पुनर्निर्माण में देश की दीर्घकालिक भागीदारी का सोमवार को संकल्प व्यक्त किया और इसे भविष्य का निवेश करार दिया। यूक्रेन के खिलाफ रूस द्वारा छेड़े गये युद्ध के दो वर्ष पूरे होने से पहले जापान ने युद्धग्रस्त देश का समर्थन करने की अपनी प्रतिबद्धता पर जोर दिया। यूक्रेन सरकार और व्यापारिक संगठनों के साथ मिलकर आयोजित किये गये एक सम्मेलन को संबोधित करते हुए किशिदा ने अपने भाषण में कहा कि जापान का सहयोग समावेशिता, मानवतावाद के साथ-साथ प्रौद्योगिकी व ज्ञान पर आधारित एक दीर्घकालिक साझेदारी होगी। जापान और यूक्रेन की सरकारी एजेंसियों व कंपनियों ने 50 से अधिक सहयोग समझौतों पर हस्ताक्षर किए। किशिदा ने यूक्रेन के विकास के लिए भावी उद्योगों में निवेश के महत्व पर जोर दिया और सुनिश्चित किया कि यह समर्थन यूक्रेन की जरूरतों को पूरा करेगा। किशिदा ने कहा कि यूक्रेन के पुनर्निर्माण के लिए यह समर्थन भविष्य में निवेश जैसा है। उन्होंने कहा, यूक्रेन में युद्ध अभी जारी है और हालात मुश्किल बने हुए हैं।

मिनेसोटा में गोलीबारी की घटना में दो अधिकारियों समेत तीन लोगों की मौत

मिनेसोटा। अमेरिका में मिनेसोटा के मिनियापोलिस उपनगर में घरेलू हिंसा संबंधी एक शिकायत मिलने के बाद रविवार तड़के मदद के लिए पहुंचे दो पुलिस अधिकारियों समेत तीन लोगों की गोली मारकर हत्या किए जाने का मामला सामने आया है। पुलिस अधिकारियों का प्रतिनिधित्व करने के वाले एक संघ ने यह जानकारी दी है। 'मिनेसोटा पुलिस एंड पीस ऑफिसर्स एसोसिएशन' ने इस घटना में बर्न्सविले के पुलिस अधिकारियों समेत तीन लोगों की मौत होने की पुष्टि की। समाचार एजेंसी 'द एसोसिएटेड प्रेस' (एपी) ने इस मामले में बात करने के लिए पुलिस, दमकल विभाग और मेयर समेत शहर के कई अन्य अधिकारियों को फोन किया और ईमेल भेजे, लेकिन अब तक किसी से बात नहीं हो पाई है।

वेस्ट बैंक हमले में दो फिलिस्तीनी मारे गए, इजरायली सैनिक घायल

रामल्लाह,एजेंसी। फिलिस्तीनी और इजरायली अधिकारियों ने कहा कि कब्जे वाले वेस्ट बैंक में एक शरणार्थी शिविर पर इजरायली हमले के दौरान दो फिलिस्तीनियों की मौत हो गई और एक इजरायली सैनिक गंभीर रूप से घायल हो गया। फिलिस्तीनी स्वास्थ्य मंत्रालय ने मृतकों की पहचान 19 वर्षीय नबील आमेर और 36 वर्षीय मोहम्मद अल-अवफी के रूप में की है, जिन्हें रविवार को तुल्कर्म शिविर में इजरायली सैनिकों ने गोली मार दी थी। समाचार एजेंसी शिन्हुआ की रिपोर्ट के अनुसार, इसमें कहा गया है कि इजरायल ने अल-अवफी के शव को जब्त कर लिया है। फिलिस्तीनी सुरक्षा सूत्रों ने कहा कि इजरायली सेना ने शिविर में प्रवेश किया और उसे घेर लिया, इससे स्थानीय युवाओं के साथ झड़पें हुईं। उन्होंने बताया कि इजरायली सैनिकों ने शिविर में एक घर को घेर लिया, जहां उन्होंने स्नाइपर और हेलीकॉप्टर तैनात किए। इजरायली सार्वजनिक रेडियो ने कहा कि सेना, पुलिस और शिन बेट सुरक्षा सेवा द्वारा की गई छापेमारी में तुलकर्म में एक आतंकवादी और हमास के एक वरिष्ठ अधिकारी के साथ-साथ तीन अन्य संदिग्धों को निशाना बनाया गया। इसमें कहा गया है कि पुलिस ने शिन बेट खुफिया जानकारी पर कार्रवाई करते हुए अल-अवफी को गिरफ्तार कर लिया। वह इजरायलियों पर हमले में वांछित था। इजरायली रेडियो ने कहा कि उस पर टुल्कर्म निवासियों की हत्या का भी संदेह था। रेडियो ने कहा कि अल-अवफी सैनिकों के साथ गोलीबारी के बाद मारा गया, जिन्होंने उसके हथियार जब्त कर लिए। इसमें कहा गया है कि एक अन्य बंदूकधारी भी मारा गया और तीसरा घायल हो गया, जब उन्होंने गोलीबारी की और सैनिकों पर विस्फोटक फेंके।

मंदिरों में हाई अलर्ट घोषित, जम्मू में पीएम मोदी की रैली से पहले कड़ी की गई सुरक्षा, एडवाइजरी भी जारी

जम्मू,एजेंसी। मंगलवार को जम्मू के मौलाना आजाद स्टेडियम में प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी की सार्वजनिक रैली की तैयारी में, अधिकारियों ने केंद्र शासित प्रदेश के विभिन्न हिस्सों से कार्यक्रम स्थल तक उपस्थित लोगों को लाने वाले वाहनों की पार्किंग के लिए 48 स्थानों की पहचान की है। जम्मू में मुख्यालय केंद्रीय पूल सुरक्षा ने रैली में भाग लेने की उम्मीद वाली आम जनता के लिए एक व्यापक सलाह भी जारी की है। एडवाइजरी स्पष्ट रूप से उपस्थित लोगों को बैग, टिफिन बॉक्स, कैमरा, हथियार, गोला-बारूद, तेज धार वाली वस्तुएं, सिगरेट, लाइटर, छाते, आपत्तिजनक झंडे और इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स जैसी अन्य वस्तुएं ले जाने से रोकती है। प्रतिभागियों को अपने मोबाइल फोन बंद या साइलेंट मोड में रखने का निर्देश दिया जाता है और प्रवेश की सुविधा के लिए सुबह 9.30 बजे से पहले कार्यक्रम स्थल पर पहुंचने और सुरक्षा जांच प्रक्रियाओं के दौरान सहयोग करने का आग्रह किया जाता है। अधिकारियों ने कहा कि प्रधानमंत्री 30,500 करोड़ रुपये की शिक्षा, रेलवे, विमानन और सड़क क्षेत्रों सहित कई विकास परियोजनाओं का भी शुभारंभ करेंगे। प्रधान मंत्री कार्यालय (पीएमओ) ने घोषणा की कि मोदी 1,500 नए भर्ती हुए सरकारी कर्मचारियों को नियुक्ति पत्र वितरित करेंगे और श्विकसित भारत, विकसित जम्मूश् पहल के हिस्से के रूप में योजना लाभार्थियों के साथ बातचीत करेंगे। संभावित सुरक्षा खतरों का मुकाबला करने के लिए, 20 फरवरी तक ड्रोन, पैराग्लाइडर और अन्य विमानों पर अस्थायी प्रतिबंध लगाया गया है।

हूती विद्रोही पर अमेरिका ने शुरू किए ताबड़तोड़ हमले, अंडरवॉटर ड्रोन को बनाया निशाना

नई दिल्ली,एजेंसी। लाल सागर में बढ़ते तनाव के बीच अमेरिका ने यमन के हूती नियंत्रित इलाकों में पांच हमले किए। यूएस सेंट्रल कमांड ने जारी बयान में कहा कि तीन मोबाइल एंटी शिप क्रूज मिसाइलों, एक मानव रहित सतही जहाज और एक मानव रहित जलीय जहाज पर हमला किया गया। ब्रिटिश सेना के यूनाइटेड किंगडम मैरीटाइम ट्रेड ऑपरेशंस सेंटर ने बताया कि हूती हमले में लक्षित जहाज ने विस्फोट के बाद क्षति को बनाए रखने की सूचना दी। इसमें कहा गया कि जहाज पर सवार चालक दल सुरक्षित हैं। निजी सुरक्षा फर्म एंब्रे ने बताया कि ब्रिटिश-पंजीकृत, लेबनानी-संचालित मालवाहक जहाज संयुक्त अरब अमीरात में खोरफक्कन से निकलने के बाद बुल्गारिया जा रहा था। एसोसिएटेड प्रेस द्वारा विश्लेषण किए गए MarineTraffic.com के जहाज-ट्रैकिंग डेटा ने लक्षित जहाज की पहचान रूबीमार के रूप में की। इसके बेरूत स्थित प्रबंधक से टिप्पणी के लिए तुरंत संपर्क नहीं किया जा सका। एंब्रे ने जहाज को आंशिक रूप से माल से भरा हुआ बताया, लेकिन यह तुरंत स्पष्ट नहीं था कि यह क्या ले जा रहा था। इस महीने की शुरुआत में फारस की खाड़ी में जहाज ने अपने स्वचालित पहचान प्रणाली ट्रैकर को बंद कर दिया था। हूती ने तुरंत हमले का दावा नहीं किया। जनरल याह्या सारी ने कहा कि उनकी गतिविधियों पर एक बयान सोमवार सुबह किसी समय जारी होने की संभावना है। नवंबर के बाद से गाजा पट्टी में हमास को निशाना बनाने वाले इजराइल के युद्ध को लेकर विद्रोहियों ने लाल सागर और आसपास के जल में जहाजों को बार-बार निशाना बनाया है। उन्होंने अक्सर ऐसे जहाज़ों को निशाना बनाया है जिनका इजराइल से कोई स्पष्ट संबंध नहीं है, जिससे एशिया, मध्यपूर्व और यूरोप के बीच व्यापार के प्रमुख मार्ग में नौवहन खतरे में पड़ गया है। उन जहाजों में ईरान के लिए कार्गो के साथ कम से कम एक जहाज शामिल है, जो इसका मुख्य लाभार्थी है।

दक्षिण कोरिया में इलेक्शन से पहले डीपफेक का बढ़ा चलन

चुनाव अधिकारियों ने बढ़ाई सतर्कता

दक्षिण कोरिया,एजेंसी। अप्रैल में दक्षिण कोरिया के संसदीय चुनाव होने में 50 दिन से भी कम समय शेष होने के कारण आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) से उत्पन्न डीपफेक वीडियो और छवियों के प्रसार पर चिंताएं बढ़ रही हैं, जिससे चुनाव अधिकारियों की ओर से सतर्कता बढ़ा दी गई है। देश के चुनाव निगरानी संस्था, राष्ट्रीय चुनाव आयोग (एनईसी) के अनुसार, 29 जनवरी से पिछले सप्ताह के अंत तक 129 टुकड़े एआई-जनित मीडिया सामग्री का पता लगाया गया था, जो नए संशोधित चुनाव कानून का उल्लंघन है।

योनहाप समाचार एजेंसी की रिपोर्ट के अनुसार, यह कानून चुनावी प्रचार उद्देश्यों के लिए डीपफेक के उपयोग पर प्रतिबंध लगाता है, जिसमें अपराधियों के लिए सात साल तक की जेल या 10 मिलियन वॉन (₹7,500) का जुर्माना हो सकता है। डीपफेक पर एनईसी की कार्रवाई दुष्प्रचार के उभरते परिदृश्य के प्रति एक सक्रिय प्रतिक्रिया का प्रतिनिधित्व करती है, जैसा कि एआई प्रौद्योगिकी में प्रगति से संभव हुआ है। दिसंबर में नेशनल असेंबली द्वारा पारित संशोधित कानून का उद्देश्य झूठी सूचनाओं के प्रसार को रोकना और उभरते खतरों के खिलाफ चुनावी प्रक्रिया की अखंडता की रक्षा करना है। पिछले चुनावों में घरेलू और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर डीपफेक जोड़तोड़ का इस्तेमाल पहले ही किया जा चुका है, जिससे यह चिंता बढ़ गई है कि एआई-निर्मित वीडियो और छवियां लोकतंत्र के लिए सबसे बड़े खतरों में से एक हैं। 2022 में प्रांतीय चुनावों के दौरान, एर्क्ष्-जनित वीडियो सोशल मीडिया पर प्रसारित हुआ जिसमें राष्ट्रपति यूं सुक येओल को सत्तारूढ़ पार्टी के एक स्थानीय उम्मीदवार का समर्थन करते हुए दिखाया गया था। न्यू हैम्पशायर के मतदाताओं को अमेरिकी राष्ट्रपति जो बिडेन का प्रतिरूपण करते हुए एक एआई-जनित रोबोकॉल प्राप्त हुआ, जिसमें उन्हें राज्य के राष्ट्रपति प्राथमिक चुनाव में मतदान न करने की सलाह दी गई थी। जैसे-जैसे एआई तकनीक का विकास और प्रसार जारी है, विशेषज्ञ चुनाव अधिकारियों द्वारा नियोजित पारंपरिक सत्यापन प्रक्रियाओं को पीछे छोड़ते हुए डीपफेक उत्पादन की बढ़ती परिष्कार और गति के बारे में चेतावनी देते हैं।

राजकोट टेस्ट में इंग्लैंड की हार पर बिफरे पूर्व इंग्लिश खिलाड़ी, 'बैजबॉल' रणनीति को निशाना बनाया

नई दिल्ली,एजेंसी।इंग्लैंड के पूर्व कप्तानों नासिर हुसैन और माइकल वान ने भारत के खिलाफ मौजूदा टेस्ट सीरीज में 'बैजबॉल' (बेहद आक्रामक होकर खेलने की रणनीति) रवैये की आलोचना करते हुए कहा है कि मेहमान टीम को हमेशा आक्रामक होकर खेलने की रणनीति की जगह मैच की स्थिति के अनुसार खेलने की जरूरत है।दरअसल, भारत ने रविवार को राजकोट में तीसरे टेस्ट में इंग्लैंड को 434 रन से हराकर टेस्ट क्रिकेट में रनों के लिहाज से अपनी सबसे बड़ी जीत दर्ज की।

भारत के 557 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए इंग्लैंड की टीम 122 रन पर ढेर हो गई। मेजबान टीम पांच मैच की सीरीज में 2-1 से आगे चल रही है। अंतिम दो टेस्ट रांची और धर्मशाला में खेले जाएंगे।वहीं वॉन ने 'टेलीग्राफ.सीओ.यूके' पर अपने कॉलम में लिखा कि, यह (बेन) स्टोक्स और ब्रेंडन मैकुलम के नेतृत्व में सबसे खराब हार थी और इसने उनकी रणनीति को उजागर किया। वे हर मौके पर आक्रामक नहीं हो सकते, उन्हें अपने लम्हों को चुनना होगा। साथ ही हुसैन भी वॉन से सहमत दिखे। हुसैन ने 'स्काई स्पोर्ट्स' से कहा कि, बैजबॉल आक्रामक होने के बारे में है लेकिन यह दबाव झेलने के बारे में भी है।इसके विपरीत अब तक सीरीज में दो दोहरे शतक लगाने वाले भारत के यशस्वी जयसवाल, शुभमन गिल और पदार्पण कर रहे सरफराज खान ने राजकोट में परिपक्व पारियां खेलीं और अपने शॉट खेलने से पहले क्रीज पर समय बिताया।वहीं वॉन ने कहा, ''उन्हें यह देखने की जरूरत है कि तीसरे दिन जायसवाल और शुभमन गिल ने कैसा प्रदर्शन किया। उन्होंने 30 या 40 गेंदों तक दबाव झेला और फिर उन्होंने बाउंड्री लगाना शुरू कर दिया।'' उन्होंने कहा, ''टेस्ट बल्लेबाजी यही है। भारत ने 228.5 ओवर में 875 रन बनाए। कोई भी मुझे यह नहीं कह सकता कि भारत को यहां बल्लेबाजी करते देखना उबाऊ था।'' हैदराबाद में सीरीज का शुरुआती मैच जीतने के बाद से इंग्लैंड के लिए चीजें खराब होती गईं। मेहमान टीम के बल्लेबाजों ने खराब शॉट खेले जिससे मेजबान टीम को फायदा मिला। वॉन ने कहा, ''निश्चित रूप से इतनी भारी हार बेन स्टोक्स और उनके खिलाड़ियों के लिए एक चेतावनी है।''उन्होंने कहा, ''इंग्लैंड का मानना है कि सब कुछ सकारात्मक है लेकिन उन्हें बेहतर बल्लेबाजी कैसे करें इस पर बातचीत करने की जरूरत है।'' खराब फॉर्म से जूझ रहे बल्लेबाज जो रूट तीसरे टेस्ट में अपने आउट होने के तरीके को लेकर सुर्खियों में हैं। जसप्रीत बुमराह की गेंद पर रूट के रिवर्स स्कूप से दूसरी स्लिप में कैच देने के बाद इंग्लैंड की पहली पारी का पतन शुरू हुआ। वॉन ने कहा, ''जिस तरह से उन्होंने (इंग्लैंड ने) इस सप्ताह खेला उसने भारत को जीत तोहफे में दे दी। जिस तरह से उन्होंने तीसरे दिन बल्लेबाजी की, खासकर जो रूट के शॉट पर मुझे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ।''हुसैन, वॉन और एक अन्य पूर्व कप्तान एलिस्टेयर कुक ने रूट के शॉट के समय पर सवाल उठाए क्योंकि इंग्लैंड 221 रन से पीछे था। हुसैन ने कहा, ''एक चीज जो रूट देखेगा वह शॉट का समय है। (रविचंद्रन) अश्विन वहां नहीं थे, भारत के पास एक गेंदबाज कम था, (रविंद्र) जडेजा चोट के बाद खेल रहे थे, बुमराह लगातार तीसरा टेस्ट खेल रहे थे और ऐसी चर्चा है कि उन्हें आराम की जरूरत है।'' उन्होंने कहा, ''बुमराह को उसके दूसरे या तीसरे स्पैल तक लेकर जाओ और फिर बाद में शॉट खेलो।'' रूट ने पिछले साल एशेज के दौरान इसी तरह का शॉट काफी सफलता के साथ खेला था।

खेल मंत्रालय ने टेबल टेनिस खिलाड़ियों दीया और स्वस्तिका की विदेश में ट्रेनिंग को स्वीकृति दी

नई दिल्ली,एजेंसी। खेल मंत्रालय के मिशन ओलंपिक सेल (एमओसी) ने टेबल टेनिस खिलाड़ियों दीया चितले और स्वस्तिका घोष को शीर्ष स्तर की ट्रेनिंग के लिए क्रमशः दक्षिण कोरिया और जापान की यात्रा करने की अनुमति दे दी है। दीया जहां शिन मिन सुंग के मार्गदर्शन में दक्षिण कोरिया के पाजू-सी में ट्रेनिंग करेंगी तो वहीं स्वस्तिका जापान के ओसाका में कियू जियान शिन से ट्रेनिंग लेंगी।एमओसी ने बैडमिंटन खिलाड़ियों किरण जॉर्ज और अनुपमा उपाध्याय, त्रीसा जॉली और गायत्री गोपीचंद की महिला युगल टीम और निशानेबाज रुद्रांक्ष पाटिल के प्रतियोगिता में हिस्सा लेने के प्रस्तावों को भी मंजूरी दे दी। किरण और अनुपमा बी डब्ल्यूएफ ऑरलियन्स मास्टर्स में भाग लेंगे तो वहीं त्रीसा और गायत्री की जोड़ी अपने कोच और फिजियो के साथ बी डब्ल्यूएफ जर्मन ओपन में प्रतिस्पर्धा करने के लिए जर्मनी जाएगी।भारत के राइफल निशानेबाज रुद्राक्ष 'इंटरनेशनल सेसन स्टार्ट फॉर शूटर्स (आईएसएएस 2024)' प्रतियोगिताओं में प्रतिस्पर्धा करने के लिए डोर्टमंड जाएंगे। एमओसी ने 'डब्ल्यूटीटी फीडर प्रतियोगिताओं' में भाग लेने के लिए वित्तीय सहायता के टेबल टेनिस खिलाड़ियों जी साथियान और मनिका बत्रा के प्रस्तावों को भी मंजूरी दे दी। साथियान डब्ल्यूटीटी फीडर और डब्ल्यूटीटी फीडर दो प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए लेबनान के बेरूत जाएंगे जबकि मनिका डब्ल्यूटीटी सिंगापुर स्मैश में प्रतिस्पर्धा के लिए अपने कोच के साथ जाएंगी और फिर बेरूत में दो डब्ल्यूटीटी फीडर टूर्नामेंट में हिस्सा लेंगी। भारतीय खेल प्राधिरण (साइ) की एक विज्ञप्ति में कहा गया है कि मंत्रालय की टारगेट ओलंपिक पोडियम योजना (टॉप्स) के तहत खिलाड़ियों से संबंधित विभिन्न खर्चों को वहन किया जाएगा।

भारतीय पुरुष टेबल टेनिस टीम को विश्व चैंपियनशिप में दक्षिण कोरिया ने हराया

नई दिल्ली,एजेंसी।भारत को विश्व टेबल टेनिस टीम चैंपियनशिप में लगातार दूसरी हार का सामना करना पड़ा जब सोमवार को पुरुष टीम यहां मेजबान दक्षिण कोरिया से 0-3 से हार गई। अनुभवी शरत कमल, मौजूदा राष्ट्रीय चैंपियन हरमीत देसाई और जी साथियान अपने-अपने एकल मुकाबले हार गए जिससे भारत को तीसरे वरीय कोरिया के खिलाफ ग्रुप चरण के अपने तीसरे मुकाबले में एकतरफा हार का सामना करना पड़ा।विश्व रैंकिंग में 67वें स्थान के साथ भारत के शीर्ष खिलाड़ी हरमीत को दुनिया के 14वें नंबर के जैंग वूजिन के खिलाफ 4-11, 10-12, 8-11 से हार का सामना करना पड़ा। इसके बाद साथियान दुनिया के 16वें नंबर के खिलाड़ी लिम जोंगहून 5-11, 7-11, 7-11 से हार गए जिससे भारत 0-2 से पिछड़ गया।शरत ने ली सैन सु के खिलाफ दूसरा गेम जीता लेकिन लय बरकरार रखने में नाकाम रहे और उन्हें 9-11, 11-8, 6-11, 5-11 से शिकस्त झेलनी पड़ी। चिली के खिलाफ शुरुआती मुकाबला जीतने के बाद भारतीय टीम पोलैंड से 1-3 से हार गई थी लेकिन दो हार के बावजूद भारत ग्रुप तीन में कोरिया के बाद दूसरे स्थान पर है। भारत की महिला टीम सोमवार को ही उज्बेकिस्तान से भिड़ेगी।

भारतीय महिला बैडमिंटन टीम ने रचा इतिहास

बैडमिंटन एशिया टीम चैंपियनशिप 2024 में जीता गोल्ड

नई दिल्ली,एजेंसी।भारतीय महिला बैडमिंटन टीम ने फाइनल में थाईलैंड को 3-2 से मात देकर रविवार को इतिहास रच दिया है। भारतीय टीम ने बैडमिंटन एशिया टीम चैंपियनशिप 2024 में ऐतिहासिक गोल्ड मेडल अपने नाम किया। ये मुकाबला रविवार को मलेशिया के शाह आलम में खेला गया। वहीं इस दौरान अनमोल खरब एक बार फिर भारत के लिए तुरुप का इक्का साबित हुईं। 17 वर्षीय इस खिलाड़ी ने निर्णायक मुकाबले में अपने से ऊंची रैंकिंग वाले प्रतिद्वंद्वी को हराकर भारत को रोमांचक जीत दिलाई। साथ ही बता दें कि, महाद्वीपीय प्रतियोगिता के इतिहास में ये भारत का पहला खिताब था। पुरुष भारतीय बैडमिंटन टीम ने इससे पहले 2016 और 2020 में दो मेडल अपने नाम किए थे, लेकिन दोनों कांस्य पदक ही थे। दो बार की ओलंपिक मेडल विजेता और दुनिया की 11वें नंबर की खिलाड़ी पीवी सिंधु ने 17वीं रैंकिंग वाली सुपानिडा काटेथोंग को 21-12, 21-12 से हराकर भारतीय खिताब की शानदार शुरुआत की। भारतीय बैडमिंटन खिलाड़ी अपने शुरुआती एकल मुकाबले में थाईलैंड की खिलाड़ी पर हावी रहीं और प्रतियोगिता को केवल 39 मिनट में ही खत्म कर दिया। इस तरह काटेथोंग के खिलाफ आठ मुकाबलों में ये सिंधु की पांचवीं जीत थी। दूसरे राउंड में त्रिशा जॉली और गायत्री गोपीचंद, जिन्होंने पूरे टूर्नामेंट में बेहतरीन प्रदर्शन किया था। उन्होंने एक बार फिर अपना शानदार प्रदर्शन दिखाया। दुनिया की 23वें नंबर की भारतीय बैडमिंटन जोड़ी ने 10वीं रैंकिंग वाली जोंगकोलफान किंतिथाराकुल और रावींडा प्राजोंगजाई को 21-16, 18-21, 21-16 से हराकर भारत को 2-0 की बढ़त दिलाई। इसके साथ ही बैडमिंटन एशिया कप चैंपियनशिप 2024 ने पेरिस 2024 ओलंपिक के सफर के लिए रैंकिंग प्वाइंट हासिल किए हैं। जो आगामी ओलंपिक खेलों में प्रतिस्पर्धा करने के इच्छुक शटलरों के लिए अहम होंगे। वहीं इसी सिलसिले में पीएम मोदी ने भारतीय महिला टीम को बधाई दी है। पीएम ने भारतीय महिला टीम की जीत को ऐतिहासिक उपलब्धि करार देते हुए कहा कि जिस तरह से हमारी नारी शक्ति विभिन्न खेलों में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रही है वह अभूतपूर्व है। मोदी ने एक्स पर लिखा, ' एक ऐतिहासिक उपलब्धि, अविश्वसनीय भारतीय टीम को बधाई।

विश्व टेबल टेनिस टीम चैंपियनशिपः भारतीय महिला टीम ने उज्बेकिस्तान को 3-0 से हराया

नई दिल्ली,एजेंसी।भारतीय महिला टीम ने विश्व टेबल टेनिस टीम चैंपियनशिप में सोमवार को उज्बेकिस्तान को हराया लेकिन पुरुष टीम को मेजबान दक्षिण कोरिया के खिलाफ लगातार दूसरी हार का सामना करना पड़ा। आयहिका मुखर्जी और श्रीजा अकुला को आराम दिए जाने के बावजूद भारत ने उज्बेकिस्तान को 3-0 से शिकस्त दी।अर्चना कामत और दीया चितले ने मौके का फायदा उठाते हुए अपने मुकाबले जीते जबकि टीम की सीनियर साथी मनिका बत्रा ने भी जीत दर्ज करते हुए भारत को 3-0 से जीत दिलाई। अर्चना ने रिमा गुफ्रानोव को 11-7, 11-3, 11-6 से शिकस्त दी जबकि मनिका ने मारखाबो मेगदिएवा को 11-7, 11-4, 11-1 से हराया। दीया ने कड़े मुकाबले में रोजालिना खादजिएवा को 11-6, 10-12, 11-4, 11-6 से हराकर भारत की जीत सुनिश्चित की। चीन के खिलाफ 2-3 की हार के साथ अपना अभियान शुरू करने वाली भारतीय महिला टीम लगातार दो जीत के बाद ग्रुप एक में दूसरे स्थान पर चल रही है।ग्रुप एक के अपने अंतिम मुकाबले में टीम मंगलवार को स्पेन से भिड़ेगी। टीम ने पिछले मैच में हंगरी को 3-2 से हराया था। पुरुष वर्ग में अनुभवी शरत कमल, मौजूदा राष्ट्रीय चैंपियन हरमीत देसाई और जी साथियान अपने-अपने एकल मुकाबले हार गए जिससे भारत को तीसरे वरीय कोरिया के खिलाफ ग्रुप चरण के अपने तीसरे मुकाबले में 0-3 से एकतरफा हार का सामना करना पड़ा। विश्व रैंकिंग में 67वें स्थान के साथ भारत के शीर्ष खिलाड़ी हरमीत को दुनिया के 14वें नंबर के जैंग वूजिन के खिलाफ 4-11, 10-12, 8-11 से हार का सामना करना पड़ा। इसके बाद साथियान दुनिया के 16वें नंबर के खिलाड़ी लिम जोंगहून के खिलाफ 5-11, 7-11, 7-11 से हार गए जिससे भारत 0-2 से पिछड़ गया।

शुरुआती बढ़त मिलने के आधे घंटे में लाल निशान पर पहुंचे सेंसेक्स और निफ़्टी

मुंबई। एशियाई बाजारों में मिले-जुले रुझानों के बीच सोमवार को शुरुआती कारोबार में सेंसेक्स और निफ्टी में मामूली तेजी आई। बीएसई का 30 शेयर सूचकांक सेंसेक्स 23.96 अंक या 0.03 प्रतिशत बढ़कर 72,450.60 अंक पर पहुंच गया। सेंसेक्स में सूचीबद्ध 16 कंपनियों के शेयरों में तेजी आई। भारती एयरटेल और बजाज फाइनेंस के शेयरों में एक प्रतिशत का उछाल आया। निफ्टी 32.35 अंक या 0.15 प्रतिशत बढ़कर 22,073.05 अंक पर पहुंच गया। सूचकांक में सूचीबद्ध 26 कंपनियों के शेयरों में तेजी आई। शेयर बाजार के आंकड़ों के अनुसार, विदेशी खंड निवेशकों (एफपीआई) ने शुक्रवार को 253.28 करोड़ रुपये के शेयर की शुद्ध खरीदारी की।पेटीएम ब्रांड का मालिकाना हक रखने वाली कंपनी वन97 कम्युनिकेशंस लिमिटेड के शेयर में सोमवार को पांच प्रतिशत का उछाल आया। बीएसई और एनएसई पर कंपनी के शेयर क्रमशः पांच प्रतिशत चढ़कर 358.55 रुपये और 358.35 रुपये पर पहुंच गए। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने पेटीएम पेमेंट्स बैंक लिमिटेड को किसी भी ग्राहक खाते, प्रीपेड साधन, वॉलेट एवं फास्टैग में 29 फरवरी 2024 के बाद जमा या टॉप-अप स्वीकार न करने का 31 जनवरी को निर्देश दिया था। आदेश के बाद से ही कंपनी के शेयर में भारी गिरावट आई है। हालांकि, इस आदेश को बाद में 15 मार्च तक बढ़ा दिया गया। पेटीएम पेमेंट्स बैंक लिमिटेड (पीपीबीएल) वन97 कम्युनिकेशंस लिमिटेड (ओसीएल) का सहयोगी है। वन97 कम्युनिकेशंस के पास पेटीएम पेमेंट्स बैंक लिमिटेड में 49 प्रतिशत (प्रत्यक्ष और इसकी अनुषंगी कंपनी के माध्यम से) हिस्सेदारी है। वन97 कम्युनिकेशंस लिमिटेड (ओसीएल) के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) विजय शेखर शर्मा की बैंक में 51 प्रतिशत हिस्सेदारी है।

बीते साल चाय निर्यात में आई मामूली गिरावट, कुल निर्यात 20 करोड़ किलोग्राम रहा

कोलकाता। कैलेंडर वर्ष 2023 के पहले 11 महीनों में भारत से चाय का निर्यात 1.17 प्रतिशत की मामूली गिरावट के साथ 20.71 करोड़ किलोग्राम रहा है। आधिकारिक आंकड़ों में यह जानकारी दी गई है। वर्ष 2022 की समान अवधि में देश से 20.96 करोड़ किलोग्राम चाय का निर्यात किया गया था। वहीं पूरे कैलेंडर साल 2022 में कुल 23.10 करोड़ किलोग्राम चाय का निर्यात हुआ था।चाय बोर्ड की तरफ से जारी निर्यात आंकड़ों के मुताबिक, बीते साल की जनवरी-नवंबर अवधि में मुख्य रूप से असम और पश्चिम बंगाल जैसे उत्तर भारत के क्षेत्र से निर्यात घटा है। यह एक साल पहले की समान अवधि के 13.22 करोड़ किलोग्राम से घटकर 12.52 करोड़ किलोग्राम रह गया। आंकड़ों के मुताबिक, 2023 के पहले 11 महीनों में दक्षिण भारत से निर्यात जनवरी-नवंबर, 2022 के 7.73 करोड़ किलोग्राम की तुलना में बढ़कर 8.18 करोड़ किलोग्राम हो गया। उद्योग सूत्रों ने कहा कि देश के कुल चाय निर्यात में गिरावट की प्रमुख वजह ईरान बाजार में भुगतान समस्याओं के कारण मात्रा में आई कमी रही। स्वतंत्र देशों के राष्ट्रकुल (सीआईएस) के बाद भारत के कुल चाय निर्यात में ईरान की हिस्सेदारी 20 प्रतिशत है।सूत्रों ने इसके साथ ही कहा कि 2023 के समूचे कैलेंडर वर्ष के लिए निर्यात परिदृश्य गंभीर बना हुआ है क्योंकि पश्चिम एशियाई देशों में निर्यात को लेकर अनिश्चितता की स्थिति है। दिसंबर, 2023 में चाय का उत्पादन 7.75 करोड़ किलोग्राम रहने का अनुमान है जो एक साल पहले के समान महीने के 6.45 करोड़ किलोग्राम से अधिक है।

देश के सात प्रमुख शहरों में बीते साल घरों के निर्माण 8% बढ़कर 4.35 लाख इकाई पर

नयी दिल्ली,एजेंसी।देश के सात प्रमुख शहरों में पिछले साल घरों का निर्माण आठ प्रतिशत बढ़कर 4.35 लाख इकाई पर पहुंच गया है। रियल एस्टेट परामर्शक कंपनी एनारॉक ने कहा कि बेहतर बिक्री से रियल एस्टेट कंपनियों के नकदी प्रवाह में सुधार हुआ है। एनारॉक के आंकड़ों के अनुसार, 2023 में 4,35,045 घरों का निर्माण पूरा हुआ, जबकि 2022 में 4.02 लाख घर बनाए गए थे। आंकड़ों के अनुसार, मुंबई महानगर क्षेत्र (एमएमआर) में पिछले साल 13 प्रतिशत वृद्धि के साथ 1,43,500 घरों का निर्माण पूरा हुआ, जबकि 2022 में यह आंकड़ा 1,26,720 इकाई का रहा था। राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र-दिल्ली (एनसीआर) में पिछले साल 32 प्रतिशत वृद्धि के साथ 1,14,280 घरों का निर्माण पूरा हुआ, जबकि 2022 में 86,300 घरों का निर्माण हुआ था। एनारॉक के चेयरमैन अनुज पुरी ने कहा, ''साल 2023 में आवास बिक्री 2022 के पिछले उच्चस्तर को पार कर गई है। यह 2024 में भी मजबूत बनी रहेगी।श्श् पुणे में पिछले साल 23 प्रतिशत गिरावट के साथ 65,000 घरों का निर्माण पूरा हुआ, जबकि 2022 में 84,200 घर बनाए गए थे। बेंगलुरु, हैदराबाद और चेन्नई में संयुक्त रूप से पिछले साल 87,190 घरों का निर्माण पूरा हुआ, जबकि 2022 में यह आंकड़ा 81,580 इकाई का था। कोलकाता में पिछले साल 25,075 घरों का निर्माण पूरा हुआ, जबकि 2022 में 23,190 घरों का निर्माण हुआ था। एनारॉक ने कहा कि घरों के निर्माण का यह आंकड़ा 2017 के बाद सबसे ऊंचा है। साल 2017 में 2,04,200 घरों, 2018 में 2,46,140 घरों, 2019 में 2,98,450 घरों, 2020 में 2,14,370 घरों, 2021 में 2,78,650 घरों का निर्माण पूरा हुआ था।

हाइब्रिड म्युचुअल फंड का जलवा, जनवरी में आया 20,634 करोड़ रुपए का निवेश

नयी दिल्ली,एजेंसी। हाइब्रिड म्यूचुअल फंड योजनाएं निवेशकों के बीच लोकप्रिय हो रही हैं। इन योजनाओं ने जनवरी, 2024 में 20,634 करोड़ रुपए जुटाए। यह राशि इससे पिछले महीने के मुकाबले 37 प्रतिशत अधिक है। ऋण या बॉन्ड फंड के लिए कराधान कानूनों में बदलाव के बाद वैकल्पिक निवेश विकल्प के रूप में हाइब्रिड म्यूचुअल फंड योजनाएं निवेशकों का ध्यान खींच रही हैं। इन योजनाओं में चालू वित्त वर्ष 2023-24 में अप्रैल-जनवरी के दौरान कुल 1.21 लाख करोड़ रुपए निवेश किए गए। पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि के दौरान हाइब्रिड योजनाओं से शुद्ध निकासी हुई थी। हाइब्रिड म्यूचुअल फंड योजनाएं आमतौर पर इक्विटी और ऋण प्रतिभूतियों में और कभी-कभी सोने जैसी अन्य परिसंपत्तियों में निवेश करती हैं। एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया (एम्फी) के ताजा आंकड़ों के अनुसार, हाइब्रिड योजनाओं में जनवरी में 20,637 करोड़ रुपए का निवेश किया गया, जो दिसंबर, 2023 के 15,009 करोड़ रुपए से अधिक है। समीक्षाधीन महीने के दौरान हाइब्रिड फंड की दो श्रेणियां, जिन्होंने सबसे अधिक निवेश आकर्षित किया, वे हैं आर्बिट्राज फंड और मल्टी-एसेट अलोकेशन फंड।

बैंक पर कार्रवाई फिनटेक कंपनियों के लिए सबक

केंद्रीय मंत्री ने बताया कानून का पालन जरूरी

नयी दिल्ली,एजेंसी। केंद्रीय इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी राज्यमंत्री राजीव चंद्रशेखर ने कहा है कि पेटीएम पेमेंट्स बैंक लि. (पीपीबीएल) पर भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) की नियामकीय कार्रवाई ने वित्तीय प्रौद्योगिकी (फिनटेक) कंपनियों का ध्यान कानून के अनुपालन के महत्व की ओर खींचा है। चंद्रशेखर ने इस बात पर जोर दिया कि नियामकीय अनुपालन कंपनियों के लिए वैकल्पिक नहीं हो सकता, बल्कि यह एक ऐसा पहलू है जिस पर प्रत्येक उद्यमी को पूरा ध्यान देना चाहिए। चंद्रशेखर ने इस बात पर जोर दिया कि पेटीएम पेमेंट्स बैंक का मुद्दा एक ऐसा मामला है जहां एक आक्रामक उद्यमी नियामकीय अनुपालन की जरूरत को महसूस करने में विफल रहा है और कोई भी कंपनी अनुपालन से बच नहीं सकती है। पेटीएम पेमेंट्स बैंक संकट के बीच मंत्री ने कहा कि कोई भी कंपनी, चाहे वह भारत की हो या विदेश की, बड़ी हो या छोटी, उसे देश के कानून का पालन करना होगा। भारतीय रिजर्व बैंक ने पीपीबीएल को 15 मार्च से नई जमा स्वीकार करने से रोक दिया है और कंपनी के खिलाफ अपनी कार्रवाई की किसी भी समीक्षा से इनकार कर दिया है। उन्होंने कहा कि यह धारणा कि पेटीएम पेमेंट्स बैंक के खिलाफ नियामक की कार्रवाई ने फिनटेक को परेशान कर दिया है...मुझे नहीं लगता कि इसका सही चित्रण है। चंद्रशेखर ने कहा, मुझे लगता है कि इसने फिनटेक उद्यमियों का ध्यान इस तथ्य की ओर खींचा है कि आपको यह भी जानना होगा कि कानून का अनुपालन कैसे करना है। नियामकीय अनुपालन दुनिया के किसी भी देश के लिए वैकल्पिक नहीं है। निश्चित रूप से भारत में ऐसा नहीं है और उद्यमियों को इस पर अधिक ध्यान देने की जरूरत है। चन्द्रशेखर ने आगे कहा कि उद्यमी आमतौर पर जो कुछ भी बना रहे हैं, उस पर इतना ध्यान केंद्रित करने लगते हैं कि कभी-कभी वे नियामकों द्वारा निर्धारित नियमों की अनदेखी कर देते हैं। पीपीबीएल वन97 कम्युनिकेशंस लिमिटेड का सहयोगी इकाई है। वन97 कम्युनिकेशंस के पास पीपीबीएल की चुकता शेयर पूंजी (सीधे और अपनी अनुषंगी कंपनी के माध्यम से) का 49 प्रतिशत हिस्सा है। पेटीएम के संस्थापक और मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) विजय शेखर शर्मा की बैंक में 51 प्रतिशत हिस्सेदारी है। रिजर्व बैंक ने पीपीबीएल के ग्राहकों और दुकानदारों को अपने खाते 15 मार्च तक अन्य बैंकों में स्थानांतरित करने को कहा है। इसके साथ केंद्रीय बैंक ने संकट में फंसी कंपनी को अपने ज्यादातर परिचालन को बद करने के लिए 15 दिन का और समय दे दिया है।

अडानी टोटल गैस एलएनजी पर लगा रही है बड़ा दांव

नयी दिल्ली,एजेंसी। प्रमुख शहरी गैस वितरक (सीजीडी) कंपनी अडानी टोटल गैस लिमिटेड वृद्धि के लिए तरलीकृत प्राकृतिक गैस (एलएनजी) पर बड़ा दांव लगा रही है। सरकार की गैस नीति में एलएनजी को तेजी से बढ़ावा देने और ग्रीनहाउस गैस (जीएचजी) के उत्सर्जन को नियंत्रित करने की पहल के बीच कंपनी ने यह रणनीति अपनाई है। कंपनी के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा कि अडानी टोटल गैस लिमिटेड (एटीजीएल) का लक्ष्य लंबी दूरी के वाणिज्यिक वाहनों के लिए डीजल की जगह प्राथमिक ईंधन के रूप में एलएनजी को बढ़ावा देना है। इसके लिए वाहन क्षेत्र से संबंद्ध कंपनियों, मूल उपकरण विनिर्माताओं (ओईएम), परिचालकों और रेट्रोफिटमेंट कंपनियों जैसे विभिन्न हितधारकों के साथ रणनीतिक गठजोड़ किए जा रहे हैं। एटीजीएल के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) सुरेश पी मंगलानी ने कहा, ''एलएनजी की सबसे बड़ी चुनौती वितरण है। इस समय हमारे पास केवल मुट्ठी भर एलएनजी वितरण स्टेशन हैं और यही असली चुनौती है। परिचालक वितरण नेटवर्क तैयार होने तक इस दिशा में आगे बढ़ने के लिए तैयार नहीं हैं। दूसरी ओर पेट्रोलियम विपणन कंपनियां (ओएमसी) एलएनजी आउटलेट की संख्या में विस्तार नहीं कर रही हैं। उन्होंने कहा कि कंपनी इस हरित ईंधन को तेजी से बढ़ावा देने के लिए सभी हितधारकों के साथ मिलकर काम कर रही है। एटीजीएल ने पिछले दो माह में वैकल्पिक ईंधन प्रणाली विनिर्माता शिगन, क्रायोजेनिक लिक्विड स्टोरेज, आईनॉक्स सीवीए और अडानी सीमेंट के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। कंपनी ने कहा कि वह आने वाले महीनों में इस तरह की और साझेदारियां करेगी।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक- डॉ. वरुण कुमार उपाध्याय द्वारा मीडिया टेक्स्ट प्रा.लि.,जी.टी. रोड रोहनियां, वाराणसी से मुद्रित कराकर एन 8/250 टी 24ए, राजेन्द्र विहार कॉलोनी, सुन्दरपुर, वाराणस-221005 से प्रकाशित। स्थानीय सम्पादक- *प्रवीण कुमार राय*

RNI No. : UPHIN/2023/84879 Mob. - 9335988525 Email : pdnewsvns@gmail.com समस्त विवादों का निस्तारण वाराणसी न्यायालय के अधीन ही होंगे। खबरों के लिए स्थानीय संपादक जिम्मेदार होंगे।

दीपिका पादुकोण की हुई ब्रैडली कूपर और सिलियन मर्फी से मुलाकाल

18 फरवरी को लंदन के रॉयल फेस्टिवल हॉल में आयोजित ब्रिटिश एकेडमी ऑफ फिल्म एंड टेलीविजन आट्‌र्स (बाफ्टा) अवॉर्ड्‌स में अन्य प्रस्तुतकर्ताओं में दीपिका पादुकोण भी शामिल थीं। उन्होंने 'बेस्ट फिल्म नॉट इन द इंग्लिश लैंग्वेज' का पुरस्कार प्रदान किया। कार्यक्रम के प्रमुख आकर्षणों में से, प्रशंसकों की नज़र सिलियन मर्फी और ब्रैडली कूपर के साथ दीपिका की एक वायरल तस्वीर पर पड़ी।खैर इस कार्यक्रम की एक वायरल तस्वीर ऑनलाइन सामने आई है जिसमें दावा किया गया है कि भारतीय एक्ट्रेस ने यूके में प्रतिष्ठित पुरस्कार समारोह में 'ओपेनहाइमर' स्टार और 'मेस्ट्रो' अभिनेता से मुलाकात की। जबकि पुरस्कार की रात की तस्वीरों और वीडियो ने प्रशंसकों का ध्यान खींचा है, सिलियन मर्फी और ब्रैडली कूपर के साथ पोज़ देती दीपिका की एक तस्वीर ने प्रशंसकों को सोचने पर मजबूर कर दिया है कि क्या अभिनेता दो हॉलीवुड आइकन से मिली थी। तस्वीरें रेड कार्पेट पर क्लिक की गई प्रतीत होती हैं जहां तीनों फोटोग्राफरों के लिए पोज देते नजर आ रहे हैं। तस्वीर को एक्स पर एक फैन अकाउंट द्वारा शेयर किया गया था और इस तस्वीर की सत्यता अभी भी सवालों के घेरे में है।अनजान लोगों के लिए, 'ओपेनहाइमर' ने बाफ्टा 2024 में सात ट्रॉफियां जीतीं। 18 फरवरी को, मशहूर हस्तियों ने रेड कार्पेट पर कदम रखा और चमकदार पोशाकों में जलवे बिखेरे। दीपिका पादुकोण ने सफेद सब्यसाची साड़ी में स्टाइल स्टेटमेंट बनाया। वर्कफ्रंट की बात करें तो दीपिका पादुकोण डायरेक्टर नाग अश्विन की अगली फिल्म 'कल्कि 2898 AD' में नजर आएंगी। फिल्म में वह प्रभास, अमिताभ बच्चन और कमल हासन के साथ स्क्रीन शेयर करेंगी। भविष्य की साइंस-फिक्शन फिल्म 9 मई, 2024 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

मौत के मुंह में जाने से बाल-बाल बचीं रश्मिका मंदाना, एक्ट्रेस ने साझा किया अनुभव

'पुष्पा द राइज' व 'एनिमल' जैसी हिट मूवी देने वाली एक्ट्रेस रश्मिका मंदाना ने अपनी एक्टिंग के बलबूत फैंस का दिल जीत लिया है। लाखों-करोड़ों दिलों पर राज करने वाली अदाकारा इंस्टाग्राम पर भी खासा एक्टिव रहती हैं। अब उन्होंने एक बड़ी खबर अपने फैंस के साथ साझा किया है, जिसे सुन उनके फैंस भी डर गए। एक्ट्रेस ने बताया कि उन्होंने अभी मौत को मात दी है। बता दें, अभिनेत्री ने अपनी इंस्टाग्राम स्टोरी पर एक फोटो शेयर की, जिसमें वह फ्लाइट में हैं और उन्होंने मजाकिया अंदाज में कैप्शन में लिखा, 'सिर्फ आपकी जानकारी के लिए, इस तरह हम आज मौत से बच गए।' इस दौरान उनके साथ अभिनेत्री श्रद्धा दास भी थीं। दरअसल, एक्ट्रेस रश्मिका मंदाना एयर विस्घ्तारा की फ्लाइट में सफर कर रही थीं। इस दौरान तकनीकी खराबी के कारण विमान की इमरजेंसी लैंडिंग करानी पड़ी। यह घटना तब हुई, जब रश्मिका मंदाना मुंबई से हैदराबाद जा रही थीं।डेक्कन क्रॉनिकल की रिपोर्ट के अनुसार, तकनीकी समस्याओं के कारण विमान को उड़ान भरने के 30 मिनट बाद ही छत्रपति शिवाजी महाराज इंटरनेशनल एयरपोर्ट मुंबई लौटना पड़ा। विमान की इमरजेंसी लैंडिंग के दौरान रश्मिका मंदाना को ऐसा लगा कि अब वह नहीं बच पाएंगी। फिर क्या था रश्मिका मंदाना ने अपने मौत के अहसास को सोशल मीडिया पर अपने फैंस के साथ शेयर किया। गनीमत रही कि इस घटना में किसी को चोट नहीं आई। वर्कफ्रंट की बात करें तो रश्मिका को हाल ही में सुपरहिट मूवी 'एनिमल' में रणबीर कपूर, अनिल कपूर, बॉबी देओल और तृप्ति डिमरी संग देखा गया। अब वह अल्लू अर्जुन के साथ 'पुष्पा 2 द रूल' में नजर आएगी। वह अल्लू अर्जुन के साथ श्रीवल्ली के अपने किरदार को फिर से निभाएंगी। बता दें, सुकुमार के डायरेक्शन में बनी ये फिल्म 15 अगस्त को थिएटर्स में रिलीज होगी। उनके पास तेलुगूध्तमिल मूवी 'रेनबो', एक और तेलुगू मूवी 'द गर्लफ्रेंड' और हिंदी फिल्म 'छावा' है।

'मैंने हिंदी फिल्में देखना बंद कर दिया है', नसीरुद्दीन शाह ने जमकर की बॉलीवुड की बुराई

नसीरुद्दीन शाह अपनी शानदार एक्टिंग के साथ-साथ अपने बेबाक अंदाज के लिए भी जाने जाते हैं। हाल ही में एक्टर ने हिंदी सिनेमा में इस वक्त बन रही फिल्मों के बारे में खुलकर बात की। इस बातचीत में उन्होंने निराशा जाहिर करते हुए कहा कि हिंदी सिनेमा में तभी कुछ बेहतर हो सकता है जब पैसा कमाने का इरादा छोड़कर फिल्में बनाई जाएं।एक कार्यक्रम में बोलते हुए नसीरुद्दीन ने कहा कि हिंदी फिल्म निर्माता पिछले 100 सालों से एक ही तरह की फिल्में बना रहे हैं। शाह ने कहा, 'मैं वास्तव में निराश हूं कि हम यह कहते हुए गर्व महसूस करते हैं कि हिंदी सिनेमा 100 साल पुराना है, लेकिन हम वही फिल्में बना रहे हैं। मैंने अब हिंदी फिल्में देखना बंद कर दिया है। मुझे वे बिल्कुल पसंद नहीं हैं।'इस बातचीत में एक्टर ने आगे कहा कि दुनिया भर में रहने वाले भारतीय लोग हिंदी फिल्में देखने इसलिए जाते हैं क्योंकि उन्हें घर से जुड़ाव महसूस होता है, लेकिन वे जल्द ही इससे बोर हो जाएंगे। नसीरुद्दीन ने कहा, 'हमारा भारतीय खाना हर जगह पसंद किया जाता है क्योंकि इसमें दम है। हिंदी फिल्मों में क्या दम है? हां, ये हर जगह देखी जा रही है, लेकिन जल्द ही लोग इससे बोर हो जाएंगे क्योंकि इसमें कोई दम नहीं है।'अभिनेता ने कहा, 'हिंदी सिनेमा के लिए उम्मीद तभी है जब हम फिल्मों को पैसा कमाने के साधन के रूप में देखना बंद कर देंगे, लेकिन मुझे लगता है कि अब बहुत देर हो चुकी है। अब इसका कोई समाधान नहीं है।' उन्होंने आगे कहा कि गंभीर फिल्मों की जिम्मेदारी है कि वे आज की हकीकत को इस तरह दिखाएं कि न तो उनके लिए फतवा जारी होगा और न ही ईडी उनके दरवाजे पर दस्तक देगी। उन्होंने कहा कि कई ईरानी फिल्म निर्माताओं ने अधिकारियों द्वारा सताए जाने के बाद भी फिल्में बनाईं। साथ ही उन्होंने भारतीय कार्टूनिस्ट आरके लक्ष्मण का उदाहरण भी दिया, जो आपातकाल के दिनों में भी कार्टून बनाते रहे।

शक्तिमान प्रोजेक्ट पर काम चल रहा हैः मुकेश खन्ना

बॉलीवुड अभिनेता मुकेश खन्ना का कहना है कि अभी शक्तिमान प्रोजेक्ट पर काम चल रहा है और बहुत जल्द इसकी अनाउंसमेंट की जायेगी। सुपरहिट टीवी सीरियल शक्तिमान में मुकेश खन्ना ने शक्तिमान का किरदार निभाया था। फिल्म शक्तिमान के निर्माण का ऐलान पिछले साल किया गया था। सोनी पिक्चर्स ने फिल्म शक्तिमान का ऐलान किया था और मुकेश खन्ना को इसका क्रिएटिव कंसल्टेंट बनाया था। कहा जा रहा है कि रणवीर सिंह इस बार शक्तिमान का किरदार निभाते नजर आ सकते हैं। मुकेश खन्ना ने कहा, अभी इस प्रोजेक्ट पर काम चल रहा है। मेरा सोनी पिक्चर्स के साथ कॉन्ट्रैक्ट है और इसलिए इस बारे में ज्यादा बात नहीं कर सकता। हालांकि, इस बारे में हम जल्द ही ऑफिशियल स्टेटमेंट रिलीज करेंगे।

फिल्म निर्माता राजकुमार संतोषी को 24 घंटे में मिली जमानत, कोर्ट ने सुनाई थी 2 साल कैद की सजा

बॉलीवुड डायरेक्टर राजकुमार संतोषी को 24 घंटे के अंदर जमानत मिल गई। शनिवार को जामनगर कोर्ट ने उन्हें दो साल कैद की सजा सुनाई थी और दो साल का जुर्माना भी लगाया था। अब कोर्ट के आदेश पर 30 दिन की रोक लगा दी गई है। निर्देशक के वकील बिनेश पटेल ने इस खबर की पुष्टि की है कि फिल्म निर्माता को जमानत मिल गई है।अनजान लोगों के लिए, राजकुमार संतोषी एक समय करीबी दोस्त हुआ करते थे। उस दौरान उसने अशोकलाल से एक करोड़ रुपये उधार लिये थे। लेकिन वह समय पर पैसे नहीं लौटा सके। बाद में पैसे चुकाने के लिए राजकुमार संतोषी ने अशोक लाल को 10-10 लाख रुपये के 10 बैंक चेक दिए, लेकिन 2016 में सभी चेक बाउंस हो गए।अशोकलाल ने संतोषी से बात करने की कोशिश की, लेकिन

बात नहीं हो सकी। जब कोई मदद नहीं मिली तो अशोक लाल ने परेशान होकर राजकुमार संतोषी के खिलाफ जामनगर कोर्ट में केस दायर कर दिया। तब से इस मामले की 18 बार सुनवाई हो चुकी है, लेकिन संतोषी एक बार भी पेश नहीं हुए।जानकारी के मुताबिक वकील ने कहा कि राजकुमार संतोषी के खिलाफ कोई सबूत पेश नहीं किया गया. संतोषी के वकील ने एएनआई से कहा दूसरे पक्ष ने स्वीकार किया कि शिकायतकर्ता ने तीसरे पक्ष से वह पैसा स्वीकार किया था। तीसरे पक्ष ने 10 लाख रुपये के बदले में 11 चेक दिए थे, जिसके बारे में राजकुमार संतोषी को जानकारी नहीं थी। मजिस्ट्रेट ने इन तथ्यों को नजरअंदाज कर दिया और हमारे खिलाफ फैसला सुनाया। हम इन बिंदुओं के साथ उच्च न्यायालय में अपील करेंगे। बिजनेसमैन के वकील पीयूष भोजानी ने कहा, 'अशोक लाल ने राजकुमार संतोषी की फिल्म में 1 करोड़ रुपये का योगदान दिया था। निर्देशक ने पैसे चुकाने के लिए बिजनेसमैन को 10-10 लाख रुपये के 10 चेक भेजे थे। जब चेक बाउंस हो गए तो ऐसा करने की कोशिश की गई।' निदेशक से संपर्क किया, लेकिन संपर्क नहीं हो सका। उन्होंने उपकरण अधिनियम के तहत मामला दायर किया।'

बॉलीवुड इंडस्ट्री में वक्त के साथ बदली एक्ट्रेसेस की पहचानः शिल्पा शेट्टी

एक्ट्रेस शिल्पा शेट्टी ने कहा है कि 90 के दशक में फिल्मों को वास्तविकता से दूर माना जाता था। उस समय एक्ट्रेसेस का ग्लैमरस दिखना जरूरी था, क्योंकि कोई भी नीरस चीजें नहीं देखना चाहता था। शिल्पा ने 1993 में रिलीज हुई बाजीगर से अपने फिल्मी करियर की शुरुआत की थी। उन्होंने 90 और 2000 के दशक की कई फिल्मों में काम किया। हाल ही में उन्होंने रोहित शेट्टी की इंडियन पुलिस फोर्स के जरिए स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म पर शुरुआत की। 90 के दशक की तुलना में अब फिल्म निर्माताओं द्वारा महिलाओं को गंभीरता से लेने के बारे में बात करते हुए शिल्पा ने आईएएनएस से कहा, समय बदल गया है और समय के साथ कंटेंट भी बदल गया है। फिल्में और कुछ नहीं बल्कि हमारे समाज के ताने-बाने का प्रतिबिंब हैं।मुझे लगता है कि पुराने जमाने में फिल्मों को वास्तविकता से भागने के एक माध्यम के रूप में देखा जाता था। उन्होंने कहा, उस समय यह सब चीजें दूर-दूर तक नहीं सोची जाती थीं, एक्ट्रेसेस ग्लैमरस थीं क्योंकि कोई भी नीरस चीजें नहीं देखना चाहते थे। अभिनेत्री ने कहा कि उस समय आर्ट और कमर्शियल सिनेमा के बीच अंतर था। उन्होंने कहा, आर्ट फिल्मों और कमर्शियल सिनेमा के बीच स्पष्ट अंतर था। आज... मुझे लगता है कि सब ब्लर हो गया हैं। शिल्पा ने कहा, लोग लगातार बेहतरीन कंटेंट पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। हम ऐसे समाज में रह रहे हैं जो अधिक समतावादी है। इसलिए, आप अपनी फिल्मों और अपने कंटेंट में इस बात पर विचार करते हैं कि आज की महिलाएं क्या हैं। शिल्पा ने कहा कि समय के साथ आगे बढ़ने की जरूरत है। यही वजह है कि शायद आपके पास दिल्ली क्राइम में एक मजबूत नायक की भूमिका निभाने वाली शेफाली शाह या शकुंतला में विद्या बालन या यहां तक कि आईपीएफ में तारा शेट्टी भी है। आपको समय के साथ चलना होगा। मैं किसी भी दशक की तुलना अगले दशक से नहीं कर सकती। इसके बाद जो आएगा, कौन जानता है कि आगे क्या होने वाला है।

देवों के देव महादेव की 'पार्वती' सोनारिका भदोरिया ने रचाई शादी

देवों के देव महादेव में पार्वती की भूमिका के लिए मशहूर सोनारिका भदोरिया ने 18 फरवरी को अपने लॉन्गटाइम बॉयफ्रेंड विकास पाराशर से शादी कर ली। शादी रणथंभौर के नाहरगढ़ पैलेस में हुई। उनके भव्य विवाह समारोह की तस्वीरें और वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे हैं।वीडियो क्लिप में जोड़े को वरमाला के समय एक दूसरे को माला पहनाते हुए देखा जा सकता है। सोनारिका भदोरिया फूलों की कढ़ाई वाले लाल और सुनहरे लहंगे में बेहद खूबसूरत लग रही थीं। अभिनेत्री ने इसे आधी बाजू की चोली के साथ जोड़ा, जिसमें पुराने धागे का काम था और सिर पर बॉर्डर वाला लाल दुपट्टा था। उन्होंने अपने लुक को ज्वैलरी, गजरे से सजे जूड़े और गुलाबी मेकअप से पूरा किया। जबकि विकास ने सोने की कढ़ाई वाली शेरवानी और पायजामा पहना था।प्रशंसकों ने टिप्पणी अनुभाग में जोड़े को बधाई दी और उन पर आशीर्वाद बरसाया। एक यूजर ने लिखा, 'बधाई हो पार्वती जी...' एक अन्य यूजर ने लिखा, 'मेरी पसंदीदा टेली अभिनेत्री को बधाई। वह अपने सपनों के राजकुमार से शादी करके बहुत खुश है।सोनारिका भदोरिया एक ऐसी अभिनेत्री हैं जिन्होंने टीवी शो के अलावा तेलुगु, तमिल और हिंद फिल्मों में भी काम किया है। उन्हें टीवी शो देवों के देव महादेव में देवी पार्वती के किरदार के लिए जाना जाता है। उन्होंने तुम देना साथ मेरा, पृथ्वी वल्लभ-इतिहास भी, रहस्य भी, दास्तान-ए-मोहब्बत सलीम अनारकली और इश्क में मरजावां सहित अन्य शो में भी काम किया है। उन्होंने मुख्य रूप से जादूगाडु, स्पीडुन्नोडु और ईदो रकम आदो रकम सहित तेलुगु फिल्मों में काम किया है। उन्होंने सांसें, इंद्रजीत और हिंदुत्व समेत हिंदी फिल्मों में भी काम किया है।

बच्चेदानी रिमूव करवाने से हो सकते हैं ये नुकसान, जानिए कब पड़ सकती है इसकी जरूरत

महिला के शरीर की बनावट ही ऐसी होती है कि प्राइवेट पार्ट में इंफेक्शन या अन्य किसी गुप्त रोग का खतरा बना रहता है। बहुत सी महिलाओं को लगता है कि प्राइवेट पार्ट की समस्या की वजह बच्चेदानी हैं। वहीं बच्चे पैदा करने के बाद बच्चेदानी की कोई समस्या ना हो जाए इसलिए इसे पहले ही बाहर निकलवाने का चलन बढ़ सा गया है। इसे मेडिकल भाषा में हिस्टरेक्टॉमी कहते हैं लेकिन क्या ऐसा करना सही है? एक्सपट्‌र्स की मानें तो बच्चेदानी या गर्भाशय निकालना, किसी भी महिला के लिए सुरक्षित नहीं है। इसे तब ही निकलवाना सही रहता है, जब महिला पहले से ही कैंसर या किसी और जानलेवा बीमारी की शिकार हो क्योंकि अगर आप बच्चेदानी रिमूव करवाते हैं तो इसके कई तरह के साइड इफेक्ट्स भी सामने आ सकते हैं।

प्राइवेट पार्ट को हो सकता है नुकसान

अगर बच्चेदानी को प्राइवेट पार्ट (वैजाइना) के द्वारा निकाला जा रहा है तो कई तरह की हेल्थ प्रॉब्लम्स हो सकती हैं। वैजाइना महिला के शरीर का बहुत ही संवेदनशील अंग है। इसकी मांसपेशियां और टिशूज बहुत ही ज्यादा नाजुक होते हैं। अगर सर्जन थोड़ी सी भी लापरवाही करता है तो प्राइवेट पार्ट को नुकसान पहुंच सकता है।

हो सकती है खून की कमी

बच्चेदानी निकालने की प्रक्रिया काफी लंबी होती है, जिसके कारण कई महिलाएं को बहुत ज्यादा खून बह जाता है। इससे जल्दी रिकवरी नहीं हो पाती है। इससे आप एनीमिया का भी शिकार हो सकते हैं। कई मामले ऐसे सामने आते हैं, जिसमें ब्लड क्लॉटिंग के कारण लंग्स और दिल के लिए खतरनाक होता है।

अंदरुनी अंगों को भी लग सकती है चोट

कई बार सर्जरी के दौरान आसपास के अंदरुनी अंगों में चोट लग जाती है। इसके आसपास आंते, पेल्विक, हड्डियां, ओवरी, फैलोपियन ट्यूब होती है। इसके कारण कई बार खतरनाक साबित हो सकती है।

समय से पहले हो सकता है मेनोपॉज

बच्चेदानी को निकालने की स्थिति में ज्यादातर महिलाओं में समय से पहले मेनोपॉज की स्थिति आ जाती है, जो कि महिला की हेल्थ के लिए बहुत ही खतरनाक हो सकता है।

कब जरूरी होता है बच्चेदानी निकलवाना

फाइब्रॉइड

इसमें बच्चेदानी के आसपास गांठें हो जाती हैं। इनके कारण पीरियड्स के दौरान बहुत ज्यादा ब्लीडिंग और दर्द होता है। इससे ब्लेडर पर भी दबाव रहता है और बार-बार टॉयलेट जाना होता है। फाइब्रॉइड आकार में बड़े हों तो सर्जरी जरूरी हो जाती है।

एंडोमेट्रिओसिस

बच्चेदानी के आसपास की लाइनिंग ज्यादा फैल जाने पर ये ओवरीज, फेलोपियन ट्यूब और दूसरे अंगों पर असर डालने लगती है। इस कंडीशन को एंडोमेट्रिओसिस कहते हैं। इस तकलीफ से जूझ रहे मरीज की रोबोटिक हिस्टरेक्टॉमी की जाती है और यूट्रस निकाला जाता है।

कैंसर

यूट्रस, सर्विक्स, ओवरीज का कैंसर होने या ऐसी गांठें होने पर जो आगे चलकर कैंसर में बदल सकती हैं, हिस्टरेक्टॉमी जरूरी हो जाती है।

यूटेराइन ब्लीडिंग

पीरियड्स के दौरान कई महिलाओं को बहुत ज्यादा ब्लीडिंग होती है जो दवाओं से किसी भी तरह कंट्रोल नहीं होती है। ऐसे में एनीमिया और दूसरी तकलीफों का खतरा बढ़ जाता है, तब बच्चेदानी निकलवाना ही आखिरी ऑप्शन होता है।

नहीं कर पाएंगी कंसीव

वैसे तो ये बात ज्यादातर महिलाओं को पता ही होती है, लेकिन अगर आप नहीं जानती हैं तो आपको बता दें बच्चेदानी हटाने से आप बच्चा कंसीव नहीं कर पाएंगी। अगर आप बच्चेदानी हटाने के बाद कंसीव करने के बारे में सोच रहे हैं, तो इस धारणा को अपने मन से पूरी तरह से निकाल लें। बच्चेदानी यानी गर्भाशय हटाने के बाद महिलाएं कंसीव नहीं कर सकती हैं।